आओ !
पर्युषण प्रतिक्रमण करें

-: संपादक :-

प.पू.आचार्यदेव श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.

आओ ! पर्युषण प्रतिक्रमण करें

❀ संपादक ❀

जिनशासन के महान् ज्योतिर्धर, परम शासन प्रभावक,
महाराष्ट्र देशोद्धारक **पू. आचार्य देव श्रीमद् विजय रामचंद्रसूरीश्वरजी म.सा.** के तेजस्वी शिष्यरत्न
बीसवीं सदी के महान् योगी, नवकार-विशेषज्ञ,
प्रशांतमूर्ति, पूज्यपाद **पंन्यासप्रवर श्री भद्रंकरविजयजी गणिवर्य**
के कृपापात्र अंतिम शिष्यरत्न, गोड़वाड़ के गौरव,
जैन हिन्दी साहित्य दिवाकर
पू.आचार्यदेव श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.

136

-: प्रकाशक :-

दिव्य संदेश प्रकाशन
C/o. सुरेन्द्र जैन, Office No. 304, 3rd Floor,
बे व्यु बिल्डींग, विंग-ईस्ट बे, डॉ. एम.बी. वेलकर स्ट्रीट,
कालबादेवी, मुंबई-400 002.
M.8484848451 (only whatsapp)

आवृत्ति : चौथी • **लागत मूल्य :** 150/- रुपये • **प्रतियां :** 1000
विमोचन स्थल : श्री त्रिभूवन तारक श्वे.मू.तपागच्छ जैन संघ-भायंदर
तारीख : दि. 24-8-2022 • **Website :** Divyasandesh.online

आजीवन सदस्य योजना

आजीवन सदस्यता शुल्क - 3000/- रु.

- आप जैन धर्म के रहस्य-जैन इतिहास-जैन तत्त्वज्ञान-जैन आचार मार्ग, प्रेरणादायी कथाएँ आदि का अध्ययन करना चाहते हों तो आज ही आप दिव्य संदेश प्रकाशन मुम्बई की आजीवन सदस्यता प्राप्त कर लें। सदस्य बनते ही अध्यात्मयोगी निःस्पृह शिरोमणि स्व. पूज्यपाद पंन्यासप्रवर **श्री भद्रंकरविजयजी गणिवर्यश्री** एवं उन्हीं के चरम शिष्यरत्न प्रवचन प्रभावक परम पूज्य ***आचार्यदेव श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.*** सा. द्वारा लिखित उपलब्ध 10 पुस्तकें दी जाएगी और **अर्हद् दिव्य संदेश** मासिक तथा भविष्य में हिन्दी भाषा में प्रकाशित पुस्तकें (Open Book Exam साधु–साध्वी उपयोगी पुस्तके एवं पुनः मुद्रित पुस्तकों को छोडकर) घर बैठे प्राप्त होंगी। आप आजीवन सदस्यता शुल्क मुंबई या बैंगलोर के पते पर दिव्य संदेश प्रकाशन-मुंबई के नाम से चैक व ड्राफ्ट से भेजें।

प्राप्ति स्थान

1. चेतन हसमुखलालजी मेहता
भायंदर (M.S.)
M. 9867058940

2. प्रवीण गुरुजी
C/o. श्री आत्म कमल लब्धिसूरि जैन पुस्तकालय
श्री आदिनाथ जैन टेंपल,
चिकपेठ, बेंगलोर-560 053.
M. 9036810930

3. राहुल वैद
C/o. अरिहंत मेटल कं.,
4403, लोटन जाट गली,
पहाड़ी धीरज, सदर बाजार,
दिल्ली-110 006.
M. 9810353108

4. चंदन एजेन्सी
607, चीरा बाजार,
मुंबई-400 002.
M. 9820303451

आजीवन सदस्यता शुल्क
Rs. 3000/- भिजवाने का पता एवं पुस्तक-प्राप्ति-स्थान :

(1) दिव्य संदेश प्रकाशन
C/o. सुरेन्द्र जैन, Office No. 304, 3rd Floor, बे व्यु बिल्डींग, विंग-ईस्ट बे, डॉ. एम.बी. वेलकर स्ट्रीट, कालबादेवी, मुंबई-400 002. Mobile : 8484848451 (only whatsapp)

(2) दिव्य संदेश प्रचारक
प्रकाश बड़ोल्ला, 52, 3rd Cross, शंकरमट रोड, शंकरपुरा, बैंगलोर-560 004. Tel. (O.) 4124 7478 M. 8971230600

प्रकाशक की कलम से...

बीसवीं सदी के महान योगी, नमस्कार महामंत्र के अजोड़ साधक प्रशांतमूर्ति **पूज्यपाद पंन्यास प्रवर श्री भद्रंकरविजयजी गणिवर्य** के कृपा पात्र अंतिम शिष्यरत्न प्रवचन प्रभावक, मरुधररत्न, गोड़वाड़ के गौरव जैन हिन्दी साहित्य दिवाकर **पूज्यपाद आचार्यदेव श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.** श्री द्वारा हिन्दी भाषा में संपादित **136 वीं पुस्तक 'आओ ! पर्युषण-प्रतिक्रमण करें !'** की चौथी आवृत्ति का प्रकाशन करते हुए हमें अत्यंत ही हर्ष हो रहा है । अत्यंत खुशी की बात है कि पूज्यश्री का अत्यंत ही सरल व सुबोध शैली में आलेखित यह साहित्य देश के कोने-कोने में बडे चाव से पढा जा रहा है ।

अनेकों को धर्मबोध देने वाले **पूज्य मुनिश्री रत्नसेनविजयजी म.सा.** को शासन प्रभावक प्रशांतमूर्ति **पूज्यपाद गच्छाधिपति आचार्यदेव श्रीमद् विजय महोदयसूरीश्वरजी म.सा.** की आज्ञानुसार वैशाख वदी-6, वि.सं.2055 में चिंचवड (पूना) में गणि पद से और शासन प्रभावक **पू. गच्छाधिपति आचार्यदेव श्रीमद् विजय हेमभूषणसूरीश्वरजी म.सा.** की आज्ञानुसार कार्तिक वदी-5 वि.सं.2061 के शुभ दिन श्रीपालनगर मुंबई में पन्यास पद से और पोष वदी-1, वि.सं. 2067, दि. 20-1-2011 के शुभ दिन थाणा नगर में भव्य समारोह के साथ **आचार्य-पद पर आरुढ किया गया था ।**

अत्यंत ही सरल, रोचक व प्रभावपूर्ण प्रवचनशैली के द्वारा वे श्रोताओं के अन्तर्मन को छू लेते है । उनके उपदेश से अनेक भूले भटकें युवाओं को नई दिशा प्राप्त हुई है ।

वे कुशल विवेचनकार भी है:– सामायिक सूत्र, चैत्यवंदन सूत्र, आलोचना सूत्र, श्रावक प्रतिक्रमण सूत्र,

आनंदघन चोबीसी, आनंदघनजी के पद, शांत सुधारस, **पू.यशोविजयजी म.** की चोबीसी, अमृतवेल की सज्झाय आदि के ऊपर उन्होंने खूब सुंदर व सरलशैली में विवेचन भी लिखा हैं ।

वे कुशल अवतरणकार भी है:–जैन रामायण और महाभारत पर दिए गए जाहिर प्रवचनों का उन्होंने स्वयं ने आलेखन भी किया है । तथा अपने गुरुदेव एवं प्रगुरुदेव के प्रवचनों का सुंदर शैली में अवतरण भी किया है ।

वे कुशल भावानुवादक है :– श्राद्धविधि, शांत सुधारस, धर्म संग्रह, गुणस्थानक क्रमारोह, एक से छह कर्मग्रंथ, जीव विचार, नवतत्त्व, दंडक, लघु संग्रहणी, वैराग्यशतक, इन्द्रिय पराजय शतक, संबोध सित्तरि, तीन भाष्य आदि प्राचीन ग्रंथों का उन्होंने सरस भावानुवाद एवं विवेचन भी किया है ।

वे प्रभावक कथा-आलेखन भी हैं :– कर्मन् की गत न्यारी (महाबल-मलयासुंदरी चरित्र), **आग और पानी** (समरादित्य चरित्र), **कर्म को नहीं शर्म** (भीमसेन चरित्र), **तब आंसु भी मोती बन जाते है** (सागरदत्त चरित्र) **कर्म नचाए नाच** (तरंगवती चरित्र), चौबीस तीर्थंकर, बारह चक्रवर्ती, सात वासुदेव प्रतिवासुदेव-बलदेव जैसे अनेक चरित्र ग्रंथों का उपन्यास शैली में आलेखन भी किया है ।

वे प्रसिद्ध चिंतक भी है :– प्रवचन मोती, प्रवचन रत्न, चिंतन मोती, प्रवचन के बिखरे फूल, अमृत की बुंदें, युवा-संदेश, गागर में सागर, चिंतन का अमृतकुंभ, सुखी जीवन के Mile Stone जैसे प्रकाशनों में उनके हृदय स्पर्शी चिंतन भी प्रस्तुत हुए है ।

वे कुशल प्रवचनकार भी है :– श्रावक का गुणसौंदर्य, श्रावक कर्तव्य, नवपद प्रवचन, प्रवचन-धारा, आनंद की शोध, कल्पसूत्र के हिन्दी प्रवचन, अष्टाह्निका प्रवचन, नवपद आराधना, सुखी जीवन का चाबियाँ, नींव के पत्थर में उनके प्रवचनों का सुंदर संकलन है ।

वे प्रसिद्ध कहानीकार भी है :– प्रिय कहानियाँ, मनोहर कहानियाँ, ऐतिहासिक कहानियाँ, मधुर-कहानियाँ, प्रेरक कहानियाँ, आदार्श कहानियाँ, प्रेरक-प्रसंग और सरस कहानियाँ आदि में उन्होंने अत्यंत ही सुंदर हृदयस्पर्शी कहानियों का आलेखन किया है ।

जैन शासन के ज्योतिर्धर, महान् ज्योतिर्धर, तेजस्वी सितारें, गौतमस्वामी-जंबुस्वामी, महान् चरित्र, प्रातः स्मरणीय महापुरुष भाग-1-2, प्रातः स्मरणीय महासतियाँ भाग-1-2, महावीर प्रभु की पट्टधर परंपरा भाग-1-2-3-4 आदि में उन्होंने जैन शासन के महान् प्रभावक पुरुषों के जीवन चरित्रों का सुंदर आलेखन भी किया है ।

वे कुशल संपादक भी है :– युवाचेतना विशेषांक, जीवन निर्माण विशेषांक, आहार विज्ञान विशेषांक, श्रावकाचार विशेषांक, श्रमणाचार विशेषांक, सन्नारी विशेषांक राजस्थान तीर्थ विशेषांक जैसे अनेक विशेषांकों का सफल संपादन भी किया है ।

हमें पूर्ण श्रद्धा और विश्वास है कि पूज्य श्री द्वारा आलेखित पूर्व प्रकाशनों की भांति प्रस्तुत प्रकाशन भी अवश्य लोकोपयोगी सिद्ध होगा ।

उनके उपदेश से अनेक संघों में अनेकविध तपश्चर्याएं, अनेकविध भाव-यात्राएँ, तप-जप आदि अनुष्ठान, उपधान, प्रतिष्ठा, दीक्षाएं छ'री पालित संघ, उद्यापन, जीवित महोत्सव आदि संपन्न हुए है ।

सन्मार्ग की राह बतानेवाला उनका साहित्य अनेकों के लिए सफल मार्गदर्शक बना है । उनका साहित्य नूतन प्रवचनकारों के लिए भी खूब उपयोगी बना है । आचार्य पदारूढ होने के बाद उनके वरद हस्तों से जिन शासन की सुंदर प्रभावनाएँ हो रही है ।

शासनदेव से हमारी यही प्रार्थना है कि पूज्यश्री चिरायु बने और उनके वरद हस्तों से जिनशासन की निरंतर प्रभावनाएँ होती रहे ।

निवेदक : दिव्य संदेश प्रकाशन ट्रस्ट-मुंबई

संपादक की कलम से...

भगवान महावीर ने सप्रतिक्रमण धर्म बतलाया है अर्थात् व्रत में अतिचार-दोष लगे या नहीं, फिर भी साधु-साध्वी श्रावक-श्राविका रुप चतुर्विध संघ के लिए प्रतिक्रमण अनिवार्य है ।

2578 वर्षों से आज भी साधु-साध्वी में तो सुबह-शाम प्रतिक्रमण की आराधना निरंतर चल रही हैं, परंतु श्रावक-श्राविका संघ में निरंतरता नहीं देखी जाती हैं, इसका मुख्य कारण हैं–श्रावकों के व्रतों में अनेक अंग अर्थात् विकल्प है ।

बहुत ही अल्प प्रमाण में श्रावक-श्राविकाएं सुबह-शाम प्रतिक्रमण करते दिखते हैं ।

चातुर्मास में गुरु भगवंतों का योग हो तो थोडे-बहुत श्रावक प्रतिक्रमण में जुडते हैं ।

थोडे बहुत श्रावक सिद्धितप, श्रेणीतप, पोषदशमी, कषायजय तप, वर्षीतप आदि सामुदायिक आराधना-तपश्चर्या में जुडे हो तो सुबह-शाम प्रतिक्रमण कर लेते हैं ।

कुछ श्रावक बारह मास में सिर्फ पर्वाधिराज के आठ दिनों में प्रतिक्रमण करते हैं ।

पर्युषण पर्व यह जैनों का सबसे बडा पर्व हैं, अन्य दिनों या पर्वो में तप-आराधना-प्रतिक्रमण आदि नहीं करनेवाले भी पर्युषण के दिनों में प्रतिक्रमण करने की कोशिश करते है परंतु विधि की अनभिज्ञता, सूत्रों के बोध के अभाव में इन आठ दिनों में भी सही रीति से आराधना नहीं कर पाते हैं ।

उन सब लोगों को लक्ष्य में रखकर की एकदम सरल शैली में रनिंग-कोमेंट्री की तरह यह **'आओ ! पर्युषण-प्रतिक्रमण करें'** पुस्तक का संपादन किया है ।

प्रतिक्रमण संबंधी विशेष सूचनाएँ :–

1) **गुरु भगवंत का संयोग हो तो उन्हीं के सान्निध्य में और संयोग न हो तो घर पर भी प्रतिक्रमण कर सकते है ।**

2) प्रतिक्रमण में शरीर, वस्त्र और उपकरण की शुद्धि रहनी चाहियें । पुरुषों के लिए सीले हुए वस्त्र का निषेध है । धोती व खेश पहिनने का विधान है । अतः पेंट, पाजामा, अंडवियर, गंजी, झब्बा, टी शर्ट, बुशर्ट आदि नहीं पहिनना चाहिये ।

3) प्रतिक्रमण के उपकरण में चरवला और मुहपत्ति अनिवार्य है, अतः प्रतिक्रमण में चरवला अवश्य रखना चाहिये ।

4) राई प्रतिक्रमण अत्यंत धीमी आवाज से करना चाहिये ।

5) वृद्धावस्था, रोग, अशक्ति आदि विशेष कारण सिवाय विधिपूर्वक खड़े-खड़े प्रतिक्रमण करना चाहिये ।

6) कायोत्सर्ग में आंखे, नासिका के अग्रभाग अथवा स्थापनाचार्य पर स्थिर रखनी चाहिये ।

7) लोगस्स के काउसग्ग में *'लोगस्स'* ही गिनना चाहिये । काउसग्ग में लोगस्स आदि कम ज्यादा गिनने से दोष लगता है । अतः विधि में जितना निर्देश हो उतने ही गिनना चाहिये ।

8) पक्खी, चउमासी व संवत्सरी प्रतिक्रमण के एक दिन पहले शाम को मांगलिक प्रतिक्रमण किया जाता है । मांगलिक प्रतिक्रमण में पार्श्वप्रभुका चैत्यवंदन **'कल्लाणकंदं'** की स्तुति व **'संतिकरं'** का स्तवन तथा सज्झाय में साधु-साध्वी **'धम्मो मंगल'** की तथा श्रावक श्राविकाएं **'मन्नह जिणाणमाणं'** की सज्झाय बोली जाती है ।

9) प्रतिक्रमण में 24 अंगुल की दंडी व 8 अंगुल की दशी वाला चरवला होना चाहिये ।

मुझे आशा ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास है कि यह पुस्तक उन नवीन आराधकों के लिए अति उपयोगी बनेगी ।

जिनाज्ञानुसार प्रतिक्रमण धर्म की आराधना कर सभी आत्माएं शीघ्र ही शाश्वत पद की भोक्ता बने, इसी मंगल कामना के साथ ।

असाढ सुदी-9,
वि.सं. 2077,
दि. 18-7-2021,
पार्श्वभवन, बिजापूर (कर्णाटक)

अध्यात्मयोगी पूज्यपाद
पंन्यासप्रवर श्री भद्रंकरविजयजी
गणिवर्य चरम शिष्याणु
रत्नसेनसूरिजी

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	पृ. सं
1.	पर्युषण-पर्व आराधना	1
2.	राइ प्रतिक्रमण विधि	8
3.	देवसिय प्रतिक्रमण विधि	50
4.	पाक्षिक एवं संवत्सरी प्रतिक्रमण	88
5.	पाक्षिक (संवत्सरी) हिन्दी अतिचार	113
6.	पाक्षिक (संवत्सरी) गुजराती अतिचार	128
7.	श्री अजितशांति स्तवन	163
8.	बडी शान्ति	172
	पक्खि (संवत्सरी) प्रतिक्रमण के बाद सामायिक पारने की विधि	176
9.	चैत्यवंदन	180
10.	स्तवन विभाग	183
11.	महावीर स्वामी के 27 भव का स्तवन	191
12.	महावीर स्वामी का पालना	196
13.	महावीर स्वामी के पंचकल्याणक का स्तवन	199
14.	स्तुति विभाग	205
15.	सज्झाय विभाग	210

1 पर्युषण-पर्व आराधना

(प्रतिक्रमण-विधान)

राइ प्रतिक्रमण : पर्युषण के आठों दिनों में सुबह राइ प्रतिक्रमण करना चाहिए । राइ प्रतिक्रमण में प्रातः चैत्यवंदन में **'जगचिंतामणि'** सज्झाय में **'भरहेसर बाहुबली'** तथा स्तुति में **'कल्लाणकंदं'** बोलते है । प्रतिदिन ये ही सूत्र बोले जाते है ।

सीमंधर स्वामी और शत्रुंजय के चैत्यवंदन में अलग अलग चैत्यवंदन, स्तवन व स्तुति बोल सकते है ।

देवसी प्रतिक्रमणः तिथि में क्षय-वृद्धि न हो तो शाम के प्रतिक्रमण में निम्नानुसार सूत्र बोलने चाहिये ।

1) पर्युषण का पहला दिन : भाद्रपद वदी द्वादशी (गुज-श्रावण वदी बारस)

चैत्यवंदन में पर्युषण संबंधी चैत्यवंदन

स्तुति में पर्युषण संबंधी स्तुति

स्तवन में पर्युषण संबंधी स्तवन बोलना चाहिये ।

2) पर्युषण का दूसरा दिन : भाद्रपद वदी त्रयोदशी (गुज-श्रावण वदी तेरस)

मांगलिक प्रतिक्रमण

चैत्यवंदन में पार्श्वनाथ प्रभु का चैत्यवंदन

स्तुति में कल्लाणकंदं की स्तुति

स्तवन में संतिकरं

सज्झाय में मन्नह जिणाणं की सज्झाय बोले

3) पर्युषण का तीसरा दिन : भाद्रपद वदी चतुर्दशी (श्रावण वद चौदश)

पाक्षिक प्रतिक्रमण में

चैत्यवंदन में सकलार्हत् का चैत्यवंदन

स्तुति में स्नातस्या की स्तुति

स्तवन में अजितशांति स्तवन

सज्झाय में उवसग्गहरं + संसारदावानल

शांति में बडी शांति

4) पर्युषण का चौथा दिन : भाद्रपद वदी अमावस्या (श्रावण अमावस)

चैत्यवंदन : महावीर स्वामी का या पर्युषण संबंधी

स्तुति : महावीर स्वामी या पर्युषण संबंधी

स्तवन : महावीर स्वामी सत्ताइस भव संबंधी

5) पर्युषण का पांचवाँ दिन : भाद्रपद सुद एकम्

चैत्यवंदन : पर्युषण या महावीर स्वामी

स्तुति : पर्युषण या महावीर स्वामी

स्तवन : हालरडा

6) पर्युषण का छठा दिन : भाद्रपद सुद दूज

चैत्यवंदन : पर्युषण या सीमंधर स्वामी या महावीर स्वामी

स्तुति : पर्युषण या सीमंधर स्वामी या महावीर स्वामी

स्तवन : महावीर स्वामी के पंच कल्याणक संबंधी

7) पर्युषण का सातवाँ दिन : भाद्रपद सुद तृतीया (मांगलिक प्रतिक्रमण)

चैत्यवंदन : पार्श्वनाथ भगवान संबंधी

स्तुति : कल्लाणकंदं

स्तवन : संतिकरं

सज्झाय : साधु साध्वी हो तो वे `धम्मोमंगलं' की और वे न हो तो `मन्नहजिणाणमाणं'

8) संवत्सरी महापर्व : भाद्रपद सुद चौथ (संवत्सरी प्रतिक्रमण)

चैत्यवंदन : सकलार्हत्

स्तुति : स्नातस्या

अतिचार : संवत्सरी अतिचार

स्तवन : अजितशांति

सज्झाय : उवसग्गहरं + संसारदावा

शांति : बडी शांति ।

आओ ! पर्युषण प्रतिक्रमण करें

2

राइ प्रतिक्रमण विधि

सामायिक लेने की विधि

(पहले ऊँचे आसन पर पुस्तक आदि रखे। श्रावक या श्राविका शुद्ध वस्त्र पहिन कर कटासना, मुहपत्ति, चरवला लेकर भूमि प्रमार्जन कर कटासने पर बैठे। मुहपत्ति बायें हाथ में मुंह के पास रख दाहिना हाथ स्थापनाचार्यजी के सन्मुख रखकर **गुरुस्थापना मुद्रा** में बोले)

नमो अरिहंताणं।।1।। नमो सिद्धाणं ।।2।। नमो आयरियाणं ।।3।। नमो उवज्झायाणं ।।4।। नमो लोए सव्वसाहूणं ।।5।। एसो पंच नमुक्कारो ।।6।। सव्वपावप्पणासणो ।।7।। मंगलाणं च सव्वेसिं ।।8।। पढमं हवइ मंगलं ।।9।।

(गुरु-स्थापना सूत्र)

पंचिंदिय संवरणो, तह नवविह बंभचेर गुत्तिधरो ।
चउविह कसाय मुक्को, इअ अट्ठारस गुणेहिं संजुत्तो ।।1।।
पंच महव्वय जुत्तो, पंच विहायार पालण समत्थो ।
पंच समिओ तिगुत्तो, छत्तीस गुणो गुरू मज्झ ।।2।।

(यदि **प्रतिष्ठित** स्थापनाचार्यजी हो, तो वहां नवकार और पंचिंदिय नहीं बोले । फिर)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ।।3।। *(एक खमासमणा देकर खडे होकर बोले)*

इच्छकारेण संदिसह भगवन् ! इरियावहियं पडिक्कमामि ? इच्छं, इच्छामि पडिक्कमिउं ।।1।। इरियावहियाए, विराहणाए ।।2।। गमणागमणे ।।3।। पाणक्कमणे, बीयक्कमणे, हरियक्कमणे, ओसा

उत्तिंग-पणग-दग मट्टी-मक्कडा-संताणा-संकमणे ।।4।। जे मे जीवा विराहिया ।।5।। एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया ।।6।। अभिहया, वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परियाविया, किलामिया, उद्दविया, ठाणाओ ठाणं संकामिया, जीवियाओ ववरोविया, तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।।7।।

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं, विसोहीकरणेणं, विसल्लीकरणेणं, पावाणं कम्माणं, निग्घायणट्ठाए ठामि काउस्सग्गं।।8।।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए पित्तमुच्छाए ।।1।। सुहुमेहिं अंग संचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं ।।2।। एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सगो ।।3।। जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ।।4।। ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ।।5।।

(फिर एक लोगस्स का और लोगस्स नहीं आता हो तो चार नवकार का काउस्सग्ग करे, बाद में 'नमो अरिहंताणं' बोलकर कायोत्सर्ग पारकर लोगस्स बोले:)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे ।
अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ।।1।।
उसभ-मजिअं च वंदे, संभव मभिणंदणं च सुमइं च ।
पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ।।2।।
सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस-वासुपुज्जं च ।
विमल-मणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ।।3।।
कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च ।
वंदामि रिट्ठनेमिं पासं तह वद्धमाणं च ।।4।।
एवं मए अभिथुआ, विहुय-रय-मला-पहीण-जरमरणा ।
चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ।।5।।

कित्तियवंदियमहिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा ।
आरूग्ग-बोहिलाभं, समाहि-वर-मुत्तमं दिंतु ।।6।।
चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा ।
सागर-वर-गंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ।।7।।

(फिर खमासमण देते हुए)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि.

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक मुहपत्ति पडिलेहुं ? (गुरु कहे–**पडिलेह ।) इच्छं,**

(बोलकर पुरूष 50 बोल से और स्त्रियाँ 40 बोल से मुहपत्ति पडिलेहन करे, फिर)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं, जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि,

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक संदिसाहुं ! (गुरू कहे **''संदिसावेह'') ''इच्छं''**

इच्छामि खमासमणो वंदिउं, जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएणं वंदामि.

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक ठाउं ? (गुरू कहे **'ठाएह') ''इच्छं''**

(फिर दोनों हाथ जोडकर एक नवकार गिने ।)

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो उवज्झायाणं, नमो लोए सव्वसाहूणं, एसो पंच नमुक्कारो, सव्व पावप्पणासणो, मंगलाणं च सव्वेसि, पढमं हवइ मंगलं ।

(फिर दो हाथ जोडकर जोर से बोले–)

इच्छकारी भगवन् ! पसाय करी सामायिक दंडक उच्चरावोजी ?

(गुरू महाराज या ज्येष्ठ व्यक्ति न हो, तो स्वयं बोले)

करेमि भंते ! सामाइयं सावज्जं जोगं पच्चक्खामि, जाव नियमं पज्जुवासामि, दुविहं-तिविहेणं, मणेणं-वायाए-काएणं, न करेमि, न कारवेमि, तस्स भंते ! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि, (फिर)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि.

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! बेसणे संदिसाहुं ? (गुरू कहे **'संदिसावेह'**) **'इच्छं'**

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि.

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! बेसणे ठाउं ? (गुरू कहे **'ठाएह'**) **'इच्छं'**

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि.

इच्छाकारणे संदिसह भगवन् ! सज्झाय संदिसाहुं ? (गुरू कहे **'संदिसावेह'**) **'इच्छं'**

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि.

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सज्झाय करूं ? (गुरू कहे **'करेह'**) **'इच्छ'** (फिर दोनों हाथ जोड़ कर तीन नवकार गिने)

सामायिक लेने की विधि समाप्त

राइ प्रतिक्रमण विधि

(सामायिक लेने के बाद)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि. (खमासमण देकर, फिर खडे होकर)

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! कुसुमिण दुसुमिण उड्डावणि राइय, पायच्छित्त-विसोहणत्थं काउस्सग्ग करूं ? (गुरू कहे **'करेह'**) **'इच्छं', कुसुमिण दुसुमिण उड्डावणि, राइय पायच्छित्त विसोहणत्थं करेमि काउस्सग्गं ।**

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं वायनिसग्गेणं, भमलीए पित्तमुच्छाए।।1।। सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं, खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं ।।2।। एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो।।3।। जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ।।4।। ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ।।5।।

(अब्रह्म-मैथुन संबंधी स्वप्न आया हो तो **चार लोगस्स** का **सागरवर गंभीरा** तक तथा अन्य स्वप्न आया हो तो **''चंदेसुनिम्मलयरा''** तक चार लोगस्स का काउस्सग्ग करे, लोगस्स न आता हो, तो सोलह नवकार मंत्र का काउस्सग्ग करे, काउस्सग्ग पार कर लोगस्स कहे)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्म तित्थयरे जिणे ।
अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ।।1।।
उसभ-मजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च ।
पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ।।2।।
सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल सिज्जंस वासुपुज्जं च ।
विमल-मणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ।।3।।

कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमि-जिणं च ।
वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ।।4।।
एवं मए अभिथुआ, विहुय-रय-मला पहीणजर-मरणा ।
चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ।।5।।
कित्तिय-वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा ।
आरूग्गबोहिलाभं, समाहि-वर-मुत्तमं दिंतु ।।6।।
चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा ।
सागर-वर-गंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ।।7।। फिर,

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि.

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् चैत्यवंदन करूं ? इच्छं.

(ऐसा बोलकर बांया घुंटना ऊँचा करके चैत्यवंदन करे)

जगचिंतामणि जगनाह, जगगुरू जगरक्खण, जगबंधव जगसत्थवाह, जगभाव-विअक्खण, अट्ठावय-संठविय-रूव, कम्मट्ठ-विणासण, चउवीसंपि जिणवर जयंतु, अप्पडिहयसासण ।।1।।

कम्मभूमिहिं कम्मभूमिहिं पढम-संघयणी, उक्कोसय सत्तरिसय, जिणवराण विहरंत लब्भइ, नवकोडिहिं केवलीण. कोडि सहस्स नव साहु गम्मइ, संपइ जिणवर वीस मुणि, बिहुं कोडिहिं वरनाण, समणह कोडि सहस्स दुअ, थुणिज्जइ निच्च विहाणि ।।2।।

जयउ सामिय जयउ सामिय, रिसह सत्तुंजि, उज्जिंति पहु नेमिजिण, जयउ वीर सच्चउरीमंडण, भरूअच्छहिं-मुणिसुव्वय, मुहरिपास दुहदुरिअखंडण, अवरविदेहिं तित्थयरा, चिहुं दिसि विदिसि जिं के वि, तीआणागय-संपइ अ वंदुं जिण सव्वेवि ।।3।।

सत्ताणवइ सहस्सा, लक्खा छप्पन्न अट्ठ कोडिओ,
बत्तीससय बासिआइं, तिअलोए चेइए वंदे ।।4।।
पनरसकोडि सयाइं, कोडि बायाल लक्ख अडवन्ना,
छत्तीस सहस असिइं, सासय बिंबाइं पणमामि ।।5।।

जंकिंचि नाम तित्थं, सग्गे पायालि माणुस्से लोए,
जाइं जिण-बिंबाइं, ताइं सव्वाइं वंदामि ।।1।।
नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं ।।1।।
आइगराणं तित्थयराणं सयंसंबुद्धाणं ।।2।।
पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं,पुरिसवर पुंडरीआणं, पुरिसवर गंध-हत्थीणं ।।3।।
लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआणं, लोगपईवाणं, लोगप-ज्जोअगराणं ।।4।। अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं, बोहिदयाणं ।।5।। धम्मदयाणं, धम्मदेसयाणं, धम्म-नायगाणं, धम्म-सारहीणं, धम्मवरचाउरंत-चक्कवट्टीणं ।।6।। अप्पडिह-यवरनाण-दंसणधराणं, विअट्ट छउमाणं ।।7।।
जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं, सव्वन्नूणं सव्वदरिसीणं सिव-मयल-मरूअ-मणंत-मक्खय-मव्वाबाहमपुणरावित्ति-सिद्धिगइ-नामधेयं ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं जिअभयाणं ।।9।।
जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संति णागएकाले,
संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ।।10।।
जावंति चेइआइं, उड्ढे अ अहे तिरिअ लोए अ ।
सव्वाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइं ।।1।।
(फिर खमासमण दे)
इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि.
जावंत केवि साह, भरहेरवय महाविदेहे अ ।
सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंड-विरयाणं ।।1।।
नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः
(बहिने यह नमोऽर्हत् सूत्र न बोले)
उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं ।
विस-हर-विसनिन्नासं, मंगलकल्लाण-आवासं ।।1।।

विसहर फुलिंगमंतं, कंठे धारेइ जो सया मणुओ ।
तस्स-गह-रोग-मारी, दुट्ठ-जरा जंति उवसामं ।।2।।
चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामो वि बहुफलो होइ ।
नर-तिरिएसु वि जीवा, पावंति न दुक्ख-दोगच्चं ।।3।।
तुह सम्मत्ते लद्धे, चिंतामणि-कप्पपायवब्भहिए ।
पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं ।।4।।
इअ संथुओ महायस ! भत्तिब्भर निब्भरेण हिअएण ।
ता देव दिज्ज बोहिं, भवे भवे पास जिणचंद ।।5।।
(फिर दोनों हाथ मस्तक पर लगाकर)
जय वीयराय ! जगगुरू, होउ ममं तुह पभावओ भयवं ।
भवनिव्वेओ मग्गाणुसारिआ इट्ठफलसिद्धि ।।1।।
लोगविरूद्धच्चाओ, गुरूजणपूआ परत्थकरणं च ।
सुहगुरूजोगो तव्वयणसेवणा आभवमखंडा ।।2।। (हाथ नीचे कर)
वारिज्जइ जइवि नियाण बंधणं वीयराय ! तुह समए,
तह वि मम हुज्ज सेवा, भवे भवे तुम्ह चलणाणं ।।3।।
दुक्खक्खओ कम्मक्खओ, समाहिमरणं च बोहिलाभो अ ।
संपज्जउ मह एअं, तुह नाह ! पणाम-करणेणं ।।4।।
सर्व मंगल-मांगल्यं, सर्व कल्याण कारणं ।
प्रधानं सर्वधर्माणां, जैनं जयति शासनम् ।।5।।

(यहां एक एक खमासमण देकर **भगवानहं** इत्यादि एक एक पद बोले)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि, 'भगवान हं',

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि, 'आचार्य हं',

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि, 'उपाध्याय हं',

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि, 'सर्वसाधु हं',

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ।

'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सज्झाय संदिसाहुं ?' (गुरू कहे **'संदिसावेह) इच्छं, इच्छामि खमासमणो ? वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि'.**

'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सज्झाय करूं' (गुरू कहे **'करेह'**) **इच्छं.**

(फिर **एक नवकार** बोलकर भरहेसर की सज्झाय बोले)

भरहेसर बाहुबली, अभयकुमारो अ ढंढण कुमारो अ ।
सिरिओ अणिआउत्तो, अइमुत्तो नागदत्तो अ ।।1।।
मेअज्ज थूलिभद्दो, वयररिसी नंदिसेण सिंहगिरी ।
कयवन्नो अ सुकोसल, पुंडरिओ केसी करकंडू ।।2।।
हल्ल विहल्ल सुदंसण, साल-महासालसालिभद्दो अ ।
भद्दो दसन्नभद्दो, पसन्नचंदो अ जसभद्दो ।।3।।
जंबुपहू वंकचूलो, गयसुकुमालो अवंतिसुकुमालो ।
धन्नो इलाइपुत्तो, चिलाइपुत्तो अ बाहुमुणी ।।4।।
अज्ज-गिरि अज्ज-रक्खिअ, अज्जसुहत्थी उदायगो मणगो ।
कालयसूरी संबो, पज्जुन्नो मूलदेवो अ ।।5।।
पभवो विण्हुकुमारो, अद्द-कुमारो दढप्पहारी अ ।
सिज्जंसकूरगडू अ, सिज्जंभव मेहकुमारो अ ।।6।।
एमाइ महासत्ता, दिंतु सुहं गुणगणेहिं संजुत्ता ।
जेसिं नामग्गहणे, पावप्पबंधा विलयं जंति ।।7।।
सुलसा चंदणबाला, मणोरमा मयणरेहा दमयंती ।
नमया-सुंदरी सीया, नंदा भद्दा सुभद्दा य ।।8।।

राईमई रिसिदत्ता, पउमावइ अंजणा सिरिदेवी ।
जिट्ठ सुजिट्ठ मिगावई, पभावई चिल्लणादेवी ।।9।।
बंभी सुंदरी रूप्पिणी, रेवई कुंती सिवा जयंती य ।
देवई दोवई धारिणी, कलावई पुप्फचूला य ।।10।।
पउमावई य गोरी, गंधारी लक्खमणा सुसीमा य ।
जंबूवई सच्चभामा, रूप्पिणी कण्हट्ठ महिसीओ ।।11।।
जक्खा जक्खदिन्ना, भूआ तह चेव भूअदिन्ना य ।
सेणा वेणा रेणा, भयणीओ थूलिभद्दस्स ।।12।।
इच्चाइ महासईओ, जयंति अकलंक सील कलिआओ ।
अज्जवि वज्जइ जासिं, जस पडहो तिहुअणे सयले ।।13।।

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो उवज्झायाणं, नमो लोए सव्वसाहूणं, एसो पंच नमुक्कारो, सव्व पावप्पणासणो, मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं ।।

(खंडे होकर)

इच्छकार सुहराइ ? सुखतप ? शरीर निराबाध ? सुखसंजम जात्रा निर्वहो छोजी ? स्वामी शाता छे जी ? भात पाणीनो लाभ देजो जी ।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् । राइअ पडिक्कमणे ठाउं ।

(गुरू कहे **'ठाएह'**) **इच्छं !**

(दाहिना हाथ चरवले पर रखकर)

सव्वस्स वि राइअ दुच्चिंतिअ, दुब्भासिअ, दुच्चिट्ठिअ, मिच्छामि दुक्कडं ।

(बाया घुटना ऊंचा करके)

नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं ।।1।। आइगराणं, तित्थयराणं, सयंसंबुद्धाणं ।।2।। पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवरपुंडरीआणं, पुरिसवर गंधहत्थीणं ।।3।। लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआणं, लोगपईवाणं, लोगपज्जोअगराणं ।।4।। अभयदयाणं, चक्खुदयाणं,

मग्गदयाणं, सरणदयाणं, बोहिदयाणं ।।5।। धम्म दयाणं, धम्म-देसयाणं, धम्म-नायगाणं, धम्म-सारहीणं, धम्मवरचाउरंत चक्कवट्टीणं ।।6।। अप्पडिहयवरनाण-दंसण-धराणं विअट्टछउमाणं।।7।। जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं, तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं ।।8।। सव्वन्नूणं, सव्वदरिसीणं, सिव-मयल-मरूअ-मणंत मक्खय मव्वाबाहमपुणरावित्ति-सिद्धिगइ-नामधेयं-ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं जिअभयाणं ।।9।।

जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संति णागएकाले,
संपइ अवट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ।।10।।

(खडे होकर)

करेमि भंते ! सामाइयं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि, जाव नियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं, मणेणं, वायाए, काएणं, न करेमि न कारवेमि तस्स भंते ! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि. (फिर)

इच्छामि ठामि काउस्सगं, जो मे राइओ अइयारो, कओ, काइओ, वाइओ, माणसिओ, उस्सुत्तो, उम्मग्गो, अकप्पो, अकरणिज्जो, दुज्झाओ, दुव्विचिंतिओ, अणायारो, अणिच्छिअव्वो, असावग्गपाउग्गो, नाणे, दंसणे, चरित्ताचरित्ते, सुए, सामाइए, तिण्हं गुत्तीणं, चउण्हं कसायाणं, पंचण्ह-मणुव्वयाणं, तिण्हं गुणव्वयाणं, चउण्हं सिक्खावयाणं, बारसविहस्स सावगधम्मस्स, जं खंडिअं जं विराहिअं तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।।

तस्स उत्तरी करणेणं, पायच्छित्त-करणेणं, विसोही करणेणं, विसल्ली करणेणं, पावाणं कम्माणं, निग्घायणट्ठाए, ठामि काउ-स्सग्गं ।।1।।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए पित्तमुच्छाए ।।1।। सुहुमेहिं

अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं ।।2।। एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो ।।3।। जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ।।4।। ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ।।5।।

(फिर **एक लोगस्स ''चंदेसु निम्मलयरा''** तक, लोगस्स न आता हो तो चार नवकार का काउस्सग्ग करे, उसके बाद लोगस्स बोले ।)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्म-तित्थयरे जिणे ।
अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ।।1।।
उसभ-मजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च ।
पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ।।2।।
सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस-वासुपूज्जं च ।
विमल-मणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ।।3।।
कुंथुं अरं च मल्लिं, वन्दे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च ।
वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ।।4।।
एवं मए अभिथुआ, विहुय-रयमला-पहीण-जर-मरणा ।
चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा ने पसीयंतु ।।5।।
कित्तिय-वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा ।
आरूग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ।।6।।
चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा ।
सागर-वर-गंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ।।7।। (फिर)

सव्वलोए अरिहंत-चेइआणं, करेमि काउस्सग्गं ।।1।। वंदण-वत्तिआए, पूअण-वत्तिआए, सक्कार वत्तिआए, सम्माण वत्तिआए, बोहिलाभ वत्तिआए, निरूवसग्ग-वत्तिआए ।।2।। सद्धाए, मेहाए, धिइए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए, ठामि काउस्सग्गं ।।3।।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं छीएणं,

जंभाएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए ।।1।। सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं ।।2।। एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो ।।3।। जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ।।4।। ताव कायं, ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि ।।5।।

(फिर **''चंदेसु निम्मलयरा''** तक एक लोगस्स का और लोगस्स नहीं आता हो तो चार नवकार का काउस्सग्ग करे ।)

पुक्खर-वरदीवड्ढे, धायइसंडे अ जंबुदीवे अ ।
भरहेरवय-विदेहे, धम्माइगरे नमंसामि ।।1।।
तम-तिमिर-पडल-विद्धंसणस्स, सुरगण-नरिंद महिअस्स ।
सीमा-धरस्स वंदे, पप्फोडिअ-मोह-जालस्स ।।2।।
जाइ-जरामरणसोग-पणासणस्स, कल्लाण-पुक्खलविसाल-सुहावहस्स ।
को देव-दाणव-नरिंदगणच्चिअस्स।धम्मस्स सार-मुवलब्भ करे पमायं।।3।।
सिद्धे भो पयओ णमो जिणमए नंदी सया संजमे ।
देव नागसुवन्न-किन्नरगणस्सब्भुअ-भावच्चिए ।
लोगो जत्थ पइट्ठिओ जगमिणं तेलुक्कमच्चासुरं ।
धम्मो वड्ढउ सासओ विजयओ धम्मुत्तरं वड्ढउ ।।4।।
सुअस्स भगवओ करेमि काउस्सग्गं । ।।1।। वंदणवत्तिआए, पूअणवत्तिआए सक्कार-वत्तिआए, सम्माण वत्तिआए, बोहिलाभ-वत्तिआए, निरूवसग्गवत्तिआए ।।2।। सद्धाए मेहाए धिइए धारणाए अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं ।।3।।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए ।।1।। सुहु-मेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं ।।2।। एवमाइएहिं आगरेहिं, अभग्गो अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो ।।3।। जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ।।4।। ताव कायं, ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि ।।5।।

(अतिचार की आठ गाथा का काउस्सग्ग करे, **'नाणम्मि'** सूत्र न आता हो तो आठ नवकार गिने । काउस्सग्ग में पढने की आठ गाथाएँ ।)

नाणंमि दंसणंमि अ चरणंमि तवंमि तह य वीरियंमि ।
आयरणं आयारो, इअ एसो पंचहा भणिओ ।।1।।
काले विणए बहुमाणे, उवहाणे तह अनिन्हवणे ।
वंजण अत्थ तदुभए, अट्ठविहो नाण-मायारो ।।2।।
निस्संकिय-निक्कंखिअ, निव्वि-तिगिच्छा अमूढदिट्ठी अ ।
उववुह-थिरीकरणे, वच्छल्लपभावणे अट्ठ ।।3।।
पणिहाण-जोग-जुत्तो, पंचहिं समिईहिं तिहिं गुत्तीहिं ।
एस चरित्तायारो, अट्ठविहो होइ नायव्वो ।।4।।
बारसविहंमि वि तवे, सब्भिंतर-बाहिरे कुसलदिट्ठे ।
अगिलाइ-अणाजीवी, नायव्वो सो तवायारो ।।5।।
अणसण-मूणोअरिआ, वित्ती-संखेवणं रस-च्चाओ ।
काय-किलेसो संलीणया, य बज्झो तवो होइ ।।6।।
पायच्छित्तं विणओ, वेयावच्चं तहेव सज्झाओ ।
झाणं उस्सग्गो वि अ, अब्भिंतरओ तवो होइ ।।7।।
अणिगूहिअ-बल-वीरिओ, परक्कमई जो जहुत्त-माउत्तो ।
जुंजइ अ जहाथामं, नायव्वो वीरियायारो ।।8।।

(काउस्सग्ग पारकर **सिद्धाणं बुद्धाणं** बोले)

सिद्धाणं बुद्धाणं, पारगयाणं परंपरगयाणं ।
लोअग्गमुवगयाणं, नमो सया सव्वसिद्धाणं ।।1।।
जो देवाण वि देवो, जं देवा पंजली नमंसंति ।
तं देवदेव-महिअं, सिरसा वंदे महावीरं ।।2।।
इक्कोवि नमुक्कारो, जिणवरवसहस्स वद्धमाणस्स ।
संसार सागराओ, तारेइ नरं व नारिं वा ।।3।।

उज्जिंतसेल-सिहरे, दिक्खा नाणं निसीहिआ जस्स ।
तं धम्मचक्कवट्टिं, अरिट्ठनेमिं नमंसामि ।।4।।
चत्तारि अट्ठ दस दोय, वंदिया जिणवरा चउव्वीसं ।
परमट्ठ-निट्ठि-अट्ठा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ।।5।।

(फिर तीसरे आवश्यक की मुहपत्ति पडिलेहन कर दो वांदणा दे ।)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए ।।1।। अणुजाणह मे मिउग्गहं ।।2।। निसीहि, अ-हो, कायं, का-य संफासं, खमणिज्जो भे किलामो, अप्पकिलंताणं, बहुसुभेण भे राइअ वइक्कंता ! ।।3।। जत्ता भे ? ।।4।। ज व णिज्जं च भे ? ।।5।। खामेमि खमासमणो, राइअं वइक्कम्मं ।।6।। आवस्सिआए पडिक्कमामि, खमासमणाणं राइआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए, वय दुक्कडाए, कायदुक्कडाए कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइयारो कओ, तस्स खमासमणो ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ।।7।।

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए ।।1।। अणुजाणह मे मिउग्गहं ।।2।। निसीहि, अ-हो, का-यं, का-य संफासं, खमणिज्जो भे किलाभो, अप्पकिलंताणं, बहुसुभेण भे राइअ वइक्कंता ! ।।3।। ज त्ता भे ? ।।4।। त व णिज्जं च भे ? ।।5।। खामेमि खमासमणो, राइअं वइक्कम्मं ।।6।। पडिक्कमामि, खमासमणाणं राइआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए, मणदुक्क-डाए, वयदुक्कडाए, काय दुक्कडाए कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसाय-णाए, जो मे अइयारो कओ, तस्स खमासमणो ! पडिक्कमामि निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ।।7।।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! राइएं आलोउं ?

(गुरू कहे 'आलोएह')

'इच्छं' ! आलोएमि जो मे राइओ अइआरो कओ काइओ वाइओ, माणसिओ, उस्सुत्तो, उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ, अणायारो अणिच्छि-अव्वो असावगपाउग्गो नाणे, दंसणे, चरित्ताचरित्ते सुए सामाइए तिण्हं गुत्तीणं चउण्हं कसायाणं पंचण्हमणुव्वयाणं तिण्हं गुणव्वयाणं चउण्हं सिक्खावयाणं बारसविहस्स सावगधम्मस्स, जं खंडिअं जं विराहिअं, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ।।

सात लाख पृथ्वीकाय, सात लाख अप्काय, सात लाख तेउकाय, सात लाख वाउकाय, दश लाख प्रत्येक वनस्पतिकाय, चौद लाख साधारण वनस्पतिकाय, बे लाख बेइंद्रिय, बे लाख तेइंद्रिय, बे लाख चउरिंन्द्रिय, चार लाख देवता, चार लाख नारकी, चार लाख तिर्यंच पंचेन्द्रिय, चौद लाख मनुष्य एवंकारे, चोरासी लाख जीवयोनिमांहि, मारे जीवे जे कोइ जीव हण्यो होय, हणाव्यो होय हणतां प्रत्ये अनुमोद्यो होय, ते सवि हुँ मन, वचन, कायाए करी तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ।

पहेले प्राणातिपात, बीजे मृषावाद, त्रीजे अदत्तादान, चोथे मैथुन, पांचमे परिग्रह, छट्ठे क्रोध, सातमे मान, आठमे माया, नवमे लोभ, दसमे राग, अग्यारमे द्वेष, बारमे कलह, तेरमे अभ्याख्यान, चौदमे पैशून्य, पंदरमे रति-अरति, सोलमे परपरिवाद, सत्तरमे माया मृषावाद, अढारमे मिथ्यात्व शल्य, ए अढार पापस्थानकमांहि मारे जीवे जे कोइ पाप सेव्युं होय, सेवराव्युं होय, सेवतां प्रत्ये अनुमोद्युं होय, ते सवि हुँ मन, वचन, कायाए करी तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

सव्वस्सवि राइअ दुच्चिंतिअ दुब्भासिअ, दुच्चिट्ठिअ, इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! (गुरू कहे **'पडिक्कमेह'**) **इच्छं तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ।।**

(बाद में वीरासन मुद्रा में अथवा दाहिना घुटना ऊंचा करके बोले)

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो

उवज्झायाणं, नमो लोए सव्वसाहूणं, एसो पंच नमुक्कारो, सव्वपावप्पणासणो, मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं ।

करेमि भंते ! सामाइयं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि, जाव नियमं पज्जुवासामि, दुविहं, तिविहेणं, मणेणं, वायाए, काएणं, न करेमि न कारवेमि, तस्स भंते ! पडिक्कमामि, निंदामि गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि (फिर)

इच्छामि पडिक्कमिऊं, जो मे राइओ अइआरो कओ, काइओ, वाइओ, माणसिओ, उस्सुत्तो, उम्मग्गो, अकप्पो, अकरणिज्जो, दुज्झाओ, दुव्विचिंतिओ अणायारो, अणिच्छिअव्वो, असावगपाउग्गो, नाणे, दंसणे, चरित्ताचरित्ते, सुए, सामाइए, तिण्हं गुत्तीणं, चउण्हं कसायाणं, पंचण्हमणुव्वयाणं, तिण्हं गुणव्वयाणं, चउण्हं सिक्खावयाणं बारसविहस्स सावगधम्मस्स, जं खंडिअं, जं विराहिअं, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ।

वंदित्तु सव्वसिद्धे, धम्मायरिए अ सव्वसाहू अ ।
इच्छामि पडिक्कमिउं, सावग-धम्माइआरस्स ।।1।।
जो मे वयाइआरो, नाणे तह दंसणे चरित्ते अ ।
सुहुमो अ बायरो वा, तं निंदे तं च गरिहामि ।।2।।
दुविहे परिग्गहंमि, सावज्जे बहुविहे अ आरंभे ।
कारावणे अ करणे, पडिक्कमे राइअं सव्वं ।।3।।
जं बद्ध-मिंदिएहिं, चउहिं कसाएहिं अप्पसत्थेहिं ।
रागेण व दोसेण व, तं निंदे तं च गरिहामि ।।4।।
आगमणे निग्गमणे, ठाणे चंकमणे अणाभोगे ।
अभिओगे अनिओगे, पडिक्कमे राइअं सव्वं ।।5।।
संका कंख विगिच्छा, पसंस तह संथवो कुलिंगिसु ।
सम्मत्तस्सइआरे, पडिक्कमे राइअं सव्वं ।।6।।
छक्काय-समारंभे, पयणे अ पयावणे अ जे दोसा ।
अत्तट्ठा य परट्ठा, उभयट्ठा चेव तं निंदे ।।7।।

पंचण्ह-मणुव्वयाणं, गुण-व्वयाणं च तिण्ह-मइयारे ।
सिक्खाणं च चउण्हं, पडिक्कमे राइअं सव्वं ।।8।।
पढमे अणुव्वयंमि, थूलग-पाणाइवाय-विरइयो ।
आयरिय-मप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ।।9।।
वहबंधछविच्छेए, अइभारे भत्तपाणवुच्छेए ।
पढम-वयस्स-इआरे, पडिक्कमे राइअं सव्वं ।।10।।
बीए अणुव्वयंमि, परिथूलग-अलिय-वयण-विरइओ ।
आयरिय-मप्पसत्थे, इत्थे पमाय-प्पसंगेणं ।।11।।
सहसा रहस्स-दोर, मोसुवएसे अ कूडलेहे अ ।
बीअ-वयस्स-इआरे, पडिक्कमे राइअं सव्वं ।।12।।
तइए अणुव्वयंमि थूलग-परदव्व-हरण-विरइओ ।
आयरिय-मप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ।।13।।
तेनाहडप्पओगे, तपप्डिरूवे विरुद्ध-गमणे अ ।
कूडतुल-कुडमाणे, पडिक्कमे राइअं सव्वं ।।14।।
चउत्थे अणुव्वयंमि, निच्चं परदारगमण-विरइओ ।
आयरिय-मप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ।।15।।
अपरिग्गहिआ इत्तर, अणंगविवाह तिव्वअणुरागे ।
चउत्थ वयस्सइआरे, पडिक्कमे राइअं सव्वं ।।16।।
इत्तो अणुव्वए पंचमंमि, आयरियमप्पसत्थंमि ।
परिमाण-परिच्छेए, इत्थ पमायप्पसंगेणं ।।17।।
धण-धन्न खित्तवत्थु, रूप्प-सुवन्ने अ कुविअ-परिमाणे ।
दुपए चउप्प-यंमि य, पडिक्कमे राइअं सव्वं ।।18।।
गमणस्स उ परिमाणे, दिसासु उड्ढं अहे अ तिरिअं च ।
वुड्ढि सइ-अंतरद्धा, पढमंमि गुणव्वए निंदे ।।19।।
मज्जंमि अ मंसंमि अ, पुप्फे अ फले अ गंधमल्ले अ ।
उवभोग-परिभोगे, बीयंमि गुणव्वए निंदे ।।20।।

सचित्ते पडिबद्धे, अप्पोलि-दुप्पोलियं च आहारे ।
तुच्छोसहिभक्खणया, पडिक्कमे राइअं सव्वं ।।21।।
इंगाली-वण-साडी, भाडी-फोडीसु वज्जए कम्मं ।
वाणिज्जं चेव दंत, लक्ख-रस-केस-विसविसयं ।।22।।
एवं खु जंतपिल्लण-कम्मं निल्लंछणं च दवदाणं ।
सर-दह-तलाय-सोसं, असईपोसं च वज्जिज्जा ।।23।।
सत्थग्गि-मुसल-जंतग, तण-कट्ठे-मंत-मूल-भेसज्जे ।
दिन्ने दवाविए वा, पडिक्कमे राइअं सव्वं ।।24।।
न्हाणु-व्वट्टण-वन्नग, विलेवणे सद्द-रूव-रस-गंधे ।
वत्थासण-आभरणे, पडिक्कमे राइअं सव्वं ।।25।।
कंदप्पे कुक्कुइए, मोहरि-अहिगरण-भोग-अइरित्ते ।
दंडंमि अणट्ठाए, तइअंमि गुणव्वए निंदे ।।26।।
तिविहे दुप्पणिहाणे, अणवट्ठाणे तहा सइ विहूणे ।
सामाइअ वितहकए, पढमे सिक्खावए निंदे ।।27।।
आणवणे पेसवणे, सद्दे रूवे अ पुग्गलक्खेवे ।
देसावगासिअंमि, बीए सिक्खावए निंदे ।।28।।
संथारूच्चारविहि, पमाय तह चेव भोयणाभोए ।
पोसह-विहि-विवरीए, तइए सिक्खावए निंदे ।।29।।
सच्चित्ते निक्खिवणे, पिहिणे ववएस-मच्छरे चेव ।
कालाइक्कम-दाणे चउत्थे सिक्खावए निंदे ।।30।।
सुहिएसु अ दुहिएसु अ, जा मे असंजएसु अणुकंपा ।
रागेण व दोसेण व, तं निंदे तं च गरिहामि ।।31।।
साहूस संविभागो, न कओ तव-चरण-करण-जुत्तेसु ।
संते फासुअ-दाणे, तं निंदे तं च गरिहामि ।।32।।
इहलोए परलोए, जीविअ-मरणे अ आसंसपओगे ।
पंचविहो अइयारो, मा मज्झ हुज्ज मरणंते ।।33।।

काएण काइअस्स, पडिक्कमे वाइअस्स वायाए ।
मणसा माणसिअस्स, सव्वस्स वयाइआरस्स ।।34।।
वंदणं-वय-सिक्खा-गारवेसु, सन्ना कसायदंडेसु ।
गुत्तीसु अ समिइसु अ, जो अइआरो अ तं निंदे ।।35।।
सम्मदिट्ठी जीवो, जइवि हु पावं समायरे किंचि ।
अप्पोसि होइ बंधो, जेण न निद्धंधसं कुणइ ।।36।।
तं पि हु सपडिक्कमणं, सप्परिआवं सउत्तरगुणं च ।
खिप्पं उवसामेइ, वाहिव्व सुसिक्खिओ विज्जो ।।37।।
जहा विसं कुट्ठगयं, मंतमूल विसारया ।
विज्जा हणंति मंतेहिं, तो तं हवइ निव्विसं ।।38।।
एवं अट्ठविहं कम्मं, राग-दोस-समज्जिअं ।
आलोअंतो अ निंदंतो, खिप्पं हणइ सुसावओ ।।39।।
कयपावोवि मणुस्सो, आलोइअ निंदिअ गुरूसगासे ।
होइ अइरेग लहुओ, ओहरिअ भरूव्व भारवहो ।।40।।
आवस्सएण एएण, सावओ जइ वि बहुरओ होइ ।
दुक्खाणमंतकिरिअं, काहि अचिरेण कालेण ।।41।।
आलोअणा बहुविहा, न य संभरिआ पडिक्कमण-काले ।
मूलगुण-उत्तरगुणे, तं निंदे तं च गरिहमि ।।42।।
तस्स धमस्स केवली-पन्नत्तस्स ।।
(यहां से खडे होकर बोले)
अब्भुट्ठिओ मि आराहणाए, विरओमि विराहणाए ।
तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ।।43।।
जावंति चेइआइं, उड्ढे अ अहे अ तिरिअ लोए अ ।
सव्वाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइं ।।44।।
जावंत केवि साहू, भरहेरवय महाविदेहे अ ।
सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंड-विरयाणं ।।45।।

चिर-संचिय-पावपणासणीइ, भव-सय सहस्स-महणीए ।
चउवीस-जिण-विणिग्गय-कहाइ, वोलंतु मे दिअहा ।।46।।

मम मंगल-मरिहंता, सिद्धा साहू सुअं च धम्मो अ ।
सम्मदिट्ठी देवा, दिंतु समाहिं च बोहिं च ।।।47।।

पडिसिद्धाणं करणे, किच्चाणमकरणे अ पडिक्कमणं ।
असद्दहणे अ तहा, विवरीय परूवणाए अ ।।48।।

खामेमि सव्व-जीवे, सव्वे जीवा खमंतु मे ।
मित्ती मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झ न केणइ ।।49।।

एवमहं आलोइअ, निंदिअ-गरहिअ-दुगंछिअं सम्मं ।
तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ।।50।।
(फिर दो बार वांदणा दे)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए ।।1।। अणुजाणह, मे मिउग्गहं ।।2।। निसीहि, अ-हो का-यं, का-य संफासं, खमणिज्जो भे किलामो, अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे राइअ वइक्कंता ? ।।3।। ज-त्ता भे ? ।।4।। ज-व-णिज्जं च भे ? ।।5।। खामेमि खमासमणो ! राइअं वइक्कम्मं ।।6।। आवस्सिआए, पडिक्कमामि, खमासमणाणं राइआए, आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जंकिंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्क-मणाए, आसायणाए, जो मे अइआरो कओ, तस्स खमासमणो ! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि।।7।।

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहि आए ।।1।। अणुजाणह, मे मिउग्गहं ।।2।। निसीहि, अ-हो का-यं, का-य संफासं, खमणिज्जो भे किलामो, अप्पकिलंताणं बहुसुमेण भे राइअ वइक्कंता ? ।।3।। ज-त्ता भे ? ।।4।। ज-व-णिज्जं च भे?।।5।। खामेमि खमासमणो ! राइअं वइक्कम्मं ।।6।। पडिक्कमामि,

खमासमणाणं राइआए, आसायणाए, तित्तीसन्नायराए, जं किंचि मिच्छाए, मणुदुक्क-डाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइआरो कओ, तस्स खमासमणो ! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि।।7।।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! अब्भुट्ठिओमि अब्भिंतर राइअं खामेउं ? इच्छं खामेमि राइअं.

(फिर दाहिना हाथ चरवले पर रख कर)

जं किंचि अपत्तिअं, परत्तिअं, भत्ते, पाणे, विणए, वेआवच्चे, आलावे, संलावे, उच्चसणे, समासणे, अंतरभासाए, उवरीभासाए जं किंचि मज्झ विणय-परिहीणं, सुहुमं वा बायरं वा, तुब्भे जाणह अहं न जाणामि तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।।

(फिर दो वांदणा दे)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए ।।1।। अणुजाणह, मे मिउग्गहं ।।2।। निसीहि, अ-हो, का-यं संफासं, खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे, राइअ वइक्कंता ?।।3।। जत्ता भे ? ।।4।। ज-व-णि-ज्जं च भे ? ।।5।। खमासमणो ! राइअं वइ-क्कम्मं ।।6।। आवस्सिआए पडिक्कमामि खमासमणाणं राइआए, आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए,मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइ-क्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइआरो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ।।7।।

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए ।।1।। अणुजाणह मे मिउग्गहं ।।2।। निसीहि अ-हो का-यं का-य संफासं खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे राइअ वइक्कंता ।।3।। जत्ता भे ? ।।4।। ज-व-णिज्जं च भे ।।5।। खामेमि

खमासमणो राइअं वइक्कम्मं ।।6।। पडिक्कमामि खमासमणाणं राइआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए जं किंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए जो मे अइयारो कओ, तस्स खमासमणो पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ।।7।। (हाथ जोडकर बोले)

आयरिय उवज्झाए, सीसे साहम्मिए कुलगणे अ ।
जे मे केइ कसाया, सव्वे तिविहेण खामेमि ।।1।।
सव्वस्स समणसंघस्स, भगवओ अंजलिं करीअ सीसे ।
सव्वं खमावइत्ता, खमामि सव्वस्स अहयं पि ।।2।।
सव्वस्स जीवरासिस्स, भावओ धम्मनिहिअ निअचित्तो ।
सव्वं खमावइत्ता, खमामि सव्वस्स अहयं पि ।।3।।

करेमि भंते ! सामाइयं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि, जाव नियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं, मणेणं वायाए काएणं, न करेमि न कारवेमि, तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ।।

इच्छामि ठामि काउस्सग्गं, जो मे राइओ, अइआरो कओ काइओ वाइओ माणसिओ, उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ अणायारो अणिच्छिअव्वो, असावग्गपाउग्गो, नाणे दंसणे चरित्ताचरित्ते, सुए, सामाइए, तिण्हं गुत्तीणं, चउण्हं कसायाणं पंचण्हमणुव्वयाणं, तिण्हं गुणव्वयाणं, चउण्हं सिक्खावयाणं, बारसविहस्स सावगधम्मस्स, जं खंडिअं जं विराहिअं तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।।

तस्स उत्तरी करणेणं, पायच्छित्तकरणेणं, विसोहीकरणेणं, विसल्लीकरणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए ठामि काउस्सग्गं ।।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं,

जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलीए पित्तमुच्छाए ।।1।। सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं ।।2।। एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो।।3।। जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ।।4।। ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि ।।5।।

(यहां पर तप-चिंतवणी का काउस्सग्ग करे, न आता हो तो सोलह नवकार गिने, काउस्सग्ग पारकर लोगस्स बोले ।)

तप चिंतवणी-कायोत्सर्ग

(प्रभु महावीर प्रभु के शासन में उत्कृष्ट से छ महिने का तप और जघन्य से नवकारसी तप करने का विधान है ।

इस कायोत्सर्ग में लोगस्स या नवकार का चिंतन न करते हुए आज जो तप करना हैं, उसके संदर्भ में चिंतन करना होता है ।

जो तप जीवन में पहले किया हो उसके लिए **'शक्ति है'** ऐसा माना जाता है, और जो तप करना हो, उसके लिए **भावना है** । ऐसा कहा जाता है ।

जिस तप की शक्ति और भावना दोनों हो, वहां रुककर कायोत्सर्ग पूर्ण किया जाता है ।)

उदा. पहले अट्ठम किया हो और आज नवकारसी करनी हो तो इस प्रकार चिंतन करे ।

भगवान महावीर ने छ मास का तप किया, मेरी शक्ति नहीं और भावना नहीं ।

पांच महिने उन्तीस दिन–शक्ति नहीं, भावना नहीं ।
पांच महिने अट्ठाईस दिन–शक्ति नहीं, भावना नहीं ।
पांच महिने सत्ताइस दिन–शक्ति नहीं, भावना नहीं ।
पांच महिने छब्बीस दिन–शक्ति नहीं, भावना नहीं ।
पांच महिने पच्चीस दिन–शक्ति नहीं, भावना नहीं ।

पांच महिने चौबीस दिन–शक्ति नहीं, भावना नहीं ।
पांच महिने तेईस दिन–शक्ति नहीं, भावना नहीं ।
पांच महिने बाईस दिन–शक्ति नहीं, भावना नहीं ।
पांच महिने इक्कीस दिन–शक्ति नहीं, भावना नहीं ।
पांच महिने बीस दिन–शक्ति नहीं, भावना नहीं ।
पांच महिने उन्नीस दिन–शक्ति नहीं, भावना नहीं ।
पांच महिने अठारह दिन–शक्ति नहीं, भावना नहीं ।
पांच महिने सत्रह दिन–शक्ति नहीं, भावना नहीं ।
पांच महिने सोलह दिन–शक्ति नहीं, भावना नहीं ।
पांच महिने पंद्रह दिन–शक्ति नहीं, भावना नहीं ।
पांच महिने चौदह दिन–शक्ति नहीं, भावना नहीं ।
पांच महिने तेरह दिन–शक्ति नहीं, भावना नहीं ।
पांच महिने बारह दिन–शक्ति नहीं, भावना नहीं ।
पांच महिने ग्यारह दिन–शक्ति नहीं, भावना नहीं ।
पांच महिने दस दिन–शक्ति नहीं, भावना नहीं ।
पांच महिने नौ दिन–शक्ति नहीं, भावना नहीं ।
पांच महिने आठ दिन–शक्ति नहीं, भावना नहीं ।
पांच महिने सात दिन–शक्ति नहीं, भावना नहीं ।
पांच महिने छह दिन–शक्ति नहीं, भावना नहीं ।
पांच महिने पांच दिन–शक्ति नहीं, भावना नहीं ।
पांच महिने चार दिन–शक्ति नहीं, भावना नहीं ।
पांच महिने तीन दिन–शक्ति नहीं, भावना नहीं ।
पांच महिने दो दिन–शक्ति नहीं, भावना नहीं ।
पांच महिने एक दिन–शक्ति नहीं, भावना नहीं ।
पांच महिने शक्ति नहीं, भावना नहीं ।
चार महिने शक्ति नहीं, भावना नहीं ।

तीन महिने शक्ति नहीं, भावना नहीं ।
दो महिने शक्ति नहीं, भावना नहीं ।
एक महिना शक्ति नहीं, भावना नहीं ।
उन्तीस दिन शक्ति नहीं, भावना नहीं ।
अट्ठाईस दिन शक्ति नहीं, भावना नहीं ।
सत्ताइस दिन शक्ति नहीं, भावना नहीं ।
छब्बीस दिन शक्ति नहीं, भावना नहीं ।
पच्चीस दिन शक्ति नहीं, भावना नहीं ।
चौबीस दिन शक्ति नहीं, भावना नहीं ।
तेईस दिन शक्ति नहीं, भावना नहीं ।
बाईस दिन शक्ति नहीं, भावना नहीं ।
इक्कीस दिन शक्ति नहीं, भावना नहीं ।
बीस दिन शक्ति नहीं, भावना नहीं ।
उन्नीस दिन शक्ति नहीं, भावना नहीं ।
अठारह दिन शक्ति नहीं, भावना नहीं ।
सत्रह दिन शक्ति नहीं, भावना नहीं ।
चौतीस भक्त शक्ति नहीं, भावना नहीं ।
बत्तीस भक्त शक्ति नहीं, भावना नहीं ।
तीस भक्त शक्ति नहीं, भावना नहीं ।
अट्ठाईस भक्त शक्ति नहीं, भावना नहीं ।
छब्बीस भक्त शक्ति नहीं, भावना नहीं ।
चौबीस भक्त शक्ति नहीं, भावना नहीं ।
बाईस भक्त शक्ति नहीं, भावना नहीं ।
बीस भक्त शक्ति नहीं, भावना नहीं ।
अठारह भक्त शक्ति नहीं, भावना नहीं ।
सोलह भक्त शक्ति नहीं, भावना नहीं ।

चौदह भक्त शक्ति नहीं, भावना नहीं ।
बारह भक्त शक्ति नहीं, भावना नहीं ।
दस भक्त शक्ति नहीं, भावना नहीं ।
आठ भक्त शक्ति है, भावना नहीं ।
छह भक्त शक्ति है, भावना नहीं ।
चार भक्त शक्ति है, भावना नहीं ।
उपवास शक्ति है, भावना नहीं ।
आयंबील शक्ति है, भावना नहीं ।
निवी शक्ति है, भावना नहीं ।
एकासना शक्ति है, भावना नहीं ।
बियासना शक्ति है, भावना नहीं ।
पुरिमड्ढ शक्ति है, भावना नहीं ।
साढ-पोरिसी शक्ति है, भावना नहीं ।
पोरिसी शक्ति है, भावना नहीं ।
नवकारशी शक्ति है, भावना है । (फिर काउसग्ग पार कर)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे ।
अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ।।1।।
उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च ।
पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ।।2।।
सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस वासुपुज्जं च ।
विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ।।3।।
कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च ।
वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ।।4।।
एवं मए अभिथुआ, विहुय रयमला पहीणजरमरणा ।
चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ।।5।।
कित्तिय वंदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा ।
आरूग्ग बोहिलाभं, समाहि-वरमुत्तमं दिंतु ।।6।।

चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा ।
सागर वरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ।।7।।

(फिर छट्ठे आवश्यक की मुहपत्ति पडिलेहन करे । उसके बाद वांदणा दे ।)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए ।।1।। अणुजाणह मे मिउग्गहं ।।2।। निसीहि, अहो का-यं संफासं खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे राइ वइक्कंता ! ।।3।। जत्तो भे ? ।।4।। ज-व-णि ज्जं च भे ? ।।5।। खामेमि खमासमणो राइअं वइक्कम्मं ।।6।। आवस्सिआए पडिक्कमामि, खमासमणाणं राइआए आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्व-कालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइयारो कओ, तस्स खमासमणो ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ।।7।।

इच्छामि खमासमणो । वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए ।।1।। अणुजाणह मे मिउग्गहं ।।2।। निसीहि अ-हो का-यं का-य संफासं खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे राइअ वइक्कंता।।3।। जत्ता भे ? ।।4।। ज-व-णिज्जं च भे ।।5।। खामेमि खमासमणो राइअं वइक्कम्मं ।।6।। पडिक्कमामि खमासमणाणं राइआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए जं किंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए जो मे अइयारो कओ, तस्स खमासमणो पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि।।7।।

(हाथ जोडकर चैत्यवंदन मुद्रा में बैठकर सकल तीर्थ बोले)

सकल तीर्थ वंदुं कर जोड, जिनवर नामे मंगल कोड ।
पहले स्वर्गे लाख बत्रीश, जिनवर चैत्य नमुं निश दिश ।।1।।

बीजे लाख अड्ठावीस कह्यां, त्रीजे बार लाख सद्दह्यां ।
चोथे स्वर्गे अडलख धार, पांचमे वंदुं लाख ज चार ।।2।।
छट्ठे स्वर्गे सहस पचास, सातमे चालीस सहस प्रासाद ।
आठमे स्वर्गे छ हजार, नव दशमें वंदुं शत चार ।।3।।
अग्यार बारमे त्रणसे सार, नव ग्रेवेयके त्रणसे अढार ।
पांच अनुत्तर सर्वे मली, लाख चोरासी अधिका वली ।।4।।
सहस सत्ताणुं त्रेवीस सार, जिनवर भवनतणो अधिकार ।
लांबां सो जोजन विस्तार, पचास ऊंचा बहोंतेर धार ।।5।।
एकसो एंसी बिंब प्रमाण, सभासहित एक चैत्ये जाण ।
सो क्रोड बावन क्रोड संभाल, लाख चोराणुं सहस चौंआल।।6।।
सातसे ऊपर साठ विशाल, सवि बिंब प्रणमुं त्रण काल ।
सात क्रोड ने बहोंतेर लाख, भवनपतिमां देवल भाख ।।7।।
एकसो एंसी बिंब प्रमाण, एक एक चैत्ये संख्या जाण ।
तेरसे क्रोड नेव्यासी क्रोड, साठ लाख वंदुं कर जोड़ ।।8।।
बत्रीसे ने ओगणसाठ, तिर्छालोकमां चैत्यनो पाठ ।
त्रण लाख एकाणुं हजार, त्रणशें विंश ते बिंब जुहार ।।9।।
व्यंतर ज्योतिषिमां वली जेह, शाश्वता जिन वंदुं तेह ।
ऋषभ चंद्रानन वारिषेण, वर्द्धमान नामे गुणसेण ।।10।।
समेतशिखर वंदुं जिन वीश, अष्टापद वंदुं चोवीश ।
विमलाचल ने गढ गिरनार, आबु उपर जिनवर जुहार ।।11।।
शंखेश्वर केसरिओ सार, तारंगे श्री अजित जुहार ।
अंतरिक्त वरकाणो पास, जीरावलो ने थंभण पास ।।12।।
गाम नगर पुर पाटण जेह, जिनवर चैत्य नमुं गुण गेह ।
विहरमान वंदुं जिन वीश, सिद्ध अनंत नमु निश दिश ।।13।।
अढी द्वीपमां जे अणगार, अढार सहस शीलांगना धार ।
पंचमहाव्रत समिति सार, पाले पलावे पंचाचार ।।14।।

बाह्य अभ्यंतर तप उजमाल, ते मुनि वंदुं गुण मणिमाल ।
नित नित उठी कीर्ति करूं, जीव कहे भवसायर तरूं ।।15।।
(फिर जो पच्चक्खाण करना हो, वह यहां पर ले लेवे ।)

1. नमुक्कार-सहिअं-मुट्ठिसहिअं का पच्चक्खाण

उग्गए सूरे नमुक्कारसहिअं मुट्ठिसहिअं पच्चक्खाइ (पच्चक्खामि) । चउव्विहंपि आहारं असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ (वोसिरामि) ।

2. पोरिसि-साड्ढपोरिसि का पच्चक्खाण

उग्गए सूरे नमुक्कारसहिअं पोरिसिं साढपोरिसिं मुट्ठिसहिअं पच्चक्खाइ (पच्चक्खामि) उग्गए सूरे चउव्विहंपि आहारं असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं पच्छन्नकालेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ (वोसिरामि) ।

3. एकासणा-बिआसणा का पच्चक्खाण ।।

उग्गए सूरे नमुक्कारसहिअं, पोरिसिं, साढ-पोरिसिं, मुट्ठिसहिअं पच्चक्खाइ (पच्चक्खामि) उग्गए सूरे चउव्विहंपि आहारं असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पच्छन्नकालेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहि-वत्तिआगारेणं, विगइओ पच्चक्खाइ (पच्चक्खामि) अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, लेवालेवेणं, गिहत्थसंसट्ठेणं उक्खित्तविवेगेणं पडुच्चमक्खिएणं, पारिट्ठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, बिआसणं पच्चक्खाइ (पच्चक्खामि) (एकासणा करना हो तो **एकासणं पच्चक्खाइ**) **तिविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेणं,**

सहसागारेणं, सागारिआगारेणं, आउंटणपसारेणं, गुरुअब्भुट्टाणेणं, पारिट्ठावणिया-गारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, पाणस्स लेवेण वा, अलेवेण वा, अच्छेण वा, बहुलेवेण वा, ससित्थेण वा, असित्थेण वा वोसिरइ. (वोसिरामि)

4. आयंबिल का पच्चक्खाण

उग्गए सूरे, नमुक्कारसहिअं, पोरिसिं साड्ढपोरिसिं मुट्ठिसहिअं पच्चक्खाइ (पच्चक्खामि). उग्गए सूरे चउव्विहंपि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पच्छन्नकालेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं आयंबिलं पच्चक्खाइ (पच्चक्खामि) अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, लेवालेवेण, गिहत्थसंसट्ठेणं, उक्खित्तविवेगेण, पडुच्चमक्खिएणं पारिट्ठावणियागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं एकासणं पच्चक्खाइ (पच्चक्खामि) तिविहंपि आहारं, असणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं, सागारिआगारेणं, आउंटणपसारेणं, गुरुअब्भुट्ठाणेणं, पारिट्ठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्ति-यागारेणं, पाणस्स लेवेण वा, अलेवेण वा, अच्छेण वा, बहुलेवेण वा, ससित्थेण वा, असित्थेण वा, वोसिरइ (वोसिरामि)

5. तिविहार उपवास का पच्चक्खाण

सूरे उग्गए अब्भत्तट्ठं पच्चक्खाइ (पच्चक्खामि) तिविहंपि आहारं असणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पारिट्ठावणि-यागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं ।। पाणहार पोरिसिं, साड्ढपोरिसिं, पुरिमुड्ढ, मुट्ठिसहिअं पच्चक्खाइ, (पच्चक्खामि) अन्नत्थ-णाभोगेणं, सहसागारेणं, पच्छन्नकालेणं दिसामोहेणं, साहुवयणेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं । पाणस्स लेवेण वा, अलेवेण वा, अच्छेण वा, बहुलेवेण वा, ससित्थेण वा, असित्थेण वा, वोसिरइ ।। (वोसिरामि)

6. चउविहार उपवास का पच्चक्खाण

सूरे उग्गए अब्भत्तट्ठं पच्चक्खाइ, (पच्चक्खामि) चउव्विहंपि आहारं असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं पारिट्ठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ.

Note : 1) जो पच्चक्खाण स्वयं को लेना हो तो **वोसिरामि** बोले ।

2) छट्ठ (दो उपवास करना हो तो छट्ठ अब्भत्तट्ठं तथा अट्ठम करना हो तो **'अट्ठम अब्भत्तट्ठं'** बोले । फिर–

सामायिक, चउव्विसत्थो, वंदन, पडिक्कमण, काउस्सग्ग, पच्चक्खाण किया है जी (यदि पच्चक्खाण न लिया हो और धारा हो तो, धारा है, ऐसा बोले ।)

इच्छामो अणुसट्ठिं नमो खमासमणाणं ऐसा बोल कर सिर्फ पुरुष **नमोऽर्हत् सिद्धाचार्यो-पाध्याय सर्वसाधुभ्यः** फिर **विशाल लोचन** बोले–

विशाललोचनदलं, प्रोद्यद्दंतांशुकेसरं,
प्रातर्वीरजिनेन्द्रस्य, मुखपद्मं पुनातु वः ।।1।।
येषामभिषेककर्म कृत्वा, मत्ता हर्षभरात् सुखं सुरेन्द्राः ।
तृणमपि गणयन्ति नैव नाकं, प्रातः सन्तु शिवाय ते जिनेन्द्राः।।2।।
कलंकनिर्मुक्तममुक्तपूर्णतं, कुतर्कराहुग्रसनं सदोदयं ।
अपूर्वचन्द्रं-जिनचन्द्रभाषितं, दिनागमे नौमि बुधैर्नमस्कृतं ।।3।।

(यदि स्त्रियां प्रतिक्रमण करती हो, तो यहां पर विशाल लोचन के बदले **'संसारदावानल'** बोले)

संसारदावानलदाहनीरं संमोहधूलि-हरणे समीरं ।
माया-रसादारण सारसीरं, नमामि वीरं गिरिसार-धीरं ।।1।।
भावावनाम-सुर-दानव-मानवेन,
चूलाविलोल-कमलावलि-मालितानि ।

संपूरिताभिनत-लोकसमीहितानि,
कामं नमामि जिनराज-पदानि तानि।।2।।
बोधागाधं सुपद-पदवी-नीरपुराभिरामं,
जीवाहिंसाविरल-लहरी संगमा-गाहदेहं ।
चूलावेलं गुरूगममणि-संकुलं दूरपारं,
सारं वीरागम-जलनिंधिं सादर साधु सेवे ।।3।।

(बाद में नमुत्थुणं बोले)

नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं ।।1।। आइगराणं तित्थयराणं, सयंसंबुद्धाणं ।।2।। पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवर पुंडरीआणं, पुरिसवर-गंध-हत्थीणं ।।3।। लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआणं, लोगपईवाणं, लोगपज्जोअगराणं ।।4।। अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं, बोहिदयाणं ।।5।। धम्मदयाणं, धम्मदेसयाणं, धम्म-नायगाणं, धम्म-सारहीणं, धम्मवर-चाउरंत चक्कवट्टीणं ।।6।। अप्पडिहयवर-नाण-दंसणधराणं, विअट्ट-छउमाणं ।।7।। जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं ।।8।। सव्वन्नूणं, सव्वदरिसीणं सिव-मयल-मरूअ-मणंत-मक्खय-मव्वाबाह-मपुणरावित्ति सिद्धिगइ-नामधेयं ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं जिअभयाणं ।।9।। जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संति णागएकाले, संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ।।10।।

अरिहंतचेइआणं करेमि काउस्सग्गं वंदणवत्तिआए पूअणवत्तिआए सक्कार-वत्तिआए सम्माण-वत्तिआए, बोहिलाभ-वत्तिआए, निरूवसग्ग-वत्तिआए, सद्धाए मेहाए धिइए धारणाए अणुप्पेहाए वड्ढमाणिए ठामि काउस्सग्गं.

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए पित्तमुच्छाए ।।1।। सुहुमेहिं अंगसंचलेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं ।।2।। एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ, हुज्ज मे

काउस्सग्गो ।।3।। जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ।।4।। ताव काय ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ।।5।।

(एक नवकार का काउस्सग्ग पारकर **(नमोऽर्हत्-सिद्धा-चार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः)** बोलकर स्तुति बोले.)

कल्लाणकंदं पढमं जिणिंदं, संतिं तओ नेमिजिणं मुणीदं ।
पासं पयासं सुगुणिक्कठाणं, भत्तीइ वंदे सिरि वद्धमाणं ।।1।।

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे ।
अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ।।1।।
उसभ-मजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च ।
पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ।।2।।
सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस-वासुपुज्जं च ।
विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ।।3।।
कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च ।
वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ।।4।।
एवं मए अभिथुआ, विहुअ-रयमला पहीणजरमरणा ।
चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ।।5।।
कित्तिय-वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा ।
आरूग्गबोहिलाभं, समाहि-वर-मुत्तमं दिंतु ।।6।।
चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा ।
सागर-वर-गंभीरा, सिद्धा-सिद्धिं मम दिसंतु ।।7।।

सव्वलोए अरिहंत-चेइआणं, करेमि काउस्सग्गं वंदणवत्तिआए, पूअण-वत्तिआए, सक्कार-वत्तिआए, सम्माण-वत्तिआए, बोहिलाभवत्तिआए, निरूवसग्गवत्तिआए, सद्धाए, मेहाए, धिइए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए, ठामि काउस्सग्गं ।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएण, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए ।।1।। सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं ।।2।।

एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो।।3।। जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेण न पारेमि ।।4।। ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणंअप्पाणं वोसिरामि ।।5।।

(एक नवकार का काउस्सग्ग कर **'नमो अरिहंताणं'** बोल कर स्तुति बोले ।)

अपार-संसार-समुद्दपारं, पत्ता सिवं दिंतु सुझक्कसारं ।
सव्वे जिणिंदा सुरविंदवंदा, कल्लाण-वल्लीण-विसालकंदा ।।2।।

पुक्खर-वर-दीवड्ढे, धायइ-संडे अ जंबुदीवे अ ।
भरहेरवय-विदेहे, धम्माइगरे नमंसामि ।।1।।
तम-तिमिर-पडल-विद्धंसणस्स, सुरगण-नरिंद-महिअस्स ।
सीमाधरस्स वंदे, पप्फोडिअ-मोह-जालस्स ।।2।।
जाइ-जरा-मरण-सोग-पणासणस्स,
कल्लाण-पुक्खलविसाल-सुहावहस्स ।।
को देव-दाणवनरिंद-गणच्चिअस्स,
धम्मस्स सार-मुवलब्भ करे पमायं ।।3।।
सिद्धे भो पयओ णमो जिणमए नंदी सया संजमे,
देवं नागसुवन्न-किन्नर-गणस्सब्भुअभावच्चिए ।
लोगो जत्थ पइट्ठिओ जगमिणं तेलुक्क-मच्चासुरं ।।
धम्मो वड्ढउ सासओ विजयओ धम्मुत्तरं वड्ढउ ।।4।।

सुअस्स भगवओ करेमि काउस्सग्गं ।। वंदण-वत्तिआए, पूअण-वत्तिआए, सक्कार-वत्तिआए, सम्माण-वत्तिआए, बोहिलाभवत्तिआए, निरूवसग्ग-वत्तिआए, सद्धाए मेहाण धिइए धारणाए अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं ।

अन्नत्था ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए पित्तमुच्छाए ।।1।। सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं ।।2।। एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो ।।3।।

जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेण न पारेमि ।।4।। ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ।।5।।

(फिर एक नवकार का काउस्सग्ग पारकर स्तुति बोले)

निव्वाणमग्गे वरजाणकप्पं, पणासियासेस कुवाइदप्पं ।
मयं जिणाणं सरणं बुहाणं, नमामि निच्चं तिजगप्पहाणं ।।3।।

सिद्धाणं बुद्धाणं, पारगयाणं परंपरगयाणं ।
लोअग्ग-मुवगयाणं, नमो सया सव्वसिद्धाणं ।।1।।
जो देवाण वि देवो, जं देवा पंजली नमंसंति ।
तं देवदेव-महिअं, सिरसा वंदे महावीरं ।।2।।
इक्कोवि नमुक्कारो, जिणवर वसहस्स वद्धमाणस्स ।
संसार-सागराओ, तारेइ नरं व नारिं वा ।।3।।
उज्जिंतसेल-सिहरे, दिक्खा नाणं निसीहिआ जस्स ।
तं धम्मचक्कवट्टिं, अरिट्ठनेमिं नमंसामि ।।4।।
चत्तारि अट्ठ दस दोय, वंदिया जिणवरा चउव्वीसं ।
परमट्ठनिट्ठि-अट्ठा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ।।5।।

वेयावच्चगराणं संतिगराणं सम्मद्दिट्ठिसमाहिगराणं करेमि काउस्सग्गं ।।1।।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए पित्तमुच्छाए।।1।। सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं ।।2।। एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो।।3।। जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ।।4।। ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ।।5।। (एक नवकार का काउस्सग्ग पार कर **'नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधुभ्यः'** बोलकर स्तुति बोले)

कुंदिंदु-गोक्खीर-तुसार-वन्ना, सरोज-हत्था कमले निसन्ना ।
वाएसिरी पुत्थय-वग्गहत्था, सुहाय सा अम्ह सया पसत्था ।।4।।

(फिर बाया घुटना ऊंचा कर)

नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं ।।1।। आइगराणं तित्थयराणं, सयंसंबुद्धाणं ।।2।। पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवरपुंडरीआणं, पुरिसवरगंध-हत्थीणं ।।3।। लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआणं, लोगपईवाणं, लोगपज्जोअगराणं ।।4।। अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं, बोहिदयाणं ।।5।। धम्मदयाणं, धम्मदेसयाणं धम्मनायगाणं, धम्मसारहीणं, धम्मवरचाउरंत चक्कवट्टीणं ।।6।। अप्पडिहय-वरनाण-दंसण-धराणं-विअट्ट-छउमाणं ।।7।। जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं ।।8।। सव्वन्नूणं, सव्वदरिसीणं, सिव-मयल-मरुअ-मणंत-मक्खय-मव्वाबाह-मपुणरावित्ति-सिद्धिगइ-नामधेयं ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं जिअभयाणं ।।9।।

जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले;
संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ।।10।।

(यहां पर चार बार एक एक खमासमण देकर हरेक के अन्त में निम्नानुसार **भगवानहं** आदि बोले)

भगवानहं, आचार्यहं, उपाध्यायहं, सर्वसाधुहं.

(फिर दाया हाथ चरवले पर रखकर बाया हाथ मुंह के आगे रखकर **''अड्ढाइज्जेसु''** बोले)

अड्ढाइज्जेसु दीव-समुद्देसु, पन्नरससु कम्मभूमिसु, जावंत के वि साहू रयहरणगुच्छपडिग्गहधारा पंचमहव्वयधारा अट्ठारस-सहस्ससीलंगधारा अक्खुयायारचरित्ता, ते सव्वे सिरसा मणसा मत्थएण वंदामि ।।1।।

(एक-एक दोहा बोलकर एक-एक खमासमण दे)

श्री सीमंधर स्वामी के दोहे

अनंत चोवीशी जिन नमुं; सिद्ध अनंती कोड ।
केवलधर मुगते गया, वंदुं बे कर जोड ।।1।।
बे कोडी केवलधरा, विहरमान जिन वीश ।
सहस कोडी युगल नमुं, साधु नमुं निश दिश. ।।2।।
जे चारित्रे निर्मला, जे पंचानन सिंह ।
विषय कषाय ने गंजीया, ते प्रणमुं निशदिश ।।3।।
रांक तणीपरे रडवड्यो, निरधणीयो निरधार ।
श्री सीमंधर साहिबा, तुम विण इण संसार ।।4।।

(फिर एक खमासमण देकर बाया घुटना ऊंचा करके **'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् श्री सीमंधरस्वामी आराधनार्थं चैत्यवंदन करुं'** ``इच्छं'' बोल कर चैत्यवंदन करे)

श्री सीमंधर स्वामी का चैत्यवंदन

श्री सीमंधर वीतराग, त्रिभुवन तुमे उपगारी ।
श्री श्रेयांस पिता कुले, बहु शोभा तुमारी ।।1।।
धन्य धन्य माता सत्यकी, जेणे जायो जयकारी ।
वृषभलंछने विराजमान, वंदे नरनारी ।।2।।
धनुष पांचशे देहडीए, सोहिये सोवन वान ।
कीर्तिविजय उवज्झायनो, विनय धरे तुम ध्यान ।।3।।
जं किंचि नाम तित्थं, सग्गे पायालि माणुसे लोए;
जाइं जिण बिबाइं, ताइं सव्वाइं वंदामि ।।1।।

नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं ।।1।। आइगराणं तित्थयराणं, सयंसंबुद्धाणं ।।2।। पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिस-वर-पुंडरीआणं, पुरिसवर-गंध-हत्थीणं ।।3।। लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआणं, लोगपईवाणं, लोगपज्जोअगराणं ।।4।। अभयदयाणं,

चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं, बोहिदयाणं ।।5।। धम्मदयाणं, धम्मदेसयाणं धम्म-नायगाणं, धम्म-सारहीणं, धम्मवर-चाउरंत-चक्कवट्टीणं ।।6।। अप्पडिहय-वरनाण-दंसणधराणं, विअट्टछ-उमाणं ।।7।। जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं ।।8।। सव्वन्नूणं, सव्वदरिसीणं, सिव-मयल मरुअ मणंत मक्खय-मव्वाबाह-मपुणरावित्ति-सिद्धिगइनामधेयं ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं जिअभयाणं ।।9।।

जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले;
संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ।।10।।

(दोनों हाथ मस्तक पर लगा कर)

जावंति चेइआइं, उड्ढे अ अहे अ तिरिअलोए अ ।
सव्वाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइं ।।1।।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । (दोनों हाथ मस्तक पर लगा कर)

जावंत केवि साहू, भरहेरवय महाविदेहे अ ।
सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंड विरयाणं ।।1।।

नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः (बोलकर स्तवन बोले)

श्री सीमंधर स्वामी का स्तवन

पुक्खलवई विजये जयो रे, नयरी पुंडरीगिणी सार ।
श्री सीमंधर साहिबा रे, राय श्रेयांस कुमार ।।
जिणंदराय धरजो धर्म सनेह ।।1।।
म्होटा न्हाना अंतरो रे, गिरुआ नवि दाखंत ।
शशि दरिसण सायर वधे रे, कैरव वन विकसंत । जि.ध.।।2।।
ठाम कुठाम नवि लेखवे रे, जग वरसंत जलधार ।
कर दोय कुसुमे वासिये रे, छाया सवि आधार । जि.ध.. ।।3।।
राय ने रंक सरिखा गणे रे, उद्योते शशि सूर ।
गंगाजल ते बिहुं तणा रे, ताप हरे सवि दूर । जि.ध.. ।।4।।

सरिखा सहुने तारवा रे, तिम तुमे छो महाराज ।
मुजशुं अंतर किम करोरे, बाह्य ग्रह्यानी लाज । जि.ध.. ।।5।।
मुख देखी टीलुं करे रे, ते नवि होय प्रमाण ।
मुजरो माने सवि तणो रे, साहिब तेह सुजाण । जि.ध.. ।।6।।
वृषभलंछन माता सत्यकी रे, नंदन रुक्मिणी कंत ।
वाचक जस एम विनवे रे, भयभंजन भगवंत । जि.ध.. ।।7।।

(फिर दोनों हाथ मस्तक पर लगाकर बोले)

जय वीयराय ! जगगुरू, होउ ममं तुह पभावओ भयवं ।
भवनिव्वेओ मग्गाणुसारिआ इट्ठफलसिद्धी ।।1।।
लोगविरूद्धच्चाओ, गुरूजणपूआ परत्थकरणं च ।
सुहगुरूजोगो तव्वयणसेवणा आभवमखंडा ।।2।।
वारिज्जइ जइवि निआण बंधणं वीयराय ! तुम समए ।
तह वि मम हुज्ज सेवा, भवे भवे तुम्ह चलणाणं ।।3।।
दुक्खक्खओ कम्मक्खओ, समाहिमरणं च बोहिलाभो अ ।
संपज्जउ मह एअं, तुह नाह ! पणाम-करणेणं ।।4।।
सर्व मंगल-मांगल्यं, सर्व-कल्याणकारणं ।
प्रधानं सर्व-धर्माणां, जैनं जयति शासनम् ।।5।। (फिर खडे होकर)

अरिहंतचेइआणं करेमि काउस्सग्गं ।।1।। वंदणवत्तिआए, पूअणवत्तिआए सक्कारवत्तिआए सम्माणवत्तिआए बोहिलाभवत्तिआए निरूवसग्गवत्तिआए ।।2।। सद्धाए मेहाए धिइए धारणाए अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं ।।3।।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए पित्तमुच्छाए ।।1।। सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेल संचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठि संचालेहिं ।।2।। एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो ।।3।। जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ।।4।। ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ।।5।।

(एक नवकार का काउस्सग्ग पार कर **''नमोऽर्हत्-सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधुभ्यः''** बोलकर स्तुति बोले.)

श्री सीमंधर स्वामी की स्तुति

सीमंधर जिनवर, सुखकर साहिब देव,
अरिहंत सकलनी, भाव धरी करूं सेव ।
सकलागम पारग, गणधरभाषित वाणी,
जयवंती आणा, ज्ञानविमल गुणखाणी ।।1।।

श्री सिद्धाचलजी के दोहे

(एक-एक दोहा बोलकर एक-एक खमासमण दे)

सिद्धाचल समरूं सदा, सोरठ देश मोझार ।
मनुष्य जन्म पामी करी, वंदुं वार हजार ।।1।।
एकेकुं डगलुं भरे, शेत्रुंजा सामुं जेह ।
रिषभ कहे भवकोडनां, कर्म खपावे तेह ।।2।।
सिद्धाचल सिद्धि वर्या, सिद्ध अनंती कोड ।
आगे अनंता सिद्धशे, पूजो भवि भगवंत ।।3।।
शेत्रुंजा समो तीरथ नहीं, ऋषभ समो नहि देव ।
गौतम सरिखा गुरू नहि, वली वली वंदुं तेह ।।4।।
सोरठ देशमां संचर्यो, न चड्यों गढ गिरनार ।
शत्रुंजी नदी नाह्यो नहीं, एले गयो अवतार ।।5।।

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि. (फिर बाया घुटना ऊंचा करके)

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् श्री सिद्धाचल तीर्थ आराधनार्थं चैत्यवंदन करुं ''इच्छं'' ।।

श्री सिद्धाचलजी का चैत्यवंदन

श्री शत्रुंजय सिद्ध क्षेत्र, दीठे दुर्गति वारे ।
भाव धरीने जे चढे, तेने भवपार उतारे ।।1।।
अनंत सिद्धनो एह ठाम, सकल तीरथनो राय ।
पूर्व नव्वाणुं ऋषभदेव, ज्यां ठविया प्रभु पाय ।।2।।
सूरज कुण्ड सोहामणो, कवड जक्ष अभिराम ।
नाभिराय कुलमंडणो, जिनवर करूं प्रणाम ।।3।।
जं किंचि नामतित्थं, सग्गे पायालि माणुस्से लोए ।
जाइं जिणबिंबाइं, ताइं सव्वाइं वंदामि ।।1।।

नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं ।।1।। आइगराणं तित्थयराणं, सयंसंबुद्धाणं ।।2।। पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवर-पुंडरीआणं, पुरिसवरगंधत्थीणं ।।3।। लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआणं, लोगपईवाणं, लोगपज्जोअगराणं ।।4।। अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं बोहिदयाणं ।।5।। धम्मदयाणं, धम्मदेसयाणं, धम्मनायगाणं, धम्मसारहीणं, धम्मवर-चाउरंत-चक्कवट्टीणं ।।6।। अप्पडिहयवरनाण-दंसणधराणं, वियट्टछउमाणं ।।7।। जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं ।।8।। सव्वन्नूणं, सव्वदरिसीणं, सिव-मयल-मरुअ-मणंत-मक्खय-मव्वाबाह-मपुणरावित्ति सिद्धिगइ-नामधेयं ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं जिअभयाणं ।।9।।

जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले;
संपइअ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ।।10।।

(दोनों हाथ मस्तक पर लगा कर)

जावंति चेइआइं, उड्ढे अ अहे अ तिरिय-लोए अ ।
सव्वाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइं ।।1।।

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ।

जावंत केवि साहू, भरहेरवय महाविदेहे अ ।
सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंड विरयाणं ।।1।।
नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ।
(ऐसा बोलकर स्तवन बोले)

श्री सिद्धाचलजी का स्तवन

विमलाचल नितु वंदिये, कीजे एहनी सेवा ।
मानुं हाथ ए धर्मनो, शिवतरू फल लेवा । विमल..।।1।।
उज्ज्वल जिनगृह मंडली, तिहां दीपे उत्तंगा ।
मानु हिमगिरि विभ्रमें, आइ अंबर गंगा । विमल..।।2।।
कोई अनेरूं जग नहि, ए तीरथ तोले ।
एम श्रीमुख हरि आगले, श्री सीमंधर बोले । विमल..।।3।।
जे सघलां तीरथ कह्यां, यात्रा फल कहिए ।
तेहथी ए गिरि भेटतां, शतगणुं फल लहिए । विमल..।।4।।
जन्म सफल होय तेहनो, जे ए गिरि वंदे ।
सुजशविजय संपद लहे, ते नर चिर वंदे । विमल..।।5।।
(फिर दोनों हाथ मस्तक पर लगाकर बोले)
जय वीयराय ! जगगुरू, होउ ममं तुह पभावओ ।
भयवं ! भवनिव्वेओ मग्गाणुसारिया इट्ठफल-सिद्धि ।।1।।
लोगविरूद्धच्चाओ, गुरूजणपूआ-परत्थकरणं च ।
सुहगुरूजोगो तव्वयण-सेवणा आभवमखंडा ।।2।।
वारिज्जइ जइवि निआण, बंधणं वीयराय ! तुह समए !
तह वि मम हुज्ज सेवा, भवे भवे तुम्ह चलणाणं ।।3।।
दुक्खक्खओ कम्मक्खओ, समाहिमरणं च बोहिलाभो अ ।
संपज्जउ महएअं, तुह नाह ! पणाम करणेणं ।।4।।
सर्व मंगल-मांगल्यं, सर्व-कल्याण-कारणं ।
प्रधानं सर्व-धर्माणां, जैनं जयति शासनम् ।।5।। (खडे होकर)
अरिहंत-चेइआणं, करेमि काउस्सग्गं ।।1।। वंदण-वत्तिआए,

पूअण-वत्तिआए, सक्कार-वत्तिआए, सम्माण-वत्तिआए ।।2।। बोहिलाभ-वत्तिआए, निरूवसग्ग-वत्तिआए, सद्धाए, मेहाए, धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए, ठामि काउस्सग्गं ।।3।।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए पित्तमुच्छाए।।1।।सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं ।।2।। एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो ।।3।। जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ।।4।। ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ।।5।।

(एक नवकार का काउस्सग्ग पारकर **नमोऽर्हत्-सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधुभ्यः** बोल कर स्तुति बोले)

श्री सिद्धाचलजी की स्तुति

पुंडरीकगिरि महिमा आगममां प्रसिद्ध,
विमलाचल भेटी लहिए अविचल रिद्ध ।
पंचमी गति पहोंता, मुनिवर कोडाकोड,
इणे तीरथ आवी, कर्म विपाक विछोड ।।1।।

खमासमण देकर, हाथ नीचे करके ``अविधि आशातना मिच्छा-मि-दुक्कडम्'' कहे ।

सामायिक पारने की विधि

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ।।1।।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! इरियावहियं पडिक्कमामि ? इच्छं, इच्छामि पडिक्कमिउं ।।1।। इरियावहियाए, विराहणाए ।।2।। गमणागमणे ।।3।। पाणक्कमणे, बीयक्कमणे, हरियक्कमणे, ओसा उत्तिंग-पणग-दग-मट्टी-मक्कडा-संताणा-संकमणे ।।4।। जे मे जीवा विराहिया ।।5।। एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया,

पंचिंदिया ।।6।। अभिहया, वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परियाविया, किलामिया, उद्दविया, ठाणाओ ठाणं, संकामिया, जीवियाओ ववरोविया, तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।।7।।

तस्स उत्तरी-करणेणं, पायच्छित्त-करणेणं, विसोही-करणेणं, विसल्लीकरणेणं, पावाणं कम्माणं, निग्घायणट्ठाए, ठामि काउस्सग्गं ।।8।।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए पित्तमुच्छाए ।।1।। सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं।।2।। एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो ।।3।। जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ।।4।। ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ।।5।।

(फिर एक लोगस्स का, लोगस्स नहीं आता हो तो चार नवकार का काउस्सग्ग करे, काउस्सग्ग पार कर लोगस्स बोले.)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्म-तित्थयरे जिणे ।
अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ।।1।।
उसभ-मजिअं च वंदे, संभव मभिणंदणं च सुमइं च ।
पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ।।2।।
सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस-वासुपुज्जं च ।
विमल-मणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ।।3।।
कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च ।
वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं ।।4।।
एवं मए अभिथुआ, विहुय-रयमला-पहीण-जर-मरणा ।
चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ।।5।।
कित्तिय-वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा ।
आरुग्ग-बोहिलाभं, समाहि-वर मुत्तमं दिंतु ।।6।।
चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा ।
सागर-वर-गंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ।।7।।

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि.

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! मुहपत्ति पडिलेहुं ? (गुरू कहे- पडिलेह) **''इच्छं''**

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थ-एण वंदामि.

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक पारुं ? (गुरु कहे- **पुणो वि कायव्वं**)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि.

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक पार्युं, (गुरू कहे- **आयारो न मोत्तव्वो**) **''तहत्ति''**

(दाहिना हाथ चरवले पर रखकर बोले)

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो उवज्झायाणं, नमो लोए सव्वसाहूणं, एसो पंच नमुक्कारो, सव्व पावप्पणासणो, मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं ।

सामाइय वयजुत्तो, जाव मणे होइ नियमसंजुत्तो ।
छिन्नइ असुहं कम्मं, सामाइय जत्तिया वारा ।।1।।
सामाइअंमि उ कए, समणो इव सावओ हवइ जम्हा ।
एएण कारणेणं, बहुसो सामाइयं कुज्जा ।।2।।

सामायिक विधि से लिया, विधि से पारा, विधि करते जो कोई अविधि हुई हो, वह सब मन वचन काया से मिच्छामि दुक्कडं । दश मन के, दश वचन के, बारह काया के, इन बत्तीस दोषों में जो कोई दोष लगा हो, वह सब मन वचन काया से मिच्छा मि दुक्कडं ।।

यदि पुस्तक में गुरु स्थापना की हो तो उत्थापना मुद्रा से एक नवकार बोलकर उत्थापना करे ।

देवसिय प्रतिक्रमण विधि

(गुरू स्थापना मुद्रा से गुरू-स्थापना करे)

नमो अरिहंताणं ।।1।। नमो सिद्धाणं ।।2।। नमो आयरियाणं ।।3।। नमो उवज्झायाणं ।।4।। नमो लोए सव्वसाहूणं ।।5।। एसो पंच नमुक्कारो ।।6।। सव्वपावप्पणासणो ।।7।। मंगलाणं च सव्वेसिं ।।8।। पढमं हवइ मंगलं ।।9।।

पंचिंदिय संवरणो, तह नवविह बंभचेर गुत्तिधरो ।
चउविह कसाय मुक्को, इअ अट्ठारस गुणेहिं संजुत्तो ।।1।।
पंच महव्वय जुत्तो, पंच विहायार पालण समत्थो ।
पंच समिओ तिगुत्तो, छत्तीस गुणो गुरू मज्झ ।।2।।

(प्रतिष्ठित स्थापनाचार्यजी हो तो गुरू की स्थापना करने की आवश्यकता नहीं है ।)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! इरियावहियं पडिक्कमामि ? (गुरू कहे-**पडिक्कमेह** ?) **इच्छं, इच्छामि पडिक्कमिउं ।।1।। इरियावहियाए, विराहणाए ।।2।। गमणागमणे ।।3।। पाणक्कमणे, बीयक्कमणे, हरियक्कमणे, ओसा-उत्तिंग-पणगदग-मट्टी-मक्कडा संताणा-संकमणे ।।4।। जे मे जीवा विराहिया ।।5।। एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया ।।6।। अभिहया, वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परियाविया, किलामिया, उद्दविया, ठाणाओ ठाणं संकामिया, जीवियाओ ववरोविया, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ।।7।।**

तस्स उत्तरी-करणेणं, पायच्छित्त-करणेणं, विसोही-करणेणं, विसल्लीकरणेणं, पावाणं कम्माणं, निग्घायणट्ठाए ठामि काउस्सग्गं।।8।।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए पित्तमुच्छाए ।।1।। सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं ।।2।। एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो ।।3।। जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ।।4।। ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ।।5।।

(एक लोगस्स का काउस्सग्ग करे, लोगस्स न आता हो, तो चार नवकार गिने, फिर लोगस्स बोले)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे ।
अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ।।1।।
उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च ।
पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वन्दे ।।2।।
सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस-वासुपुज्जं च ।
विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ।
कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च ।
वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ।।4।।
एवं मए अभिथुआ, विहुयरय-मला-पहीण-जरमरणा ।
चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ।।5।।
कित्तिय-वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा ।
आरुग्ग-बोहिलाभं, समाहि-वर-मुत्तमं दिंतु ।।6।।
चंदेसु निम्मलयरा, आइ-च्चेसु अहियं पयासयरा ।
सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ।।7।।

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक मुहपत्ति पडिलेहुं ? (गुरू कहे-`पडिलेहे ।) **``इच्छं''**

(बोलकर मुहपत्ती पडिलेहन करे ।)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सामायिक संदिसाहुं ! (गुरू कहे-**संदिसावेह**) **``इच्छं''**

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक ठाउं ? (गुरू कहे-**ठाएह**) **``इच्छं''**

(फिर हाथ जोडकर एक नवकार गिने ।)

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो उवज्झायाणं, नमो लोए सव्वसाहूणं, एसो पंच नमुक्कारो, सव्वपावप्पणासणो, मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं ।

इच्छकारी भगवन् ! पसाय करी सामायिक दंडक उच्चरावोजी ।

(गुरू भगवंत या ज्येष्ठ व्यक्ति न हो तो स्वयं बोले-)

करेमि भंते ! सामाइयं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि, जाव नियमं पज्जुवासामि, दुविहं, तिविहेणं, मणेणं, वायाए, काएणं, न करेमि, न कारवेमि, तस्स भंते पडिक्कमामि, निंदाणि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ।

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! बेसणे संदिसाहुं ? (गुरु कहे-संदिसावेह) ``इच्छं''

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! बेसणे ठाउं ? (गुरू कहे-**ठाएह**) **''इच्छं''**

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सज्झाय संदिसाहुं ? (गुरू कहे-**संदिसावेह**) **''इच्छं''**

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सज्झाय करूं ? (गुरू कहे-**करेह**) **''इच्छं''**

(दोनों हाथ जोड़कर तीन बार नवकार मन्त्र गिने.)

नमो अरिहंताणं ।।1।। नमो सिद्धाणं ।।2।। नमो आयरियाणं ।।3।। नमो उवज्झायाणं ।।4।। नमो लोए सव्वसाहूणं ।।5।। एसो पंच नमुक्कारो ।।6।। सव्वपावप्पणासणो ।।7।। मंगलाणं च सव्वेसिं ।।8।। पढमं हवइ मंगलं ।।9।।

(सामायिक लेने की विधि सम्पूर्ण)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ।

卐 यदि चोविहार उपवास किया हो तो मुहपत्ति पडिलेहण न करे और वांदणा भी न दे ।

तिविहार उपवास किया हो तो सिर्फ मुहपत्ति पडिलेहन करे ।

卐 भोजन किया हो तो मुहपत्ति पडिलेहन व दो वांदणा दे ।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! मुहपत्ति पडिलेहुं ? (गुरू कहे-पडिलेहेह) **''इच्छं'' ।**

(ऐसा बोलकर पडिलेहन कर दो वांदणे दे)

इच्छामि खमासमणो । वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए ।।1।।

अणुजाणह-मे मिउग्गहं ।।2।। निसीहि, अ हो, का यं, का य, संफासं खमणिज्जो भे किलामो, अप्पकिलंताणं बुहुसुभेण भे, दिवसो वइक्कं-तो ।।3।। ज-त्ता भे ? ।।4।। ज-व-णिज्जं च भे ।।5।। खामेमि खमासमणो, देवसिअं वइक्कम्मं ।।6।। आवस्सिआए पडिक्कमामि खमासमणाणं देवसिआए, आसायणाए, तित्तीसन्नयराए जं किंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइआरो कओ, तस्स खमासमणो पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि।।7।।

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए ।।1।। अणुजाणह मे मिउग्गहं ।।2।। निसीहि अहो, का यं, का य संफासं खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे दिवसो वइ-क्कंतो ।।3।। ज त्ता भे ।।4।। ज व णिंज्जं च भे ।।5।। खामेमि खमासमणो, देवसिअं वइक्कम्मं ।।6।। पडिक्कमामि खमासमणाणं देवसिआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए जंकिंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्मा-इक्कमणाए, आसायणाए जो मे अइआरो कओ, तस्स खमासमणो, पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ।।7।।

इच्छकारी भगवन् पसायकरी पच्चक्खाण को आदेश देशोजी । (इसके बाद पच्चक्खाण ले.)

पाणाहार का पच्चक्खाण

पाणाहार दिवसचरिमं पच्चक्खाइ (पच्चक्खामि) अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तिआगारेणं वोसिरइ ।

तिविहार चउविहार का पच्चक्खाण ।

दिवसचरिमं पच्चक्खाइ (पच्चक्खामि) चउव्विहंपि आहारं, तिविहंपि आहारं असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ (वोसिरामि).

(चौदह नियम धारनेवालों को देसावगासिय का पच्चक्खाण.)

देसावगासिअं उवभोगं परिभोगं पच्चक्खाइ (पच्चक्खामि) अन्नत्थ-णाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्ति आगारेणं वोसिरइ (वोसिरामि) ।।

देवसिय प्रतिक्रमण विधि प्रारम्भ

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् चैत्यवंदन करुं ? ''इच्छं''

(ऐसा बोलकर बाया घुटना ऊंचा करके बोले.)

सकल कुशल वल्ली-पुष्करावर्तमेघो ।
दूरिततिमिर भानुः कल्पवृक्षोपमानः ।
भवजलनिधिपोतः सर्व-सम्पत्तिहेतुः
स भवतु सततं वः श्रेयसे शान्तिनाथः श्रेयसे पार्श्वनाथः ।।

श्री पार्श्वनाथ प्रभुका चैत्यवंदन

जय चिंतामणी पार्श्वनाथ, जय त्रिभुवन स्वामी ।
अष्ट कर्म रिपु जीतीने, पंचम गति पामी ।।1।।
प्रभु नामे आनंद कन्द, सुख संपत्ति लहिये ।
प्रभु नामे भव भय तणा, पातिक सवि दहिये ।।2।।
ॐ ह्रीं-वर्ण जोडी करी, जपीए पार्श्व नाम ।
विष अमृत थई परिणमे, लहिये अविचल ठाम ।।3।।

जं किंचि नाम तित्थं, सग्गे पायालि माणुसे लोए ।
जाइं जिणबिंबाइं, ताइं सव्वाइं वंदामि ।।1।।

नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं ।।1।। आइगराणं तित्थयराणं, सयंसंबुद्धाणं ।।2।। पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवर-पुंडरी-आणं, पुरिसवरगंधहत्थीणं ।।3।। लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोग-हिआणं, लोगपईवाणं, लोगज्जोअगराणं ।।4।। अभयदयाणं, चक्खु-दयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं, बोहिदयाणं ।।5।। धम्मदयाणं, धम्मदेसयाणं, धम्मनायगाणं, धम्मसारहीणं, धम्मवर-चाउरंत-चक्क-वट्टीणं ।।6।। अप्पडिहय-वरनाण-दंसणधराणं, वियट्ट-छउमाणं ।।7।। जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं ।।8।। सव्वन्नूणं, सव्वदरिसीणं, सिव-मयल-मरूअ-मणंत-मक्खय-मव्वाबाह-मपुणरवित्ति सिद्धिगइ-नामधेयं ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं जिअभयाणं ।।9।।

जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले ।
संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ।।10।। (खडे होकर)

अरिहंतचेइआणं करेमि काउस्सग्गं ।।1।। वंदणवत्तिआए, पूअणवत्तिआए, सक्कारवत्तिआए, सम्माणवत्तिआए, बोहिलाभव-त्तिआए, निरूवसग्गवत्तिआए ।।2।। सद्धाए, मेहाए, धिईए, धार-णाए, अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं ।।3।।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभा-इएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए ।।1।। सुहु-मेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचा-लेहिं ।।2।। एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो ।।3।। जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ।।4।। ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ।।5।।

(एक नवकार का काउस्सग्ग पारकर फिर **``नमोर्हत् सिद्धा-चार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः``** बोलकर स्तुति बोले.)

शंखेश्वर पासजी पूजीए, नरभवनो लाहो लीजीए ।
मनवांछित पूरण सुरतरू, जय वामासुत अलवेसरू ।।1।।

(फिर)—**लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे ।**
अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ।।1।।
उसभ-मजिअं च वंदे, संभव मभिणंदणं च सुमइं च ।
पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ।।2।।
सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस-वासुपुज्जं च ।
विमल-मणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ।।3।।
कुंथुं अरं च मल्लिं, वन्दे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च ।
वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ।।4।।
एवं मए अभिथुआ, विहुय-रयमला-पहीण-जर-मरणा ।
चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ।।5।।
कित्तिय-वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा ।
आरूग्ग-बोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ।।6।।
चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा ।
सागर-वर-गंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ।।7।।

अरिहंतचेइआणं, करेमि काउस्सग्गं ।।1।। वंदण-वत्तिआए, पूअण-वत्तिआए, सक्कार-वत्तिआए, सम्माण-वत्तिआए, बोहिलाभ-वत्तिआए, निरूवसग्गवत्तिआए ।।2।। सद्धाए, मेहाए, धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए, ठामि काउस्सग्गं ।।3।।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्तमुच्छाए ।।1।। सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं ।।2।। एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो ।।3।। जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ।।4।। ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ।।5।।

(एक नवकार का काउस्सग्ग पार कर दूसरी स्तुति बोले.)

दोय राता जिनवर अति भला, दोय धोला जिनवर गुणनीला ।
दोय नीला दोय शामल कह्या, सोले जिन कंचनवर्ण लह्या ।।2।।

(फिर)–**पुक्खर-वर-दीवड्ढे, धायइ-संडे अ जंबुदीवे अ ।**
भरहेरवय-विदेहे, धम्माइगरे नमंसामि ।।1।।
तम-तिमिर-पडल-विद्धंसणस्स, सुरगण-नरिंद-महिअस्स ।
सीमाधरस्स वंदे, पप्फोडिअ-मोह-जालस्स ।।2।।
जाइ-जरामरणसोग-पणासणस्स,
कल्लाण-पुक्खलविसालसुहावहस्स ।
को देव-दाणव नरिंदगणच्चिअस्स,
धम्मस्स सार-मुवलब्भ करे पमायं ।।3।।
सिद्धे भो पयओ णमो जिणमए नंदीसया संजमे ।।
देवं नागसुवन्न-किन्नर-गणस्सब्भुअ-भावच्चिए ।।
लोगो जत्थ पइट्ठिओ जगमिणं तेलुक्क-मच्चासुरं ।।
धम्मो वड्ढउ सासओ विजयओ धम्मुत्तरं वड्ढउ ।।4।।

सुअस्स भगवओ करेमि काउस्सग्गं ।।1।। वंदणवत्तिआए, पूअणवत्तिआए सक्कारवत्तिआए, सम्माणवत्तिआए, बोहिलाभवत्ति-आए निरूवसग्गवत्तिआए ।।2।। सद्धाए मेहाए धिइए धारणाए अणु-प्पेहाए वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं ।।3।।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए ।।1।। सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसं-चालेहिं ।।2।। एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो ।।3।। जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ।।4।। ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ।।5।।

(फिर एक नवकार का काउस्सग्ग पार कर स्तुति बोले ।)

आगम ते जिनवर भाखीयो, गणधर ते हैडे राखीयो ।
तेहनो रम जेणे चाखीयो, ते हुओ शिवसुख साखीयो ।।3।।

सिद्धाणं बुद्धाणं, पारगयाणं परंपरगयाणं ।
लोअग्ग-मुवगयाणं, नमो सया सव्वसिद्धाणं ।।1।।
जो देवाण वि देवो, जं देवा पंजली नमंसंति ।
तं देवदेव-महिअं, सिरसा वंदे महावीरं ।।2।।
इक्कोवि नमुक्कारो, जिणवर वसहस्स वद्धमाणस्स ।
संसार-सागराओ, तारेइ नरं व नारिं वा ।।3।।
उज्जिंतसेल-सिहरे, दिक्खा नाणं निसीहिआ जस्स ।
तं धम्मचक्कवट्टिं, अरिट्ठनेमिं नमंसामि ।।4।।
चत्तारि अट्ठ दस दोय, वंदिया जिणवरा चउव्वीसं ।
परमट्ठ-निट्ठि-अट्ठा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ।।5।।

वेयावच्चगराणं संतिगराणं सम्मदिट्ठिसमाहिगराणं करेमि काउस्सग्गं ।।1।।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए पित्तमुच्छाए ।।1।। सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं ।।2।। एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो ।।3।। जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ।।4।। ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ।।5।।

(एक नवकार का काउस्सग्ग पार कर **'नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधुभ्यः'** बोलकर चौथी स्तुति बोले)

धरणेन्द्र राय पद्मावती, प्रभु पार्श्वतणा गुण गावती,
सहु संघना संकट चूरती, नय विमलनां वांछित पूरती ।।4।।

(योगमुद्रा में बैठकर या बायां घुटना ऊँचा करके)

नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं ।।1।। आइगराणं तित्थयराणं, सयंसंबुद्धाणं ।।2।। पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवरपुंडरीआणं, पुरिसवरगंधहत्थीणं ।।3।। लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआणं, लोगपईवाणं, लोगपज्जोअगराणं ।।4।। अभयदयाणं,

चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं, बोहिदयाणं ।।5।। धम्मदयाणं, धम्मदेसयाणं, धम्मनायगाणं, धम्मसारहीणं, धम्मवरचाउरंत-चक्कवट्टीणं ।।6।। अप्पडिहय-वरनाण-दंसणधराणं, वियट्टछउमाणं ।।7।। जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं ।।8।। सव्वन्नूणं, सव्वदरिसीणं, सिवमयल-मरूअ-मणंत-मक्खय-मव्वाबाह-मपुणरावित्ति सिद्धिगइ-नामधेयं ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं, जिअभयाणं ।।9।।

जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले ।
संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ।।10।।

(फिर)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । भगवान हं !

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । आचार्य हं !

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । उपाध्याय हं !

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । सर्वसाधु हं !

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् देवसिय पडिक्कमणे ठाउं ? (गुरू कहे-**''ठाएह''**), **''इच्छं''**, (चरवले पर हाथ रखकर) **सव्वस्स वि देवसिय दुच्चिंतिय दुब्भासिअ दुच्चिट्ठिअ मिच्छा मि दुक्कडं ।** (फिर खडे होकर)

करेमि भंते ! सामाइयं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि, जाव नियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं, मणेणं, वायाए, काएणं, न करेमि, न कारवेमि तस्स भंते ! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि. (फिर)

इच्छामि ठामि काउस्सग्गं, जो मे देवसिओ अइयारो, कओ,

काइओ, वाइओ, माणस्सिओ, उस्सुत्तो, उम्मग्गो, अकप्पो, अकरणिज्जो, दुज्झाओ, दुव्विचिंतिओ, अणायारो, अणिच्छिअव्वो, असावगपाउग्गो, नाणे, दंसणे, चरित्ताचरित्ते, सुए, सामाइए, तिण्हं गुत्तीणं, चउण्हं कसायाणं, पंचण्हमणुव्वयाणं, तिण्हं गुणव्वयाणं, चउण्हं सिक्खावयाणं, बारसविहस्स सावगधम्मस्स, जं खंडिअं, जं विराहिअं तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ।।

तस्स उत्तरी-करणेणं, पायच्छित्तकरणेणं, विसोही-करणेणं, विसल्लीकरणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए ठामि काउस्सग्गं ।।8।।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए पित्तमुच्छाए ।।1।। सुहुमेहिं अंग-संचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठि-संचालेहिं ।।2।। एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो ।।3।। जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ।।4।। ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ।।5।।

(फिर पंचाचार की आठ गाथा का काउस्सग्ग करे, यदि वे गाथाएँ न आती हो तो आठ नवकार गिने । पंचाचार की आठ गाथाएँ)

नाणंमि दंसणं मि अ, चरणंमि तवंमि तह य वीरियंमि ।
आयरणं आयारो, इअ एसो पंचहा भणिओ ।।1।।
काले विणए बहुमाणे, उवहाणे तह अनिण्हवणे ।
वंजण अत्थ तदुभए, अट्ठविहो नाण-मायारो ।।2।।
निस्संकिअ-निक्कंखिअ, निव्वितिगिच्छा अमूढ-दिट्ठी अ ।
उववुह-थिरीकरणे, वच्छल्ल-पभावणे अट्ठ ।।3।।
पणिहाण-जोग-जुत्तो, पंचहिं समिईहिं तिहिं गुत्तीहिं ।।
एस चरित्तायारो, अट्ठविहो होइ नायव्वो ।।4।।
बारसविहंमि वि तवे, सब्भिंतर-बाहिरे कुसल-दिट्ठे ।
अगिलाइ अणाजीवी, नायव्वो सो तवायारो ।।5।।

अणसण-मूणोअरिआ, वित्ती-संखेवणं रसच्चाओ ।
काय-किलेसो संलीणया, य बज्झो तवो होइ ।।6।।
पायच्छित्तं विणओ, वेयावच्चं तहेव सज्झाओ ।
झाणं उस्सग्गो वि अ, अब्भिंतरओ तवो होइ ।।7।।
अणिगूहिअ-बल-वीरिओ, परक्कमइ जो जहुत्त-माउत्तो ।
जुंजइ अ जहा थामं, नायव्वो वीरियायारो ।।8।।

(काउस्सग्ग पार कर लोगस्स बोले)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे ।
अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ।।1।।
उसभ-मजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च ।
पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ।।2।।
सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस-वासुपुज्जं च ।
विमल-मणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ।।3।।
कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च ।
वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ।।4।।
एवं मए अभिथुआ, विहुय-रयमला-पहीण-जर-मरणा ।
चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ।।5।।
कित्तिय-वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा ।
आरूग्ग-बोहिलाभं, समाहि-वरमुत्तमं दिंतु ।।6।।
चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा ।
सागर-वर-गंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ।।7।।

(इसके बाद तीसरे आवश्यक की मुहपत्ति पडिलेहन कर दो बार वांदणा दे ।)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए अणुजाणह, मे मिउग्गहं निसीहि, अ-हो, का-यं, का-य, संफासं खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो ? ज त्ता भे ? ज व णि ज्जं च भे ? खामेमि खमासमणो ! देवसिअं

वइक्कम्मं आवस्सिआए पडिक्कमामि खमासमणाणं देवसिआए, आसायणाए, तित्तीसन्नयराए जं किंचि मिच्छाए, मणुदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइआरो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ।।1।।

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं निसीहि अहो, कायं, काय, संफासं खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो जत्ता भे ? जवणिज्जं च भे खामेमि खमासमणो देवसिअं वइक्कमं पडिक्कमामि खमासमणाणं देवसिआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए जं किंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइआरो कओ, तस्स खमासमणो ! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ।।2।।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! देवसिअं आलोउं ?

(गुरू कहे-**आलोएह**)

``इच्छं'' आलोएमि जो मे देवसिओ अइआरो कओ, काइओ-वाइओ-माणसिओ-उस्सुत्तो-उम्मग्गो-अकप्पो-अकरणिज्जो-दुज्झाओ, दुव्विचिंतिओ, अणायारो, अणिच्छिअव्वो, असावगपाउग्गो, नाणे, दंसणे, चरित्ताचरित्ते, सुए-सामाइए-तिण्हं गुत्तीणं, चउण्हं कसायाणं, पंचण्हमणुव्वयाणं, तिण्हं गुणव्वयाणं, चउण्हं सिक्खावयाणं, बारसविहस्स सावगधम्मस, जं खंडिअं जं विराहिअं, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ।।

(फिर हाथ जोडकर बोले)

सात लाख पृथ्वीकाय, सात लाख अप्काय, सात लाख तेउकाय, सात लाख वाउकाय, दश लाख प्रत्येक वनस्पतिकाय, चउद

लाख साधारण वनस्पतिकाय, बे लाख बेइंद्रिय, बे लाख तेइंद्रिय, बे लाख चउरिंद्रिय, चार लाख देवता, चार लाख नारकी, चार लाख तिर्यंच पंचेंद्रिय, चौद लाख मनुष्य एवंकारे, चोरासी लाख जीवयोनिमांहे, मारे जीवे जे कोइ जीव हण्यो होय, हणाव्यो होय, हणतां प्रत्ये अनुमोद्यो होय, ते सवि हुं मन, वचन, कायाए करी तस्स मिच्छा मि दुक्कडं.

पहेले प्राणातिपात, बीजे मृषावाद, त्रीजे अदत्तादान, चोथे मैथुन, पांचमे परिग्रह, छट्ठे क्रोध, सातमे मान, आठमे माया, नवमे लोभ, दसमे राग, अग्यारमे द्वेष, बारमे कलह, तेरमे अभ्याख्यान, चौदमे पैशुन्य, पंदरमे रति-अरति, सोलमे परपरिवाद, सत्तरमे माया मृषावाद, अढारमे मिथ्यात्व शल्य, ए अढार पापस्थानकमांहि मारे जीवे जे कोइ पाप सेव्युं होय, सेवराव्युं होय, सेवतां प्रत्ये अनुमोद्युं होय, ते सवी हुं मन, वचन, कायाए करी तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ।

सव्वस्सवि देवसिअ दुच्चिंतिअ दुब्भासिअ दुच्चिट्ठिअ, इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! (गुरू कहे-**पडिक्कमेह**) **``इच्छं'', तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ।।**

(बाद में वीरासन मुद्रा में बैठकर अथवा दाहिना घुटना ऊंचा कर बोले)

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो उवज्झायाणं, नमो लोए सव्वसाहूणं, एसो पंच नमुक्कारो, सव्वपावप्पणासणो, मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं ।

करेमि भंते ! सामाइयं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि, जाव नियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं, मणेणं, वायाए काएणं, न करेमि, न कारवेमि, तस्स भंते ! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ।।

इच्छामि पडिक्कमिउं, जो मे देवसिओ अइआरो कओ, काइओ, वाइओ, माणसिओ, उस्सुत्तो, उम्मग्गो, अकप्पो,

अकरणिज्जो । दुज्झाओ, दुव्विचिंतिओ, अणायारो, अणिच्छिअव्वो, असावगपाउग्गो, नाणे, दंसणे, चरित्ताचरित्ते, सुए, सामाइए, तिण्हं गुत्तीणं, कसायाणं, पंचण्हमणुव्वयाणं, तिण्हं गुणव्वयाणं, चउण्हं सिक्खावयाणं, बारसविहस्स सावगधम्मस्स, जं खंडिअं जं विराहिअं, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ।।

वंदित्तु सव्वसिद्धे, धम्मायरिए अ सव्वसाहू अ ।
इच्छामि पडिक्कमिउं, सावगधम्माइआरस्स ।।1।।
जो मे वयाइआरो, नाणे तह दंसणे चरित्ते अ ।
सुहुमो अ बायरो वा, तं निंदे तं च गरिहामि ।।2।।
दुविहे परिग्गहंमि, सावज्जे बहुविहे अ आरंभे ।
कारावणे अ करणे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ।।3।।
जं बद्धमिंदिएहिं, चउहिं कसाएहिं अप्पसत्थेहिं ।
रागेण व दोसेण व, तं निंदे तं च गरिहामि ।।4।।
आगमणे निग्गमणे, ठाणे चंकमणे अणाभोगे ।
अभिओगे अनिओगे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ।।5।।
संका कंख विगिच्छा, पसंस तह संथवो कुलिंगिसु ।
सम्मत्तस्सइआरे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ।।6।।
छक्कायसमारंभे, पयणे अ पयावणे अ जे दोसा ।
अत्तट्ठा य परट्ठा, उभयट्ठा चेव तं निंदे ।।7।।
पंचण्हमणुव्वयाणं, गुण-व्वयाणं च तिण्हमइयारे ।
सिक्खाणं च चउण्हं, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ।।8।।
पढमे अणुव्वयंमि, थूलग-पाणाइवाय-विरइओ ।
आयरियमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ।।9।।
वह-बंध-छविच्छेए, अइभारे भत्तपाणवुच्छेए ।
पढम-वयस्स-इआरे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ।।10।।

बीए अणुव्वयंमि, परिथूलग-अलिय-वयण-विरइओ ।
आयरियमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ।।11।।
सहसा रहस्स-दारे, मोसुवएसे अ कूडलेहे अ ।
बीअ-वयस्स-इआरे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ।।12।।
तइए अणुव्वयंमि, थूलग-परदव्व हरण-विरइओ ।
आयारिय मप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ।।13।।
तेनाहडप्पओगे, तप्पडिरूवे विरूद्ध-गमणे अ ।
कूडतुल-कूडमाणे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ।।14।।
चउत्थे अणुव्वयंमि, निच्चं परदारगमण-विरइओ ।
आयरिय-मप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ।।15।।
अपरिग्गहिआ इत्तर, अणंगविवाह तिव्वअणुरागे ।
चउत्थ वयस्सइआरे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ।।16।।
इत्तो अणुव्वए पंचमंमि, आयरियमप्पसत्थंमि ।
परिमाण-परिच्छेए, इत्थ पमायप्पसंगेणं ।।17।।
धण-धन्न-खित्त-वत्थु, रूप्प-सुवन्ने अ कुविअ-परिमाणे ।
दुपए चउप्पयंमि य, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ।।18।।
गमणस्स उ परिमाणे, दिसासु उड्ढं अहे अ तिरिअं च ।
वुड्ढि सइ-अंतरद्धा, पढमंमि गुणव्वए निंदे ।।19।।
मज्जंमि अ मंसंमि अ, पुप्फे अ फले अ गंधमल्ले अ ।
उवभोगपरिभोगे, बीयंमि गुणव्वए निंदे ।।20।।
सचित्ते पडिबद्धे, अप्पोलि-दुप्पोलियं च आहारे ।
तुच्छोसहिभक्खणया, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ।।21।।
इंगाली-वण-साडी, भाडी-फोडीसु-वज्जए कम्मं ।
वाणिज्जं चेव दंत, लक्ख-रस-केस-विसविसयं ।।22।।
एवं खु जंतपिल्लण-कम्मं निल्लंछणं च दव्वदाणं ।
सर-दह-तलाय-सोसं, असईपोसं च वज्जिज्जा ।।23।।

सत्थग्गि-मुसल-जंतग, तण-कट्ठे-मंत-मूल-भेसज्जे ।
दिन्ने दवाविए वा, पडिक्कमे देसिअ सव्वं ।।24।।
न्हाणु-व्वट्टण-वन्नग, विलेवणे सद्द-रूव-रस-गंधे ।
वत्थासण-आभरणे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ।।25।।
कंदप्पे कुक्कुइए, मोहरि-अहिगरण-भोग-अइरित्ते ।
दंडंमि अणट्ठाए, तइअंमि गुणव्वए निंदे ।।26।।
तिविहे दुप्पणिहाणे, अणवट्ठाणे तहा सइ विहूणे ।
सामाइअ वितहकए, पढमे सिक्खावए निंदे ।।27।।
आणवणे पेसवणे, सद्दे रूवे अ पुग्गलक्खेवे ।
देसावगासिअम्मि, बीए सिक्खावए निंदे ।।28।।
संथारूच्चारविहि, पमाय तह चेव भोयणाभोए ।
पोसह-विहि-विवरीए, तइए सिक्खावए निंदे ।।29।।
सच्चित्ते निक्खिवणे, पिहिणे ववएस-मच्छरे चेव ।
काला-इक्कम-दाणे, चउत्थे सिक्खावए निंदे ।।30।।
सुहिएसु अ दुहिएसु अ, जा मे अस्संजएसु अणुकंपा ।
रागेण व दोसेण व, तं निंदे च गरिहामि ।।31।।
साहूसु संविभागो, न कओ तव-चरण-करण-जुत्तेसु ।
संते फासुअदाणे, तं निंदे तं च गरिहामि ।।32।।
इहलोए परलोए, जीविअ-मरणे अ आसंसपओगे ।
पंचविहो अइयारो, मा मज्झ हुज्ज मरणंते ।।33।।
काएण काइअस्स, पडिक्कमे वाइअस्स वायाए ।
मणसा माणसिअस्स, सव्वस्स वयाइआरस्स ।।34।।
वंदणवय-सिक्खा-गारवेसु, सन्ना कसायदंडेसु ।
गुत्तीसु अ समिइसु अ, जो अइआरो अ तं निंदे ।।35।।
सम्मदिट्ठी जीवो, जइवि हु पावं समायरे किं चि ।
अप्पोसि होइ बंधो, जेण न निद्धंधसं कुणइ ।।36।।

तं पि हु सपडिक्कमणं, सप्परिआवं सउत्तरगुणं च ।
खिप्पं उवसामेइ, वाहिव्व सुसिक्खिओ विज्जो ।।37।।
जहा विसं कुट्ठगयं, मंतमूल विसारया ।
विज्जा हणंति मंतेहिं, तो तं हवइ निव्विसं ।।38।।
एवं अट्ठविहं कम्मं, राग-दोस-समज्जिअं ।
आलोअंतो अ निंदंतो, खिप्पं हणइ सुसावओ ।।39।।
कयपावो वि मणुस्सो, आलोइअ निंदिअ गुरूसगासे ।
होइ अइरेग लहुओ, ओहरिअ-भरूव्व भारवहो ।।40।।
आवस्सएण एएण, सावओ जइ वि बहुरओ होइ ।
दुक्खाणमंतकिरिअं, काही अचिरेण कालेण ।।41।।
आलोअणा बहुविहा, न य संभरिआ पडिक्कमण-काले ।
मूलगुण उत्तरगुणे, तं निंदे तं च गरिहामि ।।42।।
तस्स धम्मस्स केवली-पन्नत्तस्स ।।
(उसके बाद खड़े होकर बोले)
अब्भुट्ठिओ मि आराहणाए, विरओमि विराहणाए ।
तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ।।43।।
जावंति चेइआइं, उड्ढे अ अहे अ तिरिअ लोए अ ।
सव्वाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइं ।।44।।
जावंत केवि साहू, भरहेरवय महाविदेहे अ ।
सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंड-विरयाणं ।।45।।
चिरसंचिय-पावपणासणीइ, भव-सय-सहस्स-महणीए ।
चउवीस-जिण-विणिग्गय-कहाइ, दोलंतु मे दिअहा ।।46।।
मम मंगलमरिहंता, सिद्धा साहू सुअं च धम्मो अ ।
सम्मदिट्ठी देवा, दिंतु समाहिं च बोहिं च ।।47।।
पडिसिद्धाणं करणे, किच्चाणमकरणे अ पडिक्कमणं ।
असद्दहणे अ तहा, विवरीय परूवणाए अ ।।48।।

खामेमि सव्व-जीवे, सव्वे जीवा खमंतु मे ।
मित्ती मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झ न केणइ ।।49।।
एवमहं-आलोइअ, निंदिअ-गरहिअ-दुगंछिअं सम्मं ।
तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ।।50।।

(फिर दो वांदणा दे)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए ।।1।। अणुजाणह, मे मिउग्गहं ।।2।। निसीहि, अहो, कायं, काय संफासं, खमणिज्जो भे किलामो, अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो ? ।।3।। ज-त्ता भे ? ।।4।। ज-वि-णि ज्जं च भे ? ।।5।। खामेमि खमासमणो ! देवसिअं वइक्कम्मं ।।6।। आवस्सिआए, पडिक्कमामि खमासमणाणं देवसिआए आसायणाए, तित्तीसन्नयराए जं किंचि मिच्छाए, मण-दुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्व-धम्माइक्कमणाए, आसायणाए जो मे अइआरो कओ, तस्स खमास-मणो ! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ।।7।।

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए ।।1।। अणुजाणह, मे मिउग्गहं ।।2।। निसीहि, अ हो, का यं, का य, संफासं खमणिज्जो भे किलामो, अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो ? ।।3।। ज त्ता भे ? ।।4।। ज व णि ज्जं च भे ? ।।5।। खामेमि खमासमणो ! देवसिअं वइक्कम्मं ।।6।। पडिक्कमामि खमा-समणाणं देवसिआए आसायणाए, तित्तीसन्नयराए जं किंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, काय-दुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइ-क्कमणाए, आसायणाए जो मे अइआरो कओ, तस्स खमास-मणो ! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ।।7।।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! अब्भुट्ठिओमि अब्भिंतर देवसिअं खामेउं ? इच्छं, खामेमि देवसिअं,

(फिर दाहिना हाथ चरवले पर रख मस्तक झुकाकर)

जं किंचि अपत्तिअं परपत्तिअं भत्ते पाणे विणए वेयावच्चे आलावे संलावे उच्चासणे समासणे अंतरभासाए उवरिभासाए जं किंचि मज्झ विणय परिहीणं सुहुमं वा बायरं वा तुब्भे जाणह अहं न जाणामि तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ।। (फिर दो वांदणा दे)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए ।।1।। अणुजाणह, मे मिउग्गहं ।।2।। निसीहि, अ हो, का यं, का य, संफासं, खमणिज्जो भे किलामो, अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे, दिवसो वइक्कंतो ।।3।। ज त्ता भे ? ।।4।। ज व णि ज्जं च भे।।5।। खामेमि खमासमणो, देवसिअं वइक्कम्मं आवस्सिआए ।।6।। पडिक्कमामि खमासमणाणं देवसिआए, आसायणाए, तित्तीसन्नयराए जं किंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइआरो कओ, तस्स खमासमणो ! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ।।7।।

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए ।।1।। अणुजाणह, मे मिउग्गहं ।।2।। निसीहि, अ हो, का यं, का य संफासं खमणिज्जो भे किलामो, अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे, दिवसो वइक्कंतो ।।3।। ज त्ता भे ? ।।4।। ज व णि ज्जं च भे ।।5।। खामेमि खमासमणो, देवसिअं वइक्कम्मं ।।6।। पडिक्कमामि खमासमणाणं देवसिआए, आसायणाए, तित्तीसन्नयराए जं किंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइयारो कओ, तस्स खमासमणो ! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ।।7।।

(बाद में हाथ जोड़ मस्तक पर लगाकर बोले)

आयरिय उवज्झाए, सीसे साहम्मिए कुल गुणे अ ।
जे मे केइ कसाया, सव्वे तिविहेण खामेमि ।।1।।
सव्वस्स समणसंघस्स, भगवओ अंजलिं करिअ सीसे ।
सव्वं खमावइत्ता, खमामि सव्वस्स अहयंपि ।।2।।
सव्वस्स जीवरासिस्स, भावओ धम्मनिहिअ निअचित्तो ।
सव्वं खमावइत्ता, खमामि सव्वस्स अहयंपि ।।3।।

करेमि भंते ! सामाइयं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि, जाव नियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं, मणेणं, वायाए, काएणं. न करेमि, न कारवेमि तस्स भंते ! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि.

इच्छामि ठामि काउस्सग्गं, जो मे देवसिओ अइयारो, कओ, काइओ, वाइओ, माणसिओ, उस्सुत्तो, उम्मग्गो, अकप्पो, अकरणिज्जो, दुज्झाओ, दुव्विचिंतिओ, अणायारो, अणिच्छिअव्वो, असावगपाउग्गो, नाणे, दंसणे, चरित्ताचरित्ते, सुए, सामाइए, तिण्हं गुत्तीणं, चउण्हं कसायाणं, पंचण्हमणुव्वयाणं, तिण्हं गुणव्वयाणं, चउण्हं सिक्खावयाणं, बारसविहस्स सावगधम्मस्स, जं खण्डिअं, जं विराहिअं तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ।।

तस्स उत्तरी-करणेणं, पायच्छित्त-करणेणं, विसोही-करणेणं, विसल्ली करणेणं, पावाणं कम्माणं, निग्घायणट्ठाए ठामि काउस्सग्गं।।8।।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए पित्तमुच्छाए ।।1।। सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं ।।2।। एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो ।।3।। जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ।।4।। ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ।।5।।

(चंदेसु निम्मलयरा तक दो लोगस्स का काउस्सग्ग करे, लोगस्स न आता हो, तो आठ नवकार गिने, फिर लोगस्स बोले)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे ।
अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ।।1।।
उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च ।
पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ।।2।।
सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस वासुपुज्जं च ।
विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ।।3।।
कुंथुं अरं च मल्लिं, वन्दे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च ।
वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ।।4।।
एवं मए अभिथुआ, विहुय-रय-मला-पहीणजर-मरणा ।
चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ।।5।।
कित्तियवंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा ।
आरूग्ग-बोहिलाभं, समाहि-वर-मुत्तमं दिंतु ।।6।।
चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा ।
सागर-वर-गंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ।।7।।

सव्वलोए अरिहंत-चेइआणं, करेमि काउस्सग्गं, वंदण-वत्तिआए, पूअण-वत्तिआए, सक्कार-वत्तिआए, सम्माण-वत्तिआए बोहिलाभवत्तिआए, निरूवसग्ग-वत्तिआए, सद्धाए, मेहाए, धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए, ठामि काउस्सग्गं ।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए पित्तमुच्छाए ।।1।। सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, दिट्ठि संचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो ।।3।। जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ।।4।। ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ।।5।।

(`चंदेसु निम्मलयरा' तक एक लोगस्स का, लोगस्स न आता हो तो चार नवकार का काउस्सग्ग करे, फिर)

पुक्खर-वरदीवड्ढे, धायइसंडे अ जंबुदीवे अ ।
भरहेरवयविदेहे, धम्माइगरे नमंसामि ।।1।।
तम-तिमिर-पडल-विद्धंसणस्स, सुरगण-नरिंद महिअस्स ।
सीमाधरस्स वंदे, पप्फोडिअ-मोह-जालस्स ।।2।।
जाइ जरामरणसोग-पणासणस्स,
कल्लाण-पुक्खलविसाल-सुहावहस्स ।
को देवदाणवनरिं-दगणच्चिअस्स,
धम्मस्स सार-मुवलब्भ करे पमायं ।।3।।
सिद्धे भो पयओ णमो जिणमए नंदी सया संजमे,
देवं नागसुवन्न-किन्नर-गणस्सब्भुअ-भावच्चिए ।
लोगो जत्थ पइट्ठिओ जगमिणं तेलुक्कमच्चासुरं,
धम्मो वड्ढउ सासओ विजयओ धम्मुत्तरं वड्ढउ ।।4।।

सुअस्स भगवओ करेमि काउस्सग्गं ।।1।। वंदणवत्तिआए, पूअणवत्तिआए, सक्कार-वत्तिआए, सम्माण-वत्तिआए, बोहिलाभ वत्तिआए, निरूवसग्ग वत्तिआए ।।2।। सद्धाए मेहाए धिइए धारणाए अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं ।।3।।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए पित्तमुच्छाए ।।1।। सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठि-संचालेहिं ।।2।। एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो ।।3।। जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ।।4।। ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ।।5।।

(`चंदेसु निम्मलयरा' तक लोगस्स का काउस्सग्ग लोगस्स काउस्सग्ग न आता हो तो चार नवकार का काउस्सग्ग करे, फिर)

सिद्धाणं बुद्धाणं, पारगयाणं परंपरगयाणं ।
लोअग्गमुवगयाणं, नमो सया सव्वसिद्धाणं ।।1।।

जो देवाण विदेवो, जं देवा पंजली नमंसंति ।
तं देवदेव-महिअं, सिरसा वंदे महावीरं ।।2।।
इक्कोवि नमुक्कारो, जिणवर वसहस्स वद्धमाणस्स ।
संसार-सागराओ, तारेइ नरं व नारिं वा ।।3।।
उज्जिंतसेल-सिहरे, दिक्खा नाणं निसीहिआ जस्स ।
तं धम्मचक्कवट्टिं, अरिट्ठनेमिं नमंसामि ।।4।।
चत्तारि अट्ठ दस दोय, वंदिया जिणवरा चउव्वीसं ।
परमट्ठ-निट्ठि-अट्ठा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ।।5।।
सुअदेवयाए करेमि काउस्सग्गं,

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए पित्तमुच्छाए ।।1।। सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं ।।2।। एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो ।।3।। जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ।।4।। ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ।।5।।

(एक नवकार का काउस्सग्ग पार कर पुरुष–**नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः** बोलकर स्तुति बोले)

सुअदेवया भगवई, नाणावरणीय कम्मसंघायं ।
तेसिं खवेउ सययं, जेसिं सुयसायरे भत्ती ।।1।।

(स्त्रियों को कमलदल की स्तुति बोलनी चाहिए ।)

(कमलदलविपुलनयना, कमलमुखी कमलगर्भसमगौरी ।
कमले स्थिता भगवती, ददातु श्रुतदेवता सिद्धिं ।।1।।) फिर–

खित्तदेवयाए करेमि काउस्सग्गं,

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए पित्तमुच्छाए ।।1।। सुहुमेहिं अंग-संचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं ।।2।। एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो ।।3।।

जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ।।4।। ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ।।5।।

(एक नवकार का काउस्सग्ग पार कर पुरुष–**नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्यः** बोलकर स्तुति बोले.)

जीसे खित्ते साहू, दंसणनाणेहिं चरणसहिएहिं ।
साहंति मुक्खमग्गं, सा देवी हरउ दुरिआइं ।।1।।

(स्त्रियों को 'यस्याः क्षेत्रं' की स्तुति बोलनी चाहिये.)

(यस्याः क्षेत्रं समाश्रित्य, साधुभिः साध्यते क्रियाः ।
सा क्षेत्रदेवता नित्यं, भूयान्नः सुखदायिनी ।।1।।) फिर–

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो उवज्झायाणं, नमो लोए सव्वसाहूणं, एसो पंच नमुक्कारो, सव्वपावप्पणासणो, मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं ।

(फिर छट्ठे आवश्यक की मुहपत्ति का पडिलेहन करे, मुहपत्ति पडिलेहन कर दो वांदणा दे ।)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए ।।1।। अणुजाणह, मे मिउग्गहं ।।2।। निसीहि, अहो, कायं, काय, संफासं खमणिज्जो भे किलामो, अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो ? ।।3।। ज त्ता भे ? ।।4।। ज व णिज्जं च भे ।।5।। खामेमि खमासमणो ! देवसिअं वइक्कम्मं ।।6।। आवस्सिआए, पडिक्कमामि, खमासमणाणं देवसिआए, आसायणाए, तित्तीसन्नयराए जं किंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइआरो कओ, तस्स खमासमणो ! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ।।7।।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए ।।1।। अणुजाणह, मे मिउग्गहं ।।2।। निसीहि, अहो, कायं, काय, संफासं खमणिज्जो भे किलाभो अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे, दिवसो

वइक्कंतो ? ।।3।। ज-त्ता भे ? ।।4।। ज व णिज्जं च भे ।।5।। खामेमि खमासमणो, देवसिअं वइक्कम्मं ।।6।। पडिक्कमामि खमासमणाणं देवसिआए, आसायणाए, तित्तीसन्नयराए जं किंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइआरो कओ, तस्स खमासमणो ! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ।।7।। फिर–

सामायिक, चउवीसत्थो, वंदन, पडिक्कमण, काउस्सग्ग, पच्चक्खाण किया है जी ।

इच्छामो अणुसट्ठिं नमो खमासमणाणं, (पुरुषबोले) 'नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ।'

(फिर बाया घूटना ऊंचा करके)

नमोऽस्तु वर्द्धमानाय, स्पर्द्धमानाय कर्मणा ।
तज्जयावाप्तमोक्षाय, परोक्षाय कुतीर्थिनाम् ।।1।।
येषां विकचारविन्दराज्या, ज्यायः क्रमकमलावलिं दधत्या ।
सदृशैरिति संगतं प्रशस्यं, कथितं सन्तु शिवाय ते जिनेन्द्राः ।।2।।
कषायतापार्दितजन्तुनिर्वृत्तिं, करोति यो जैनमुखाम्बुदोद्गतः ।
सशुक्रमासोद्भववृष्टिसन्निभो, दधातु तुष्टिं मयि विस्तरो गिराम्।।3।।

(यदि स्त्रियां प्रतिक्रमण करती हो तो, संसारदावा की तीन गाथा बोले ।)

(संसारदावानलदाहनीरं, संमोहधूली-हरणे समीरं ।
माया-रसादारणसारसीरं, नमामि वीरं गिरिसार-धीरं ।।1।।
भावावनाम-सुर-दानव-मानवेन, चूलाविलोल-कमलावलिमालितानि ।
संपूरितामिनत-लोकसमीहितानि, कामं नमामि जिनराज-पदानि तानि।।2।।
बोधागाधं सुपद-पदवी-नीरपुराभिरामं,
जीवाहिंसाविरल-लहरी संगमागाहदेहं ।
चूलावेलं गुरूगममणि-संकुलं दूरपारं,
सारं वीरागमजलनिधिं सादरं साधु सेवे ।।3।।)

नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं ।।1।। आइगराणं तित्थयराणं, सयं संबुद्धाणं ।।2।। पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवर-पुंडरीआणं, पुरिसवर-गंध-हत्थीणं ।।3।। लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआणं, लोगपइवाणं, लोगपज्जोअगराणं ।।4।। अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं बोहिदयाणं ।।5।। धम्मदयाणं, धम्मदेसयाणं, धम्मनायगाणं, धम्मसारहीणं, धम्मवरचाउरंत-चक्कवट्टीणं ।।6।। अप्पडिहय-वरनाण-दंसणधराणं, वियट्ट-छउमाणं ।।7।। जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं।।8।। सव्वन्नूणं, सव्वदरिसीणं, सिव-मयल-मरूअ-मणंत-मक्खयमव्वाबाह मपुणरावित्ति-सिद्धि-गइ-नामधेयं ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं जिअभयाणं ।।9।।

जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले ।
संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ।।10।।

नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ।

(कोई भी एक स्तवन बोले)

श्री पार्श्वनाथ जिनस्तवन

राधा जेवां फूलडां ने, शामल जेवो रंग ।
आज तारी आंगीनो कांइ, रूडो बन्यो छे रंग ।
प्यारा पासजी हो लाल,
दीनदयाल मुजने नयणे निहाल ।।1।। प्यारा.
जोगीवाडे जागतो ने, मातो धिंगडमल्ल ।
शामलो सोहामणो कांइ, जीत्या आठे मल्ल ।।2।। प्यारा.
तुं छे मारो साहिबो ने, हुं छुं तारो दास ।
आशा पुरो दासनी कांइ, सांभळी अरदास ।।3।। प्यारा.
देव सघला दीठा तेमां, एक तुं अव्वल ।
लाखेणुं छे लटकुं ताहरूं, देखी रीझे दिल ।।4।। प्यारा.

कोइ नमे पीरने ने, कोइ नमे राम ।
उदयरत्न कहे प्रभुजी, मारे तुमशु काम, ।।5।। प्यारा.
(मात्र पुरुष बोले)
वरकनकशंखविद्रुम-मरकतघणसन्निभं विगतमोहं ।
सप्ततिशतं जिनानां, सर्वामरपूजितं वंदे ।।1।।
(फिर सभी 4 खमासमण दे)
इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । 'भगवानहं' ।
इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । 'आचार्यहं' ।
इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । 'उपाध्यायहं' ।
इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । 'सर्वसाधुहं ।'
(फिर दाहिना हाथ चरवले पर रखकर मस्तक झुकाकर बोले)
अड्ढाइज्जेसु दीव-समुद्देसु, पन्नरससु कम्मभूमिसु, जावंत केवि साहू, रयहरण-गुच्छ-पडिग्गहधारा, पंचमहव्वयधारा, अट्ठा-रस-सहस्स सीलंगधारा, अक्खुयायारचरित्ता, ते सव्वे सिरसा मणसा मत्थएण वंदामि ।। (खडे होकर)
इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! देवसिय पायच्छित्त विसो-हणत्थं काउस्सग्ग करूं ? इच्छं, देवसिय पायच्छित्त विसोहणत्थं करेमि काउस्सग्गं ।
अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए पित्तमुच्छाए ।।1।। सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठि-संचालेहिं ।।2।। एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो ।।3।। जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ।।4।। ताव कायं, ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि ।।5।।

(चंदेसु निम्मलयरा तक, चार लोगस्स का काउस्सग्ग करे, लोगस्स न आता हो, तो सोलह नवकार गिने) फिर–

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्म-तित्थयरे जिणे ।
अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ।।1।।
उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च ।
पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वन्दे ।।2।।
सुविहिं च पुप्फदंतं, सिज्जंस-वासुपुज्जं च ।
विमल-मणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ।।3।।
कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च ।
वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ।।4।।
एवं मए अभिथुआ, विहुय-रयमला-पहीणजर-मरणा ।
चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ।।5।।
कित्तिय-वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा ।
आरुग्ग-बोहिलाभं, समाहि वर-मुत्तमं दिंतु ।।6।।
चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा,
सागर-वर-गंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ।।7।।

इच्छामि खमासमणो वंदामि ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सज्झाय संदिसाहुं ? (गुरू कहे **'संदिसावेह')** **''इच्छं''**

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सज्झाय करूं ? (गुरू कहे-करेह) ''इच्छं''

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो उवज्झायाणं, नमो लोए सव्वसाहूणं, एसो पंच नमुक्कारो, सव्वपावप्पणासणो, मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं ।

(कोई भी सज्झाय बोले)

क्या तन मांजता रे, एक दिन मिट्टी में मिल जाना ।
मिट्टी में मिल जाना बंदे, खाक में खप जाना, क्या0 ।।1।।
मिट्टिया चुन-चुन महेल बनाया, बंदा कहे घर मेरा ।
एक दिन बंदा उठ चलेंगे, यह घर तेरा न मेरा, क्या0 ।।2।।
मिट्टिया ओढ़ावण मिट्टिया बिछावण, मिट्टी का शिरहाना ।
इस मिट्टिया का एक भूत बनाया, अमर जाल लोभाना, क्या0 ।।3।।
मिट्टिया कहे कुंभारने रे, तुं क्या खुंदे मोय ?
एक दिन एसा आयेगा प्यारे, में खुंदुंगी तोय, क्या0 ।।4।।
लकड़ी कहे सुथार ने रे, तुं क्या छोले मोय ?
एक दिन एसा आयेगा प्यारे, में भुंजुंगी तोय, क्या0 ।।5।।
दान शियल तप भावना रे, शिवपुर मारग चार ।
आनंदघन कहे चेत ले प्यारे, आखिर जाना गमार, क्या0।।6।।

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो उवज्झायाणं, नमो लोए सव्वसाहूणं, एसो पंच नमुक्कारो, सव्वपावप्पणासणो, मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं ।

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए-मत्थएण वंदामि । फिर खडे होकर)

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! दुक्खक्खय-कम्मक्खय-निमित्तं काउस्सग्ग करूं ? (गुरू कहे-**करेह**) **''इच्छं''**

दुक्खक्खय-कम्मक्खय-निमित्तं करेमि काउस्सग्गं ।।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए पित्तमुच्छाए ।।1।। सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठि-संचालेहिं ।।2।। एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो ।।3।। जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ।।4।। ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ।।5।।

(संपूर्ण चार लोगस्स का काउस्सग्ग करे, लोगस्स न आता

हो, तो सोलह नवकार गिने, फिर सब लोग काउस्सग्ग अवस्था में रहे और एक व्यक्ति **नमोऽर्हतसिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः** बोल कर शांति बोले ।)

शान्तिं शान्तिनिशान्तं, शान्तं शान्ताशिवं नमस्कृत्य ।
स्तोतुः शान्तिनिमित्तं, मंत्रपदैः शान्तये स्तौमि ।।1।।
ओमिति निश्चित-वचसे, नमो नमो भगवतेऽर्हते पूजाम् ।
शान्तिजिनाय जयवते, यशस्विने स्वामिने दमिनाम् ।।2।।
सकलातिशेषक महा-संपत्तिमन्विताय शस्याय ।
त्रैलोक्यपूजिताय च, नमो नमः शान्तिदेवाय ।।3।।
सर्वामर-सुसमूह-स्वामिक-संपूजिताय न जिताय ।
भुवनजनपालनोद्यत-तमाय सततं नमस्तस्मै ।।4।।
सर्वदुरितौघनाशन-कराय सर्वाशिव-प्रशमनाय ।
दुष्टग्रह-भूतपिशाच-शाकिनीनां प्रमथनाय ।।5।।
यस्येति नाममन्त्र-प्रधानवाक्योपयोगकृततोषा ।
विजया कुरूते जनहित-मिति च नुता नमत तं शान्तिम् ।।6।।
भवतु नमस्ते भगवति ! विजये सुजये परापरैरजिते ।
अपराजिते जगत्यां, जयतीति जयावहे भवति ।।7।।
सर्वस्यापि च सङ्घस्य, भद्रकल्याणमङ्गलप्रददे ।
साधूनां च सदा शिव-सुतुष्टिपुष्टिप्रदे जीयाः ।।8।।
भव्यानां कृतसिद्धे ! निर्वृत्ति निर्वाणजननी सत्त्वानाम् ।
अभयप्रदाननिरते, नमोऽस्तु स्वस्तिप्रदे तुभ्यम् ।।9।।
भक्तानां जन्तूनां, शुभावहे नित्यमुद्यते देवि !
सम्यग्दृष्टीनां धृति, रति-मति-बुद्धिप्रदानाय ।।10।।
जिनशासननिरतानां, शान्तिनतानां च जगति जनतानाम् ।
श्री संपत्कीर्तियशो-वर्द्धनि जयदेवि ! विजयस्व ।।11।।
सलिलानल-विषविषधर-दुष्टग्रह-राज-रोग-रण-भयतः ।
राक्षस-रिपुगण-मारी-चौरेतिश्चापदादिभ्यः ।।12।।

अथ रक्ष रक्ष सुशिवं, कुरू कुरू शान्तिं च कुरू कुरू सदेति ।
तुष्टिं कुरू कुरू पुष्टिं, कुरू कुरू स्वस्तिं च कुरू कुरू त्वम् ।।13।।
भगवति ! गुणवति ! शिवशान्ति,
तुष्टि-पुष्टि-स्वस्तीह कुरू कुरू जनानाम् ।
ओमिति नमो नमो ह्राँ ह्रीं,
ह्रूँ ह्रः यः क्षः ह्रीं फुट् फुट् स्वाहा ।।14।।
एवं यन्नामाक्षर-पुरस्सरं संस्तुता जयादेवी ।
कुरूते शान्तिं नमतां, नमो नमः शान्तये तस्मै ।।15।।
इति पूर्वसूरिदर्शित-मन्त्रपद-विदर्भितः स्तवः शान्तेः ।
सलिलादिभयविनाशी, शान्त्यादिकरश्च भक्तिमताम् ।।16।।
यश्चैनं पठति सदा, शृणोति भावयति वा यथायोगम् ।
स हि शान्तिपदं यायात्, सूरिः श्रीमानदेवश्च ।।17।।
उपसर्गाः क्षयं यान्ति, छिद्यन्ते विघ्नवल्लयः ।
मनः प्रसन्नतामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे ।।18।।
सर्वमंगलमांगल्यं, सर्वकल्याणकारणम् ।
प्रधानं सर्व-धर्माणां, जैनं जयति शासनम् ।।19।।

(बाद में लोगस्स बोले)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्म-तित्थयरे जिणे ।
अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ।।1।।
उसभ-मजिअं च वंदे, संभव मभिणंदणं च सुमइं च ।
पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ।।2।।
सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस-वासुपूज्जं च ।
विमल-मणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ।।3।।
कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च ।
वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ।।4।।
एवं मए अभिथुआ, विहुय-रय-मला-पहीण-जरमरणा ।
चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ।।5।।
कित्तिय-वंदिया-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा ।
आरूग्ग-बोहिलाभं, समाहि-वर-मुत्तमं दिंतु ।।6।।

चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा ।
सागर-वर-गंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ।।7।।

(खमासमण देकर हाथ नीचे रखकर ``अविधि आशातना मिच्छा-मि-दुक्कडम् कहे ।)

देवसिय प्रतिक्रमण के बाद सामायिक पारने की विधि

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि.

इच्छाकारेण संदिसाह भगवन् ! इरियावहियं पडिक्कमामि ? (गुरू कहे-पडिक्कमेह ?) **इच्छं, इच्छामि पडिक्कमिउं ।।1।। इरियावहियाए, विराहणाए ।।2।। गमणागमणे ।।3।। पाणक्कमणे, बीयक्कमणे, हरियक्कमणे, ओसा-उत्तिंग-पणगदग-मट्टीमक्कडा, संताणा संकमणे ।।4।। जे मे जीवा विराहिया ।।5।। एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया ।।6।। अभिहया, वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परियाविया, किलामिया, उद्दविया, ठाणाओ ठाणं संकामिया, जीवियाओ ववरोविया, तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।।7।।**

तस्स उत्तरी-करणेणं, पायच्छित्त-करणेणं, विसोही-करणेणं, विसल्लीकरणेणं, पावाणं कम्माणं, निग्घायणट्ठाए ठामि काउस्सग्गं।।1।।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए पित्तमुच्छाए ।।1।। सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं ।।2।। एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो ।।3।। जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ।।4।। ताव कायं, ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि ।।5।।

(एक लोगस्स का काउसग्ग, लोगस्स न आता हो तो चार नवकार का काउसग्ग करे, फिर)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे ।
अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ।।1।।
उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च ।
पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ।।2।।
सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस-वासुपुज्जं च ।
विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ।।3।।
कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च ।
वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ।।4।।
एवं मए अभिथुआ, विहुयरय-मला-पहीणजरमरणा ।
चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ।।5।।
कित्तिय-वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा ।
आरूग्ग बोहिलाभं, समाहि-वर-मुत्तमं दिंतु ।।6।।
चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा ।
सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ।।7।।

(उसके बाद बाया घुटना ऊंचा करके चउक्कसाय बोले.)

चउक्कसाय-पडिमल्लु-ल्लूरणु, दुज्जय-मयण-बाण-मुसुमुरणु ।
सरसपिअंगु-वन्नु गय-गामिउ, जयउ पासु भुवणत्तय-सामिउ ।।1।।
जसु तणु कंति कडप्प सिणिद्धउ, सोहइ फणिमणिकिरणालिद्धउ । नं
नव-जल-हर-तडिल्लयलंछिउ, सो जिणु पासु पयच्छउ वंछिउ ।।2।।

नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं ।।1।। आइगराणं तित्थयराणं, सयंसंबुद्धाणं ।।2।। पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवर-पुंडरीआणं, पुरिसवरगंधहत्थीणं ।।3।। लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआणं, लोगपईवाणं, लोगपज्जोअगराणं ।।4।। अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं, बोहिदयाणं ।।5।। धम्मदयाणं, धम्मदेसयाणं, धम्मनायगाणं, धम्मसारहीणं, धम्मवरचाउरंत चक्कवट्टीणं ।।6।। अप्पडिहय-वरनाण-दंसण-धराणं, वियट्ट-छउमाणं ।।7।। जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं ।।8।।

सव्वन्नूणं, सव्वदरिसीणं, सिव-मयल-मरूअ-मणंत-मक्खय-मव्वाबाह-मपुणरावित्ति सिद्धिगइ-नामधेयं ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं जिअभयाणं ।।9।।

जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले,
संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ।।10।।

(फिर दोनों हाथ मस्तक पर लगाकर)

जावंति चेइआइं, उड्ढे अ अहे अ तिरिअ लोए अ ।
सव्वाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइं ।।1।।

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि. (फिर दोनों हाथ मस्तक पर लगाकर)

जावंत केवि साहू, भरहेरवय महाविदेहे अ ।
सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंड-विरयाणं ।।1।।
नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ।
उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं ।
विसहरविसनिन्नासं, मंगल कल्लाण-आवासं ।।1।।
विसहर फुलिंगमंतं, कंठे धारेइ जो सया मणुओ ।
तस्स-गह-रोग-मारी, दुट्ठ-जरा जंति उवसामं ।।2।।
चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामो वि बहुफलो होइ ।
नर-तिरिएसु वि जीवा, पावंति न दुक्ख-दोगच्चं ।।3।।
तुह सम्मत्ते लद्धे, चिंतामणि कप्पपायवब्भहिए ।
पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं ।।4।।
इअ संथुओ महायस ! भत्तिब्भर निब्भरेण हियएण ।
ता देव दिज्ज बोहिं, भवे भवे पास-जिणचंद ।।5।।

(फिर दोनो हाथ मस्तक पर लगाकर **मुक्ता शुक्ति मुद्रा** में बोले)

जय वीयराय ! जगगुरू, होउ ममं तुह पभावओ भयवं ।
भवनिव्वेओ मग्गाणुसारिआ इट्ठफलसिद्धी ।।1।।

लोगविरूद्धच्चाओ, गुरूजणपूआ परत्थकरणं च ।
सुहगुरूजोगो तव्वयणसेवणा आभवमखंडा ।।2।।
(हाथ नीचे कर)
वारिज्जइ जइ वि निआण बंधणं वीयराय ! तुह समए ।
तह वि मम हुज्ज सेवा, भवे भवे तुम्ह चलणाणं ।।3।।
दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ, समाहिमरणं च बोहिलाभो अ ।
संपज्जउ महएअं, तुह नाह ! पणाम-करणेणं ।।4।।
सर्व मंगल-मांगल्यं, सर्व-कल्याण-कारणम् ।
प्रधानं सर्व-धर्माणां, जैनं जयति शासनम् ।।5।।
इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि.
इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! मुहपत्ति पडिलेहुं ? (गुरू कहे-**पडिलेहेह**) **''इच्छं''.**
(बोलकर मुहपत्ति पडिलेहन कर, खमासमण दे)
इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि.
इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक पारूं (गुरू कहे-**पुणो वि कायव्वं**) **'यथाशक्ति' ।**
इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ।
इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक पार्युं, (गुरू कहे-**आयारो न मोत्तव्वो**)
''तहत्ति''
(दाहिना हाथ चरवले पर रखकर बोले.)
नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो उवज्झायाणं, नमो लोए सव्वसाहूणं, एसो पंच नमुक्कारो, सव्व-पावप्पणासणो, मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं ।

सामाइय वयजुत्तो, जाव मणे होइ नियमसंजुत्तो ।
छिन्नइ असुहं कम्मं, सामाइय जत्तिया वारा ।।1।।
सामाइअंमि उ कए, समणो इव सावओ हवइ जम्हा ।
एएण कारणेणं, बहुसो सामाइयं कुज्जा ।।2।।

सामायिक विधि से लिया, विधि से पारा, विधि करते जो कोई अविधि हुई हो, वह सब मन वचन काया से मिच्छा मि दुक्कडं ।

दश मन के, दश वचन के, बारह काया के, इन बत्तीस दोषों में जो कोई दोष लगा हो, वह सब मन वचन काया से मिच्छा मि दुक्कडं ।।

(गुरु स्थापना की हो तो उत्थापना मुद्रा में एक नवकार बोलकर उत्थापना करे ।)

देवसि प्रतिक्रमण व सामायिक पारने की विधि समाप्त.

आओ ! पर्युषण प्रतिक्रमण करें

4 पाक्षिक एवं संवत्सरी प्रतिक्रमण

(प्रतिष्ठित स्थापनाचार्य न हो तो धार्मिक पुस्तक रखकर गुरू स्थापना मुद्रा में नवकार व पंचिंदिय सूत्र बोलकर गुरू की स्थापना करे ।)

नमो अरिहंताणं ।।1।। नमो सिद्धाणं ।।2।। नमो आयरियाणं ।।3।। नमो उवज्झायाणं ।।4।। नमो लोए सव्वसाहूणं ।।5।। एसो पंच नमुक्कारो ।।6।। सव्वपावप्पणासणो ।।7।। मंगलाणं च सव्वेसिं ।।8।। पढमं हवइ मंगलं ।।9।।

पंचिंदिय-संवरणो, तह नवविह-बंभचेर-गुत्तिधरो ।
चउविह-कसाय-मुक्को, इअ अट्ठारस गुणेहिं संजुत्तो ।।1।।
पंच-महव्वय-जुत्तो, पंच-विहायार-पालण-समत्थो ।
पंच-समिओ तिगुत्तो, छत्तीस गुणो गुरू मज्झ ।।2।।

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि.

(फिर खडे होकर)

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! इरियावहियं पडिक्कमामि, इच्छं, इच्छामि पडिक्कमिउं ।।1।। इरियावहियाए, विराहणाए ।।2।। गमणागमणे ।।3।। पाणक्कमणे, बीयक्कमणे, हरियक्कमणे, ओसा उत्तिंग-पणग-दग, मट्टी-मक्कडा-संताणा-संकमणे, ।।4।। जे मे जीवा विराहिआ, ।।5।। एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया, अभिहया, वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परियाविया, किलामिया, उद्दविया, ठाणाओ ठाणं संकामिया, जीवियाओ ववरोविया, तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।।7।।

तस्स उत्तरी-करणेणं, पायच्छित्त-करणेणं, विसोहीकरणेणं, विसल्लीकरणेणं, पावाणं कम्माणं, निग्घायणट्ठाए ठामि काउस्सग्गं ।।8।।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए पित्तमुच्छाए ।।1।। सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं ।।2।। एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो।।3।। जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ।।4।। ताव कायं, ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं, अप्पाणं, वोसिरामि ।।5।।

(एक लोगस्स का काउस्सग्ग करे, लोगस्स न आता हो, तो चार नवकार गिने, फिर लोगस्स कहे)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्म-तित्थयरे जिणे ।
अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ।।1।।
उसभ-मजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च ।
पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ।।2।।
सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस-वासुपुज्जं च ।
विमल-मणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ।।3।।
कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च ।
वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ।।4।।
एवं मए अभिथुआ, विहुय-रय-मला-पहीणजरमरणा ।
चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ।।5।।
कित्तियवंदियमहिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा ।
आरूग्ग-बोहि-लाभं, समाहि-वर-मुत्तमं दिंतु ।।6।।
चंदेसु निम्मलयरा, आइ-च्चेसु अहियं पयासयरा ।
सागर-वर-गंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ।।7।।

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक मुहपत्ति पडिलेहुं ? (गुरु कहे पडिलेह) **''इच्छं''** (ऐसा बोल कर मुहपत्ति पडिलेहन करे ।)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सामायिक संदिसाहुं ? (गुरु कहे संदिसावेह)

''इच्छं'' इच्छामि खमासमणो वंदिउं, जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक ठाउं ? (गुरु कहे ठावेह) **''इच्छं'' ।**

(इस प्रकार बोल कर हाथ जोडकर एक नवकार गिने ।)

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो उवज्झायाणं, नमो लोए सव्वसाहूणं, एसो पंच नमुक्कारो, सव्वपावप्पणासणो, मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं ।

इच्छकारी भगवन् ! पसाय करी सामायिक दंडक उच्चरावोजी!

(दोनों हाथ जोड़ कर करेमि भंते बोलकर सामायिक की प्रतिज्ञा का स्वीकार करे ।)

करेमि भंते ! सामाइयं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि, जाव नियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं, मणेणं, वायाए, काएणं, न करेमि न कारवेमि, तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ।।

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! बेसणे संदिसाहुं ? (गुरू कहे **'संदिसावेह'**) **''इच्छं''**

इच्छामि खमासमणो । वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् । बेसणे ठाऊं ? (गुरू कहे-**'ठावेह'**) **''इच्छं''**

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सज्झाय संदिसाहुं ? (गुरू कहे-**'संदिसावेह')**

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि !

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सज्झाय करूं ? (गुरू कहे-**'करेह')** **''इच्छं'' ।**

(दोनों हाथ जोड़कर तीन बार नवकार गिने.)

नमो अरिहंताणं ।।1।। नमो सिद्धाणं ।।2।। नमो आयरियाणं ।।3।। नमो उवज्झायाणं ।।4।। नमो लोए सव्वसाहूणं ।।5।। एसो पंच नमुक्कारो ।।6।। सव्वपावप्पणासणो ।।7।। मंगलाणं च सव्वेसिं ।।8।। पढमं हवइ मंगलं ।।9।।

(सामायिक लेने की विधि समाप्त)

◆ इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! मुहपत्ति पडिलेहुं ? ''इच्छं'' । ❑ (मुहपत्ति पडिलेहन कर दो वांदणा दे)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए ।।1।। अणुजाणह, मे मिउग्गहं ।।2।। निसीहि, अ-हो, का-यं, का-य, संफासं खमणिज्जो भे किलामो, अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे, दिवसो वइक्कंतो ? ।।3।। ज-त्ता भे ? ।।4।। ज-व-णि-ज्जं च भे ।।5।। खामेमि खमासमणो, देवसिअं वइक्कम्मं आवस्सिआए ।।6।। पडिक्कमामि खमासमणाणं देवसिआए, आसायणाए, तित्तीसन्नय-

◆ यदि चौविहार उपवास किया हो, तो मुहपत्ति पडिलेहन नहीं करे और वांदणे भी नहीं दे ।

❑ यदि पानी पिया हो, तो सिर्फ मुहपत्ति पडिलेहन करे और यदि भोजन किया हो, तो मुहपत्ति पडिलेहन कर दो वांदणे दे ।

राए जं किंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइआरो कओ, तस्स खमासमणो पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ।।7।।

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए ।।1।। अणुजाणह मे मिउग्गहं ।।2।। निसीहि, अ-हो, का-यं, का-य, संफासं खमणिज्जो भे किलाभो अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे, दिवसो वइक्कंतो ।।3।। ज-त्ता भे ? ।।4।। ज-व-णि ज्जं च भे ।।5।। खामेमि खमासमणो, देवसिअं वइक्कम्मं ।।6।। पडिक्कमामि खमासमणाणं देवसिआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए जं किंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइआरो कओ, तस्स खमासमणो पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ।।7।।

इच्छकारी भगवन् पसायकरी पच्चक्खाण का आदेश देना जी ।
(इसके बाद पच्चक्खखाण ले.)

चउविहार तिविहार का पच्चक्खाण

दिवसचरिमं पच्चक्खाइ (पच्चक्खामि) चउव्विहं पि आहारं, तिविहंपि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्व समाहिवत्तिआगारेणं वोसिरइ / (वोसिरामि) ।।

पाणहार का पच्चक्खाण

पाणहार दिवसचरिमं पच्चक्खाइ / (पच्चक्खामि) अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तिआगारेणं वोसिरइ / (वोसिरामि) ।

चौदह नियम धारने वालों को देसावगासिय का पच्चक्खाण

देसावगासिअं उवभोगं परिभोगं पच्चक्खाइ (पच्चक्खामि) अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ / (वोसिरामि)। (स्वयं को पच्चक्खाण लेना हो तो पच्चक्खामि और वोसिरामि बोले ।)

पक्खी (संवत्सरी) प्रतिक्रमण प्रारंभ

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् चैत्यवंदन करूं ? ''इच्छ''

(बांया घुटना ऊंचा करके चैत्यवंदन बोले.)

सकल-कुशलवल्ली पुष्करावर्त्तमेघो,
दुरिततिमिर-भानुः कल्पवृक्षोपमानः ।
भवजलनिधिपोतः सर्वसंपत्ति-हेतुः
स भवतु सततं वः श्रेयसे शांतिनाथः, श्रेयसे पार्श्वनाथः ।।

सकलार्हत् सूत्र

सकलार्हत्प्रतिष्ठान-मधिष्ठानं शिवश्रियः ।
भूर्भुवः स्वस्त्रयीशान-मार्हन्त्यं प्रणिदध्महे ।।1।।
नामाकृतिद्रव्यभावैः, पुनतस्त्रिजगज्जनं ।
क्षेत्रे काले च सर्वस्मिन्नर्हतः समुपास्महे ।।2।।
आदिमं पृथिवीनाथ-मादिमं निष्परिग्रहं ।
आदिमं तीर्थनाथं च, ऋषभस्वामिनं स्तुमः ।।3।।
अर्हन्तमजितं विश्व-कमलाकरभास्करम् ।
अम्लान-केवलादर्श-संक्रान्त-जगतं स्तुवे ।।4।।
विश्वभव्यजनाराम-कुल्यातुल्या जयन्ति ताः ।
देशनासमये वाचः, श्रीसम्भवजगत्पतेः ।।5।।

अनेकान्तमताम्भोधिः, समुल्लासनचन्द्रमाः ।
ददादमन्दमानन्दं, भगवानभिनन्दनः ।।6।।

द्युसत्किरीटशाणाग्रो-त्तेजिताङ्घ्रिनखावलिः ।
भगवान् सुमतिस्वामी, तनोत्वभिमतानि वः ।।7।।

पद्मप्रभप्रभोर्देह-भासः पुष्णन्तु वःश्रियम् ।
अन्तरङ्गारिमथने, कोपाटोपादिवारूणाः ।।8।।

श्रीसुपार्श्वजिनेन्द्राय, महेन्द्रमहिताङ्घ्रये ।
नमश्चतुर्वर्णसङ्घ, -गगनाभोगभास्वते ।।9।।

चन्द्रप्रभप्रभोश्चन्द्र-मरीचिनिचयोज्ज्वला ।
मूर्तिर्मूर्तसितध्यान-निर्मितेव श्रियेऽस्तु वः ।।10।।

करामलकवद्विश्वं, कलयन् केवलश्रिया ।
अचिन्तमाहात्म्यनिधिः, सुविधिर्बोधयेऽस्तु वः ।।11।।

सत्त्वानां परमानन्द, कन्दोद्भेद-नवाम्बुदः ।
स्याद्वादामृतनिस्यन्दी, शीतलः पातु वो जिनः ।।12।।

भवरोगार्तजन्तूना-मगदङ्कारदर्शनः ।
निःश्रेयसश्रीरमणः, श्रेयांसः श्रेयसेऽस्तु वः ।।13।।

विश्वोपकारकीभूत, तीर्थकृत्कर्मनिर्मितिः ।
सुरासुरनरैः पूज्यो, वासुपूज्यः पुनातु वः ।।14।।

विमलस्वामिनो वाचः, कतकक्षोदसोदराः ।
जयन्ति त्रिजगच्चेतो, जलनैर्मल्यहेतवः ।।15।।

स्वयम्भूरमणस्पर्धि-करूणारसवारिणा ।
अनन्तजिदनन्तां वः, प्रयच्छतु सुखश्रियम् ।।16।।

कल्पद्रुमसधर्म्माण-मिष्टप्राप्तौ शरीरीणाम् ।
चतुर्धा धर्म-देष्टारं, धर्मनाथमुपास्महे ।।17।।

सुधासोदरवाग्ज्योत्स्ना, निर्म्मलीकृतदिङ्मुखः ।
मृगलक्ष्मा तमः शान्त्यै, शान्तिनाथजिनोऽस्तु वः ।।18।।

श्रीकुन्थुनाथो भगवान्, सनाथोऽतिशयर्द्धिभिः ।
सुरासुरनृनाथानामेक नाथोऽस्तु वः श्रिये ।।19।।
अरनाथस्तु भगवां-श्चतुर्थारनभोरविः ।
चतुर्थपुरूषार्थश्री-विलासं वितनोतु वः ।।20।।
सुरासुरनराधीशमयूरनववारिदम् ।
कर्मद्रून्मूलने हस्ति-मल्लं मल्लिमभिष्टुमः ।।21।।
जगन्महामोहनिद्रा, प्रत्यूषसमयोपमम् ।
मुनिसुव्रतनाथस्य, देशनावचनं स्तुमः ।।22।।
लुठन्तो नमतां मूर्ध्नि, निर्मलीकारकारणम् ।
वारिप्लवा इव नमेः, पान्तु पादनखांशवः ।।23।।
यदुवंशसमुद्रेन्दुः, कर्मकक्षहुताशनः ।
अरिष्टनेमिर्भगवान्, भूयाद्वोऽरिष्टनाशनः ।।24।।
कमठे धरणेन्द्रे च, स्वोचितं कर्म कुर्वति ।
प्रभुस्तुल्यमनोवृत्तिः, पार्श्वनाथः श्रियेऽस्तु वः ।।25।।
श्रीमते वीरनाथाय, सनाथायाद्भूतश्रिया ।
महानन्दसरोराज-मरालायार्हते नमः ।।26।।
कृतापराधेऽपि जने, कृपामन्थरतारयोः ।
ईषद्बाष्पार्द्रयोर्भद्रं, श्रीवीरजिननेत्रयोः ।।27।।
जयति विजितान्यतेजाः, सुरासुराधीशसेवितः श्रीमान् ।
विमलस्त्रासविरहितस्, त्रिभुवनचूडामणिर्भगवान् ।।28।।
वीरः सर्वसुरासुरेन्द्रमहितो, वीरं बुधाः संश्रिताः,
वीरेणाभिहतः स्वकर्मनिचयो, वीराय नित्यं नमः ।
वीरात्तीर्थमिदं प्रवृत्तमतुलं, वीरस्य घोरं तपो,
वीरे श्रीधृतिकीर्तिकान्तिनिचयः, श्रीवीर ! भद्रं दिश ।।29।।
अवनितलगतानां, कृत्रिमाकृत्रिमानां,
वरभवनगतानां, दिव्यवैमानिकानाम् ।

इह मनुजकृतानां, देवराजार्चितानां,
जिनवरभवनानां, भावतोऽहं नमामि ।।30।।

सर्वेषां वेधसामाद्य-मादिमं परमेष्ठिनाम् ।
देवाधिदेवं सर्वज्ञं, श्रीवीरं प्रणिदध्महे ।।31।।

देवोऽनेकभवार्जितोर्जितमहा-पापप्रदीपानलो,
देवः सिद्धिवधूविशालहृदया-लङ्कारहारोपमः ।
देवोष्टादशदोषसिन्धुरघटा, निर्भेद पञ्चाननो,
भव्यानां विदधातु वाञ्छितफलं, श्रीवीतरागो जिनः ।।32।।

ख्यातोऽष्टापदपर्वतो गजपदः, सम्मेतशैलाभिधः,
श्रीमान् रैवतकः प्रसिद्धमहिमा, शत्रुंजयो मण्डपः,
वैभारः कनकाचलोर्बुदगिरिः, श्रीचित्रकूटादय-
स्तत्र श्री ऋषभादयो जिनवराः कुर्वन्तु वो मङ्गलम् ।।33।।

जं किंचि नाम तित्थं, सग्गे पायालि माणुसे लोए ।
जाइं जिणबिंबाइं, ताइं सव्वाइं वंदामि. ।।1।।

नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं ।।1।। आइगराणं तित्थयराणं, सयंसंबुद्धाणं ।।2।। पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवर-पुंडरीआणं, पुरिसवर गंधहत्थीणं ।।3।। लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआणं, लोगपईवाणं, लोगपज्जोअगराणं ।।4।। अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं, बोहिदयाणं ।।5।। धम्मदयाणं, धम्मदेसयाणं, धम्मनायगाणं, धम्मसारहीणं, धम्मवरचाउरंत चक्कवट्टीणं ।।6।। अप्पडिहय-वर-नाण-दंसणधराणं, विअट्टछउमाणं ।।7।। जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं।।8।। सव्वन्नूणं, सव्वदरिसीणं, सिव-मयल-मरूअ-मणंत-मक्खय-मव्वाबाह-मपुणरावित्ति सिद्धि-गइ-नामधेयं ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं जिअभ-याणं ।।9।।

जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले,
संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ।।10।। (खडे होकर)

अरिहंतचेइआणं करेमि काउस्सग्गं ।।1।। वंदणवत्तिआए, पुअणत्तिआए सक्कार-वत्तिआए सम्माण-वत्तिआए ।।2।। बोहिलाभ-वत्तिआए, निरूवसग्गवत्तिआए, सद्धाए मेहाए धिइए धारणाए अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं ।।3।।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए पित्तमुच्छाए ।।1।। सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं ।।2।। एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो।।3।। जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ।।4।। ताव कायं, ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि ।।5।।

(एक नवकार का काउस्सग्ग, पार कर **''नमोऽर्हत्-सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्यः''** बोलकर स्तुति बोले ।)

स्नातस्याप्रतिमस्य मेरूशिखरे, शच्या विभोः शैशवे,
रूपालोकन-विस्मयाहृत-रस, -भ्रान्त्या भ्रमच्चक्षुषा ।
उन्मृष्टं नयन-प्रभा-धवलितं, क्षीरोदकाशङ्कया,
वक्त्रं यस्य पुनः पुनः स जयति, श्री वर्द्धमानो जिनः ।।1।।

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्म-तित्थयरे जिणे ।
अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ।।1।।
उसभ-मजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च ।
पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ।।2।।
सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल सिज्जंस वासुपुज्जं च ।
विमल-मणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ।।3।।
कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमि-जिणं च ।
वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ।।4।।
एवं मए अभिथुआ, विहुय-रय-मला पहीण-जर-मरणा ।
चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ।।5।।

कित्तिय-वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा ।
आरूग्ग-बोहिलाभं समाहि-वर-मुत्तमं दिंतु ।।6।।
चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा ।
सागर-वर-गंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ।।7।।

अरिहंत-चेइआणं करेमि काउस्सग्गं ।।1।। वंदणवत्तिआए, पुअणत्तिआए सक्कार-वत्तिआए सम्माण-वत्तिआए ।।2।। बोहिलाभ-वत्तिआए, निरूवसग्गवत्तिआए, सद्धाए, मेहाए, धिइए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए, ठामि काउस्सग्गं ।।3।।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए पित्तमुच्छाए ।।1।। सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं ।।2।। एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो ।।3।। जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ।।4।। ताव कायं, ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि ।।5।।

(एक नवकार का काउस्सग्ग कर फिर स्तुति बोले.)

हंसांसाहत-पद्मरेणु-कपिश-क्षीरार्णवाम्भोभृतैः,
कुम्भैरप्सरसां पयोधर-भर-प्रस्पर्द्धिभिः काञ्चनैः ।
येषां मन्दर-रत्नशैल-शिखरे, जन्माभिषेकः कृतः,
सर्वैः सर्व-सुरासुरेश्वरगणैस्तेषां नतोऽहं क्रमान् ।।2।।

(फिर)

पुक्खर-वर-दीवड्ढे, धायइ-संडे अ जंबुदीवे अ ।
भरहेरवय-विदेहे, धम्माइगरे नमंसामि ।।1।।
तम-तिमिर-पडल-विद्धंसणस्स, सुरगण-नरिंदमहिअस्स ।
सीमाधरस्स वंदे, पप्फोडिअ-मोह-जालस्स ।।2।।
जाइ-जरामरणसोग-पणासणस्स, कल्लाण-पुक्खलविसाल-सुहावहस्स ।
को देव-दाणवनरिंदगणच्चिअस्स । धम्मस्स सार-मुवलब्भ करे पमायं ।।3।।

सिद्धे भो पयओ णमो जिणमए नंदी सया संजमे ।
देव नागसुवन्न-किन्नर-गणस्सब्भुअ-भावच्चिए ।
लोगो जत्थ पइट्ठिओ जगमिणं तेलुक्कमच्चासुरं ।
धम्मो वड्ढउ सासओ विजयओ धम्मुत्तरं वड्ढउ ।।4।।
सुअस्स भगवओ करेमि काउस्सग्गं ।।1।। वंदणवत्तिआए, पूअणवत्तिआए।। सक्कार-वत्तिआए, सम्माण-वत्तिआए, बोहिलाभवत्तिआए, निरूवसग्गवत्तिआए ।।2।। सद्धाए मेहाए धिइए धारणाए अणुप्पेहाएवड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं ।।3।।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए पित्तमुच्छाए ।।1।। सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं ।।2।। एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो ।।3।। जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ।।4।। ताव कायं, ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि ।।5।।

(एक नवकार का काउस्सग्ग कर के पार कर तीसरी स्तुति कहे ।)

अर्हद्वक्त्रप्रसूतं गणधररचितं द्वादशांगं विशालं,
चित्रं बह्वर्थयुक्तं मुनिगणवृषभैर्धारितं बुद्धिमद्भिः ।
मोक्षाग्रद्वारभूतं व्रतचरणफलं ज्ञेयभावप्रदीपं,
भक्त्या नित्यं प्रपद्ये श्रुतमहमखिलं सर्वलोकैकसारम् ।।3।।

(फिर)

सिद्धाणं बुद्धाणं, पारगयाणं परंपरगयाणं ।
लोअग्गमुवगयाणं, नमो सया सव्वसिद्धाणं ।।1।।
जो देवाण वि देवो, जं देवा पंजली नमंसंति ।
तं देवदेव-महिअं, सिरसा वंदे महावीरं ।।2।।
इक्को वि नमुक्कारो, जिणवर वसहस्स वद्धमाणस्स ।
संसार सागराओ, तारेइ नरं व नारि वा ।।3।।

उज्जिंत सेलसिहरे, दिक्खा नाणं निसीहिआ जस्स ।
तं धम्मचक्कवट्टिं, अरिट्ठनेमिं नमंसामि ।।4।।
चत्तारि अट्ठ दस दोय, वंदिया जिणवरा चउव्वीसं ।
परमट्ठ निट्ठिअट्ठा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ।।5।।

वेयावच्चगराणं संतिगराणं सम्मद्दिट्ठिसमाहिगराणं करेमि काउस्सग्गं ।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए पित्तमुच्छाए ।।1।। सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं ।।2।। एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो ।।3।। जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ।।4।। ताव कायं, ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि ।।5।।

(एक नवकार का काउस्सग्ग पार कर **नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः** बोलकर स्तुति बोले ।)

निष्पङ्क-व्योमनील-द्युति-मल-सदृशं, बालचन्द्राभदंष्ट्रं,
मत्तं घटारवेण प्रसृतमदजलं, पूरयन्तं समन्तात् ।
आरूढो दिव्यनागं विचरति गगने, कामदः कामरूपी,
यक्षः सर्वानुभूतिर्दिशतु मम सदा, सर्वकार्येशु सिद्धिम् ।।4।।

(नीचे योगमुद्रा में बैठकर)

नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं ।।1।। आइगराणं तित्थयराणं, सयंसंबुद्धाणं ।।2।। पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवर पुंडरीआणं, पुरिसवर गंधहत्थीणं ।।3।। लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआणं, लोगपईवाणं, लोगपज्जोअगराणं ।।4।। अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं, बोहिदयाणं ।।5।। धम्मदयाणं, धम्मदेसयाणं, धम्मनायगाणं, धम्म-सारहीणं, धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं ।।6।। अप्पडिहय-वरनाण-दंसणधराणं, विअट्ट-छउमाणं ।।7।। जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं ।।8।।

सव्वन्नूणं, सव्वदरिसीणं, सिव-मयल-मरूअ-मणंत-मक्खय-मव्वाबाह-मपुणरावित्ति सिद्धि-गइ-नामधेयं ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं जिअ-भयाणं ।।9।।

जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले,
संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ।।10।।

(फिर)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । भगवान हं ।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ! आचार्य हं ।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ! उपाध्याय हं ।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ! सर्वसाधु हं ।

(हाथ जोडकर, **'इच्छाकारी समस्त श्रावक ने वांदु)'**

इच्छाकारेणं संदिसह भगवन् देवसिय पडिक्कमणे ठाउं ? इच्छं, (दाहिना हाथ चरवले पर रखकर)

सव्वस्स वि देवसिय दुच्चिंतिय दुब्भासिअ दुच्चिट्ठिअ मिच्छा मि दुक्कडं ।

(खडे होकर) **करेमि भंते ! सामाइयं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि, जाव नियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं, मणेणं, वायाए, काएणं, न करेमि, न कारवेमि तस्स भंते ! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, वोसिरामि ।** (फिर)

इच्छामि ठामि काउस्सगं, जो मे देवसिओ अइयारो, कओ, काइओ, वाइओ, माणसिओ, उस्सुत्तो, उम्मग्गो, अकप्पो, अकरणिज्जो, दुज्झाओ, दुव्विचिंतिओ, अणायारो, अणिच्छिअव्वो, असावग-पाउग्गो, नाणे, दंसणे, चरित्ताचरित्ते, सुए, सामाइए, तिण्हं

गुत्तीणं, चउण्हं कसायाणं, पंचण्हमणुव्वयाणं, तिण्हं गुणव्वयाणं, चउण्हं सिक्खावयाणं, बारसविहस्स सावगधम्मस्स, जं खंडिअं जं विराहिअं तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ।।

तस्स उत्तरी-करणेणं, पायच्छित्तकरणेणं, विसोही-करणेणं, विसल्लीकरणेणं, पावाणं कम्माणं, निग्घायणट्ठाए, ठामि काउ-स्सग्गं ।।8।।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए पित्तमुच्छाए ।।1।। सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं ।।2।। एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो ।।3।। जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ।।4।। ताव कायं, ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि ।।5।।

(फिर अतिचार की आठ गाथा का काउस्सग्ग करे, गाथाएं यदि न आती हो, तो आठ नवकार गिने ।)

नाणंमि दंसणंमि अ चरणंमि तवंमि तह य वीरियंमि ।
आयरणं आयारो, इअ एसो पंचहा भणिओ ।।1।।
काले विणए बहुमाणे, उवहाणे तह अनिन्हवणे ।
वंजण अत्थ तदुभए, अट्ठविहो नाण-मायारो ।।2।।
निस्संकिय-निक्कंखिअ, निव्वि-तिगिच्छा अमूढदिट्ठी अ ।
उववुह-थिरीकरणे, वच्छल्ल-पभावणे अट्ठ ।।3।।
पणिहाण-जोग-जुत्तो, पंचहिं समिईहिं तिहिं गुत्तीहिं ।
एस चरित्तायारो, अट्ठविहो होइ नायव्वो ।।4।।
बारसविहंमि वि तवे, सब्भिंतर-बाहिरे कुसल-दिट्ठे ।
अगिलाइ-अणाजीवी, नायव्वो सो तवायारो ।।5।।
अणसण-मूणोअरिआ, वित्ती-संखेवणं रसच्चाओ ।
काय-किलेसो संलीणया, य बज्झो तवो होइ ।।6।।

पायच्छित्तं विणओ, वेयावच्चं तहे व सज्झाओ ।
झाणं उस्सग्गो वि अ, अब्भिंतरओ तवो होइ ।।7।।
अणिगूहिअ-बल-वीरिओ, परक्खमई जो जहुत्त-माउत्तो ।
जुंजइ अ जहा थामं, नायव्वो वीरियायारो ।।8।।

(काउस्सग्ग पार कर लोगस्स बोले ।)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे ।
अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ।।1।।
उसभ-मजिअं च वंदे, संभव-मभिणंदणं च सुमइं च ।
पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ।।2।।
सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस-वासुपुज्जं च ।
विमल-मणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ।।3।।
कुंथुं अरं च मल्लिं वंदे मुणि सुव्वयं नमि जिणं च ।
वंदामि रिट्ठनेमिं पासं तह वद्धमाणं च ।।4।।
एवं मए अभिथुआ, विहुय-रयमला-पहीण-जर-मरणा ।
चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ।।5।।
कित्तिय-वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा ।
आरूग्ग-बोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ।।6।।
चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा ।
सागर-वर-गंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ।।7।।

(फिर तीसरे आवश्यक की मुहपत्ति पडिलेहन कर दो बार वांदणा दे ।)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए ।।1।। अणुजाणह मे मिउग्गहं ।।2।। निसीहि, अ-हो, का-यं, का-य, संफासं खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो ।।3।। ज-त्ता भे ? ।।4।। ज-व-णि ज्जं च भे ।।5।। खामेमि खमासमणो, देवसिअं वइक्कम्मं ।।6।। आवस्सिआए पडिक्कमामि

खमासमणाणं देवसिआए, आसायणाए, तित्तीसन्नयराए जं किंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइआरो कओ, तस्स खमासमणो पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ।।7।।

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए ।।1।। अणुजाणह मे मिउग्गहं ।।2।। निसीहि, अ-हो, का-यं, का-य, संफासं खमणिज्जो भे किलामो, अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे, दिवसो वइक्कंतो ।।3।। ज-त्ता भे ? ।।4।। ज-व-णि ज्जं च भे ।।5।। खामेमि खमासमणो, देवसिअं वइक्कम्मं ।।6।। पडिक्कमामि खमासमणाणं देवसिआए, आसायणाए, तित्तीसन्नयराए जं किंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइआरो कओ, तस्स खमासमणो पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ।।7।।

(फिर खडे होकर)

इच्छाकारेणं संदिसह भगवन् ! देवसिअं आलोउं ?

'इच्छं' आलोएमि, जो मे देवसिओ अइआरो कओ, काइओ, वाइओ, माणसिओ, उस्सुत्तो, उम्मग्गो, अकप्पो, अकरणिज्जो, दुज्झाओ, दुव्विचिंतिओ, अणायारो, अणिच्छिअव्वो, असावगपाउग्गो नाणे दंसणे चरित्ताचरित्ते, सुए सामाइए, तिण्हं गुत्तीणं, चउण्हं कसायाणं पंचण्हमणुव्वयाणं, तिण्हं गुणव्वयाणं चउण्हं सिक्खावयाणं, बारसविहस्स सावग्धम्मस्स, जं खंडिअं जं विराहिअं तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ।

सात लाख पृथ्वीकाय, सात लाख अप्काय, सात लाख तेउकाय, सात लाख वाउकाय, दश लाख प्रत्येक वनस्पतिकाय, चउद लाख साधारण वनस्पतिकाय, बे लाख बेइंद्रिय, बे लाख तेइंद्रिय,

बे लाख चउरिंन्द्रिय, चार लाख देवता, चार लाख नारकी, चार लाख तिर्यंच पंचेन्द्रिय, चौद लाख मनुष्य एवंकारे, चोरासी लाख जीवयोनिमांहे, मारे जीव जे कोइ जीव हण्यो होय, हणाव्यो होय, हणतां प्रत्ये अनुमोद्यो होय, ते सवि हुं मन वचन, कायाए करी तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ।

पहेले प्राणातिपात, बीजे मृषावाद, त्रीजे अदत्तादान, चोथे मैथुन, पांचमे परिग्रह, छट्ठे क्रोध, सातमे मान, आठमे माया, नवमे लोभ, दसमे राग, अग्यारमे द्वेष, बारमे कलह, तेरमे अभ्याख्यान, चौदमे पैशून्य, पन्नरमे रति अरति, सोलमे परपरिवाद, सत्तरमे माया मृषावाद, अढारमे मिथ्यात्व-शल्य, ए अढार पापस्थानकमांहि मारे जीवे जे कोइ पाप सेव्युं होय, सेवराव्युं होय, सेवतां प्रत्ये अनुमोद्युं होय, ते सवि हुं मन, वचन, कायाए करी तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ।

सव्वस्सवि देवसिअ दुच्चिंतिअ दुब्भारिअ, दुच्चिट्ठिअ, इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! इच्छं, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ।।

(बाद में दाहिना घुटना ऊंचा कर बोले ।)

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो उवज्झायाणं, नमो लोए सव्वसाहूणं, एसो पंच नमुक्कारो, सव्वपावप्पणासणो, मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं ।

करेमि भंते ! सामाइयं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि, जाव नियमं पज्जुवासामि, दुविहं, तिविहेणं, मणेणं, वायाए, काएणं, न करेमि न कारवेमि, तस्स भंते ! पडिक्कमामि, निंदामि गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि (फिर)

इच्छामि पडिक्कमिउं, जो मे देवसिओ अइआरो कओ, काइओ, वाइओ, माणसिओ, उस्सुत्तो, उम्मग्गो, अकप्पो, अकरणिज्जो, दुज्झाओ, दुव्विचिंतिओ, अणायारो, अणिच्छिअव्वो, असावगपाउग्गो, नाणे, दंसणे, चरित्ताचरित्ते, सुए, सामाइए, तिण्हं गुत्तीणं, चउण्हं कसायाणं, पंचण्हमणुव्वयाणं, तिण्हं गुणव्वयाणं, चउण्हं सिक्खावयाणं,

बारसविहस्स सावगधम्मस्स, जं खंडिअं, जं विराहिअं, तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

वंदित्तु सव्वसिद्धे, धम्मायरिए अ सव्वसाहू अ ।
इच्छामि पडिक्कमिउं, सावग-धम्माइआरस्स ।।1।।
जो मे वयाइआरो, नाणे तह दंसणे चरिते अ ।
सुहुमो अ बायरो वा, तं निंदे तं च गरिहामि ।।2।।
दुविहे परिग्गहंमि, सावज्जे बहुविहे अ आरंभे ।
कारावणे अ करणे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ।।3।।
जं बद्धमिंदि-एहिं, चउहिं कसाएहिं अप्पसत्थेहिं ।
रागेण व दोसेण व, तं निंदे तं च गरिहामि ।।4।।
आगमणे निग्गमणे, ठाणे चंकमणे अणाभोगे ।
अभिओगे अ निओगे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ।।5।।
संका कंख विगिच्छा, पसंस तह संथवो कुलिंगिसु ।
सम्मत्तस्स-इआरे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ।।6।।
छक्काय-समारंभे, पयणे अ पयावणे अ जे दोसा ।
अत्तट्ठा य परट्ठा, उभयट्ठा चेव तं निंदे ।।7।।
पंचण्ह-मणुव्वयाणं, गुण-व्वयाणं च तिण्ह-मइयारे ।
सिक्खाणं च चउण्हं, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ।।8।।
पढमे अणुव्वयंमि, थूलग-पाणाइवाय-विरइयो ।
आयरिय-मप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ।।9।।
वह-बंध-छविच्छेए, अइभारे भत्तपाणवुच्छेए ।
पढम-वयस्स-इआरे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ।।10।।
बीए अणुव्वयंमि, परिथूलग-अलिय-वयण-विरइओ ।
आयरिय-मप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ।।11।।
सहसा रहस्स-दारे, मोसुवएसे अ कूडलेहे अ ।
बीअ-वयस्सइआरे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ।।12।।

तइए अणुव्वयंमि थूलग-परदव्व-हरण-विरइओ ।
आयरिय-मप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ।।13।।
तेनाहडप्पओगे, तप्पडिरूवे विरुद्ध-गमणे अ ।
कूडतुल-कुडमाणे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ।।14।।
चउत्थे अणुव्वयंमि, निच्चं परदारगमण-विरइओ ।
आयरिय-मप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ।।15।।
अपरिग्गहिआ इत्तर, अणंगविवाह तिव्व अणुरागे ।
चउत्थ वयस्सइआरे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ।।16।।
इत्तो अणुव्वए पंचमंमि, आयरियमप्पसत्थंमि ।
परिमाण-परिच्छेए, इत्थ पमायप्पसंगेणं ।।17।।
धण-धन्न खित्त-वत्थु, रूप्प-सुवन्ने अ कुविअपरिमाणे ।
दुपए चउप्पयंमि य, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ।।18।।
गमणस्स उ परिमाणे, दिसासु उड्ढं अहे अ तिरिअं च ।
वुड्ढि सइ-अंतरद्धा, पढमंमि गुणव्वए निंदे ।।19।।
मज्जंमि अ मंसंमि अ, पुप्फे अ फले अ गंधमल्ले अ ।
उवभोग-परिभोगे, बीयंमि गुणव्वए निंदे ।।20।।
सचित्ते पडिबद्धे, अप्पोलि-दुप्पोलियं च आहारे ।
तुच्छोसहिभक्खणया, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ।।21।।
इंगाली-वण-साडी-भाडी-फोडीसु वज्जए कम्मं ।
वाणिज्जं चेव दंत, लक्ख-रस-केसविसविसयं ।।22।।
एवं खु जंतपिल्लण-कम्मं निल्लंछणं च दवदाणं ।
सर-दह-तलाय-सोसं, असइपोसं च वज्जिज्जा ।।23।।
सत्थग्गि-मुसल-जंतग, तण-कट्ठे-मंत-मूल-भेसज्जे ।
दिन्ने दवाविए वा, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ।।24।।
न्हाणु-व्वट्टण-वन्नग, विलेवणे सद्द-रूव-रस-गंधे ।
वत्थासण-आभरणे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ।।25।।

कंदप्पे कुक्कुइए, मोहरि-अहिगरण-भोग-अइरित्ते ।
दंडंमि अणट्ठाए, तइअंमि गुणव्वए निंदे ।।26।।
तिविहे दुप्पणिहाणे, अणवट्ठाणे तहा सइ विहूणे ।
सामाइअ वितहकए, पढमे सिक्खावए निंदे ।।27।।
आणवणे पेसवणे, सद्दे रूवे अ पुग्गलक्खेवे ।
देसावगासिअंमि, बीए सिक्खावए निंदे ।।28।।
संथारूच्चारविहि, पमाय तह चेव भोय-णाभोए ।
पोसह-विहि-विवरीए, तइए सिक्खावए निंदे ।।29।।
सच्चित्ते निक्खिवणे, पिहिणे ववएस-मच्छरे चेव ।
कालाइक्कम-दाणे चउत्थे सिक्खावए निंदे ।।30।।
सुहिएसु अ दुहिएसु अ, जा मे असंजएसु अणुकंपा ।
रागेण व दोसेण व, तं निंदे तं च गरिहामि ।।31।।
साहूसु संविभागो, न कओ तव-चरण-करण-जुत्तेसु ।
संते फासुअदाणे, तं निंदे तं च गरिहामि ।।32।।
इहलोए परलोए, जीविअ-मरणे अ आसंसपओगे ।
पंचविहो अइयारो, मा मज्झ हुज्ज मरणंते ।।33।।
काएण काइअस्स, पडिक्कमे वाइअस्स वायाए ।
मणसा माणसिअस्स, सव्वस्स वयाइआरस्स ।।34।।
वंदणवय-सिक्खा-गारवेसु, सन्ना कसाय-दंडेसु ।
गुत्तीसु अ समिइसु अ, जो अइआरो अ तं निंदे ।।35।।
सम्मदिट्ठी जीवो, जइवि हु पावं समायरे किं चि ।
अप्पोसि होइ बंधो, जेण न निध्धंधसं कुणइ ।।36।।
तं पि हु सपडिक्कमणं, सप्परिआवं सउत्तरगुणं च ।
खिप्पं उवसामेइ, वाहिव्व सुसिक्खिओ विज्जो ।।37।।
जहा विसं कुट्ठगयं, मंतमूल विसारया ।
विज्जा हणंति मंतेहिं, तो तं हवइ निव्विसं ।।38।।

एवं अट्ठविहं कम्मं, राग-दोस-समज्जिअं ।
आलोअंतो अ निंदंतो, खिप्पं हणइ सुसावओ ।।39।।
कयपावोवि मणुस्सो, आलोइअ निंदिअ गुरूसगासे ।
होइ अइरेग लहुओ, ओहरिअ-भरूव्व भारवहो ।।40।।
आवस्सएण एएण, सावओ जइ वि बहुरओ होइ ।
दुक्खाणमंतकिरिअं, काहि अचिरेण कालेण ।।41।।
आलोअणा बहुविहा, न य संभरिआ पडिक्कमण-काले ।
मूलगुण-उत्तरगुणे, तं निंदे तं च गरिहामि ।।42।।
तस्स धमस्स केवली-पन्नत्तस्स ।।
(खडे होकर)
अब्भुट्ठिओ मि आराहणाए, विरओमि विराहणाए ।
तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ।।43।।
जावंति चेइआइं, उड्ढे अ अहे अ तिरिअ लोए अ ।
सव्वाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइं ।।44।।
जावंत केवि साहू, भरहेरवय-महाविदेहे अ ।
सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंड-विरयाणं ।।45।।
चिर-संचिय-पावपणासणीइ, भव-सय-सहस्स-महणीए ।
चउ-वीस-जिण-विणिग्गयकहाइ, वोलंतु मे दिअहा ।।46।।
मम मंगल-मरिहंता, सिद्धा साहू सुअं च धम्मो अ ।
सम्मदिट्ठी देवा, दिंतु समाहिं च बोहिं च ।।।।47।।
पडिसिद्धाणं करणे, किच्चाणमकरणे अ पडिक्कमणं ।
असद्दहणे अ तहा, विवरीय परूवणाए अ ।।48।।
खामेमि सव्व-जीवे, सव्वे जीव खमंतु मे ।
मित्ती मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झ न केणइ ।।49।।
एवमहं-आलोइअ, निंदिअ-गरहिअ-दुगंछिअं सम्मं ।
तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ।।50।।

पक्खी, चौमासी एवं संवत्सरी प्रतिक्रमण में ध्यान देने योग्य-विशेष-भेद

प्रतिक्रमण सूत्र	पक्खी	चौमासी	संवत्सरी
1) प्रारंभ में मुहपत्ति पडिलेहण	पक्खी मुहपत्ति पडिलेहुं	चौमासी महुपत्ति पडिलेहुं	संवत्सरी मुहपत्ति पडिलेहुं
2) वांदणा सूत्र में	पक्खो वइक्कंतो पक्खिअं वइक्कम्मं पक्खिआए आसायणाए	चउमासीअं वइक्कंता चउमासीअं वइक्कम्मं चउमासीआए आसायणाए	संवच्छरो वइक्कंतो संवच्छरिअं वइक्कम्मं संवच्छरियाए आसायणाए
3) इच्छामि ठामि	पक्खिओ अइआरो	चउमासीओ अइयारो	संवच्छरिओ अइआरो
4) इच्छा .सं.भ. देवसिअ आलोउं	पक्खिअं आलोउं	चउमासीअं आलोउं	संवच्छरिअं आलोउं
5) वंदित्तु	पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं	पडिक्कमे चउमासीअं सव्वं	पडिक्कमे संवच्छरिअं सव्वं
6) अतिचार (गुजराती-हिन्दी)	पक्ष दिवसमांही... पक्ष दिन में...	चउमासी दिवसमांही... चउमासी दिन में...	संवच्छरि दिवसमांही संवच्छरि दिन में...
7) अतिचार के बाद	सव्वस्सवि पक्खिअ...	सव्वस्सवि चउमासीअ...	सव्वस्सवि संवच्छरिअ
8) तप आलोचना	चउत्थेणं भत्तेणं, एक उपवास, दो आयंबिल, तीन निवी, चार एकासणा आठ बियासणा, दो हजार स्वाध्याय	छट्ठेणं भत्तेण दो उपवास, चार आयंबिल छह निवी, आठ एकासणा सोलह बियासणा चार हजार स्वाध्याय	अट्ठम भत्तेण तीन उपवास, छह आयंबिल, नौ निवी, बारह एकासणा चोबीस बियासणा छह हजार स्वाध्याय
9) अब्भुट्ठिओ में पक्खाणं	इच्छं खामेमि पक्खिअं एक पक्खस्स पन्नरस राइं दियाणं जं किंचि...	इच्छं खामेमि चउमासीअं चार मासाणं आठ पक्खाणं एकसो बीस राइं दियाणं जं किंचि...	इच्छ खामेमि संवच्छरिअं बार मासाणं चउवीस तीनसो साठ राइं दियाणं जं किंचि...

फिर **इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ।**

देवसिअ आलोइअ पडिक्कंता इच्छाकारेण संदिसह भगवन्

• **पक्खि (संवच्छरी) मुहपत्ति पडिलेहु ? 'इच्छं'**

(ऐसा बोलकर मुहपत्ति पडिलेहन कर दो बार वांदणा दे ।)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए ।।1।। अणुजाणह, मे मिउग्गहं ।।2।। निसीहि, अ-हो, का-यं, का य, संफासं खमणिज्जो भे किलामो, अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे पक्खो (संवच्छरो) वइक्कंतो ? ।।3।। ज-त्ता भे ? ।।4।। ज-व-णि-ज्जं च भे ।।5।। खामेमि खमासमणो ! पक्खिअं (संवच्छरिअं) वइक्कम्मं ।।6।। आवस्सिआए, पडिक्कमामि खमासमणाणं पक्खिआए (संवच्छरिआए) आसायणाए, तित्तीसन्नयराए जं किंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइआरो कओ, तस्स खमासमणो ! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ।।7।।

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए ।।1।। अणुजाणह मे मिउग्गहं ।।2।। निसीहि, अ-हो, कायं, काय, संफासं खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे पक्खो (संवच्छरो) वइक्कंतो ।।3।। ज-त्ता भे ? ।।4।। ज-व-णिज्जं च भे ।।5।। खामेमि खमासमणो ! पक्खिअं (संवच्छरिअं) वइक्कम्मं ।।6।। पडिक्कमामि खमासमणाणं पक्खिआए, (संवच्छरिआए) आसायणाए, तित्तीसन्नयराए जंकिंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए जो मे अइआरो

• संवत्सरी हो तो **'संवच्छरी मुहपत्ति पडिलेहुं'** बोले ।

वांदणा में संवत्सरी हो तो **'संवच्छरो वइक्कंतो; संवच्छरिअं वइक्कम्मं'** तथा; **'संवच्छरियाए आसायणाए'** बोले ।

चौमासी प्रतिक्रमण हो तो **'चउमासी मुहपत्ति पडिलेहुं'** बोले ।'

चौमासी प्रतिक्रमण हो तो वांदणा में **चउमासीअं वइक्कंता, चउमासिअं वइक्कम्मं, 'चउमासिआए आसायणाए'** बोल ।

कओ, तस्स खमासमणो ! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ।।7।।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! संबुद्धा खामणेणं अब्भुट्ठिओमि अब्भिन्तर ? पक्खिअं (संवच्छरिअं) खामेउं ? (दाहिना हाथ चरवले पर रखकर) **''इच्छं'' खामेमि पक्खिअं [1]एकपक्खस्स पन्नरस राइंदियाणं, जंकिंचि अपत्तिअं परपत्तिअं भत्ते पाणे विणए वेयावच्चे, आलावे, संलावे, उच्चासणे, समासणे, अंतरभासाए, उवरिभासाए, जं किंचि मज्झ विणय-परिहीणं सुहुमं वा बायरं वार तुब्भे जाणह अहं न जाणामि तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ।।**

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पक्खिअं (संवच्छरिअं)

• आलोउं ? ''इच्छं'' आलोएमि जो मे पक्खिओ (संवच्छरिओ)

❑ अइआरो कओ काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ अणायारो अणिच्छिअव्वो असावगपाउग्गो । नाणे दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए सामाइए तिण्हं गुत्तीणं चउण्हं कसायाणं, पंचण्ह-मणुव्वयाणं, तिण्हं गुणव्वयाणं, चउण्हं सिक्खावयाणं, बारसविहस्स सावगधम्मस्स, जं खंडिअं जं विराहिअं तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ।।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! पक्खि (संवत्सरी) अतिचार आलोउं ?

(''इच्छं'' कहकर हिन्दी अथवा गुजराती पाक्षिक अतिचार बोले ।)

---

1. संवच्छरी प्रतिक्रमण में **पक्खिअं** के बदले **संवच्छरिअं** तथा **बारह मासाणं चोवीस पक्खाणं तीन सो साठ राइंदियाणं** जंकिंचि...इस प्रकार बोलना ।
एवं चौमासी प्रतिक्रमण में-चउमासिअं तथा चार मासाणं आठ पक्खाणं एक सो बीस राइंदियाणं जंकिंचि...बोले ।

2. चौमासी प्रतिक्रमण हो तो वांदणा में पक्खो वइक्कंतो के बदले चउमासी वइक्कंता, चउमासिअं वइक्कमं तथा पक्खिअाए आसयणाए के बदले चउमासी आए आसायणाए बोले ।

Note : **• संवत्सरी प्रतिक्रमण में 'संवच्छरीअं आलोउं' बोले । संवत्सरी में पक्खि के बदल 'संवच्छरी' बोले ।**

❑ पक्खिओ के बदले 'संवच्छरीओ' बोले । संवत्सरी प्रतिक्रमण में पक्खि के बदले संवच्छरी अतिचार आलोउं ? बोले । चौमासी प्रतिक्रमण हो तो 'चउमासी अतिचार आलोउं' बोले ।

5 पाक्षिक (संवत्सरी) हिन्दी अतिचार

(हिन्दी)

नाणंमि दंसणंमि अ, चरणंमि तवंमि तह य वीरियंमि ।
आयरणं आयारो, इअ एसो पंचहा भणिओ ।।1।।

ज्ञानाचार, दर्शनाचार, चारित्राचार, तपाचार, वीर्याचार इन पँचविध आचारों में अन्य जो कोई अतिचार पक्ष[1] (संवत्सरी) दिन में सूक्ष्म-बादर जानते-अजानते लगा हो, उन सब का मेरा मन-वचन-काया से मिच्छा मि दुक्कडं ।।1।।

तत्र ज्ञानाचार के आठ अतिचार

काले विणए बहुमाणे, उवहाणे तह अनिण्हवणे ।
वंजण अत्थ तदुभए, अट्ठविहो नाणमायारो ।।2।।

ज्ञान काल वक्त में पढ़ा-गुणा[2] नहीं, अकाल वक्त में पढ़ा, विनयरहित, बहुमानरहित, योग-उपधान रहित पढ़ा । ज्ञान जिनसे पढ़ा उनसे अतिरिक्त को गुरू कहा । देववंदन, गुरूवंदन, प्रतिक्रमण, स्वाध्याय करते, पढ़ते, गुणते गलत अक्षर कहा, काना-मात्रा न्युनाधिक कही । सूत्र गलत कहे, अर्थ गलत कहा, दोनों गलत कहे, पढ़कर भूले । साधुधर्म संबंधी काजा न लेने पर, डंडे का अणपड़िलेहण रहने पर, वसति[3] की शुद्धि किये बिना, योग में प्रवेश किये बिना, असज्झाय-अनध्याय में श्री दशवैकालिक प्रमुख सिद्धांत पढ़ा-गुणा । श्रावक धर्म संबंधी स्थविरावली, प्रतिक्रमण, उपदेशमाला आदि सिद्धांत

---

1. संवत्सरी हो तो पक्ष के बदले संवत्सरी बोले । 2. पुनरावर्तन 3. उपाश्रय

पढ़े, गुणे । काल समय का काजा लिये बिना पढ़ा । ज्ञान के उपकरणः तख्ती, पोथी, स्थापनिका, कवली[1], नवकारवाली, सापड़ा, सापड़ी दस्तरी[2], बही, ओलिया[3] आदि को पैर लगा, थूंक लगा, थूंक से अक्षर मिटाया, तकिया बनाया, पास में होते हुए आहार-निहार किया ।

ज्ञान द्रव्य भक्षण करने पर उपेक्षा की, प्रज्ञापराध होने पर विनाश किया, विनाश होते हुए उपेक्षा की, शक्ति होने पर भी देखरेख न की । ज्ञानी के प्रति द्वेष, मात्सर्य किया, अवज्ञा-आशातना की । किसी के पढ़ने, गुणने में विघ्न डाला । अपनी जानकारी का अभिमान किया । मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपर्यवज्ञान, केवलज्ञान इन पाँच ज्ञान की अश्रद्धा की । किसी तोतले, गूँगे की हँसी की, वितर्क किया, शास्त्र विरूद्ध प्ररूपणा की ।

ज्ञानाचार संबंधी अन्य जो कोई अतिचार पक्ष (संवत्सरी) दिन में सूक्ष्म-बादर जानते-अजानते लगा हो, उन सब का मेरा मन-वचन-काया से मिच्छा मि दुक्कडं ।।2।।

दर्शनाचार के आठ अतिचार,

निस्संकिअ निक्कंखिअ, निव्वितिगिच्छा अमूढ़दिट्ठी अ ।
उववूह-थिरीकरणे, वच्छल्ल-प्पभावणे अट्ठ ।।3।।

देव-गुरू-धर्म के विषय में निःशंकता न की तथा एकांत निश्चय न किया । धर्म संबंधी फल के विषय में निःसंदेह बुद्धि न की । साधु-साध्वी के मल-मलिन शरीर देखकर जुगुप्सा की । कुचारित्री को देखकर चारित्रवान पर अभाव हुआ । मिथ्यात्वियों की पूजा प्रभावना देखकर मूढ़ दृष्टिपना किया तथा संघ में गुणवान की अनुपबृंहणा की । अस्थिरीकरण, अवात्सल्य, अप्रीति, अभक्ति की, अबहुमान किया । तथा देवद्रव्य, गुरूद्रव्य, ज्ञानद्रव्य, साधारणद्रव्य का भक्षण

1. पन्ने की सुरक्षा का साधन । 2. छुटे कागज रखने के लिए पुट्ठे का साधन ।
3. रेखा खींचने की पट्टी ।

किया हो, उपेक्षा की हो, बुद्धि भ्रष्ट होने पर विनाश किया हो, हानि होते हुए उपेक्षा की हो या शक्ति होते हुए सार-संभाल न की तथा साधर्मिक से कलह करके कर्मबंधन किया । अधोती, आठ पड़वाले मुखकोश बांधे बिना भगवान की पूजा की । वासकूंपी, धूपदानी, कलश से प्रतिमाजी को ठपका लगा हो । जिनबिंब हाथ से गिरा हो. श्वासोच्छ्वास लगा । मंदिर उपाश्रय में मल, श्लेश्मादिक लगाया । मंदिर में हास्य, खेल, क्रीड़ा, कुतूहल, आहार-निहार किया, पान-सुपारी, नैवेद्य खायें । स्थापनाचार्यजी हाथ से गिरे या उनका पड़िलेहण विस्मृत हुआ हो । जिनमंदिर संबंधी चौरासी आशातना और गुरू-गुरूणी संबंधी तैंतीस आशातना की हो । गुरू के वचन को तहत्ति करके स्वीकार न किया हो ।

दर्शनाचार विषय में अन्य जो कोई अतिचार पक्ष (संवत्सरी) दिन में सूक्ष्म बादर जानते-अजानते लगा हो, उन सब का मेरा मन-वचन-काया से मिच्छा मि दुक्कडं ।।3।।

चारित्राचार के आठ अतिचार,

पणिहाणजोगजुत्तो, पंचहिं समिईहिं तीहिं गुत्तीहिं ।
एस चरित्तायारो, अट्ठविहो होइ नायव्वो ।।4।।

ईर्यासमिति-बिना देख चले । भाषासमिति-सावद्य वचन बोले । एषणासमिति-तृण, डगल, अन्न-पानी अशुद्ध ग्रहण किया हो । आदानभं-डमत्तनिक्खेवणासमिति-आसन, शयन, उपकरण, मात्रु आदि बिना पूंजे जीवाकुल भूमि पर रखा, लिया हो । पारिष्ठापनिकासमिति-मल-मूत्र, श्लेष्मादिक बिना पूंजे जीवा-कुल भूमि पर परठा हो ।

मनोगुप्ति-मन में आर्त्तध्यान-रौद्रध्यान ध्याये । वचन-गुप्ति-सावद्य वचन बोले । कायगुप्ति-शरीर को पड़िलेहण किये बिना हिलाया, बिना पूंजे बैठे ।

ये अष्ट प्रवचनमाता साधुधर्म में सदैव तथा श्रावक धर्म में सामायिक पौषध लेकर अच्छी तरह से पाली नहीं, खंडना विराधना की हो ।

चारित्राचार विषय में अन्य जो कोई अतिचार पक्ष (संवत्सरी) दिन में सूक्ष्म-बादर जानते-अजानते लगा हो, उन सब का मेरा, मन-वचन-काया से मिच्छा मि दुक्कडं ।।4।।

विशेषतः श्रावक धर्म संबंधी श्री सम्यक्त्व मूल बारह व्रत, सम्यक्त्व के पाँच अतिचार *संका-कंख-विगिच्छा ।*

शंका श्री अरिहंत प्रभु के बल, अतिशय, ज्ञान, लक्ष्मी, गांभीर्यादिक गुण, शाश्वती प्रतिमा, चारित्रवान के चारित्र एवं श्री जिनवचन में संदेह किया ।

आकांक्षा ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर, क्षेत्रपाल, गूगा, दिक्पाल, पादरदेवता, गोत्रदेवता, ग्रहपूजा, गणेश, हनुमान, सुग्रीव, वाली, नाह इत्यादि देश, नगर, ग्राम, गोत्र, नगरी के भिन्न-भिन्न देव-मंदिरों का प्रभाव देखकर, रोग, आतंक, कष्ट के आने पर इस लोक-परलोक के लिए उनको पूजे-माने । सिद्ध-विनायक, जीराउला को माना, इच्छा की । बौद्ध, सांख्यादिक, संन्यासी, भगत, लिंगिये जोगिया, योगी, फकीर, पीर, अन्यदर्शनियों के कष्ट, मंत्र, चमत्कार को देखकर परमार्थ जाने बिना भूले, भ्रमित किए । कुशास्त्र सीखे, सुने । श्राद्ध, संवत्सरी, होली, राखड़ी पूनम, माहीपूनम, अजाएकम, प्रेतदूज, गौरीतीज, गणेशचौथ, नागपंचमी, झीलणाछट्ठी, शीलसप्तमी, दुर्गा अष्टमी, रामनवमी, विजयादशमी, व्रतएकादशी, वत्सद्वादशी, धनतेरस, अनंतचौदश शिवरात्रि, काली चौदश, अमावास्या, आदित्यवार, उत्तरायण नैवेद्य किया । नवोदक याग भोग उतारणे किये, कराये, करते हुए का अनुमोदन किया । पिपल में पानी डाला, डलवाया । घर-बाहर, खेत-खलियान, कुआँ, तालाब, नदी, द्रह, बावड़ी, समुद्र, कुण्ड में पुण्य निमित्त स्नान किया, करवाया, अनुमोदन किया, दान दिया । ग्रहण, शनिश्चर, माघमास तथा नवरात्रि में स्नान किया । अज्ञानियों के द्वारा स्थापित अन्य अन्य व्रतादि किये, करवाये ।

वितिगिच्छा–धर्म संबंधी फल में संदेह किया । जिन, अरिहंत, धर्म के आगार, विश्वोपकार सागर, मोक्षमार्ग के दातार इत्यादि गुणयुक्त माना नहीं, पूजा नहीं की । महासती, महात्मा की इहलोक-परलोक संबंधी भोगवांछित पूजा की । रोग, आतंक, कष्ट के आने पर क्षीणवचन बोला, भोग धरे, मानता मानी ।

महात्मा के आहार-पानी, मल, शोभा की निंदा की । कुचारित्री को देखकर चारित्रवान् पर अभाव हुआ । मिथ्यादृष्टि की पूजा प्रभावना देखकर प्रशंसा की, प्रीति की । दाक्षिण्यता से उसका धर्म माना, किया ।

श्री सम्यक्त्व व्रत विषय में अन्य जो कोई अतिचार पक्ष (संवत्सरी) दिन में सूक्ष्म-बादर जानते-अजानते लगा हो, उन सब का मेरा मन-वचन-काया से मिच्छा मि दुक्कडं ।।5।।

पहले स्थूल प्राणातिपात विरमण व्रत के पाँच अतिचार वहबंध छविच्छेए ।

द्विपद, चतुष्पद जीव के प्रति क्रोधवश गहरा घाव लगाया, जकड़कर बांधा, अधिक बोझ डाला, निर्लांछनकर्म किया, घास-पानी की समय पर सार-संभाल न की, लेन-देन में किसी का उल्लंघन किया हो, उसे भूखा रखकर स्वयं खाया, पास में रहकर मरवाया, कैद करवाया । सड़े हुए अनाज को धूम में सुखाया, पीसवाया, दलाया, शोधे बिना काम में लिया । ईंधन, उपले बिना शोधे जलाये । उसमें सर्प, बिच्छु, कानखजूरा, सरवला, खटमल, जुआ, गींगोड़ा आदि जीवों का पकड़ते हुए नाश हुआ, उनको दुःखी किया, उनको अच्छी जगह पर न रखा । चींटी, मकोड़ी के अंडे का वियोग किया, लीख मारी, दीमड, चींटी, मकोड़ी, घीमेल, लिढ़े, चूड़ेल, पतंगा, मेंढ़क, केंचुआ, लट, कुंतूए, मच्छर, मसा, बगतरा, मक्खी, टिड्डी इत्यादि जीवों का विनाश किया । घोंसले को हिलाते-डुलाते, पक्षी, चिड़ियाँ, कौए के अंडे फोड़े और भी एकेन्द्रिय आदि जीवों का विनाश किया, दबाया, दुःखी किया हो ।

कुछ हिलाते डुलाते, पानी छांटते, अन्य कामकाज करते निर्दयता की । भली प्रकार से जीवरक्षा न की, संखार[3] को सुखाया । अच्छी तरह से गरणा न रखा । बिना छाना हुआ पानी काम में लिया । अच्छी तरह से जयणा न की । बिना छाने पानी से स्नान किया, कपड़े धोये । चारपाई धूप में रखी, डंडे आदि से झटकायी । जीव संसक्त जमीन को लीपा । बासी गोबर रखा । दलते-कूटते, लिंपते, भली प्रकार से यतना न की । अष्टमी-चतुर्दशी के नियम तोड़े । धूनी करवाई ।

पहले स्थूल प्राणातिपात विरमण व्रत विषय में अन्य जो कोई अतिचार पक्ष (संवत्सरी) दिन में सूक्ष्म-बादर जानते-अजानते लगा हो, उन सब का मेरा, मन-वचन-काया से मिच्छा मि दुक्कडं ।।1।।

दूसरे स्थूल मृषावाद विरमण व्रत के पाँच अतिचार सहसा रहस्सदारे.

सहसात्कारे– किसी पर अयोग्य कलंक लगाया । स्वस्त्री संबंधी गुप्त बात प्रगट की, अन्य किसी का मंत्र, आलोच मार्ग प्रगट किया । किसी का बुरा करने के लिए झूठी सलाह दी, झूठा लेख लिखा, झूठी साक्षी दी । अमानत में खयानत की । कन्या, गाय, पशु, भूमि संबंधी लेन-देन व्यवसाय में, लड़ते-झगड़ते, वाद विवाद में बड़ा झूठ बोला, हाथ-पैर की गाली दी, तिरस्कार पूर्वक कड़ाके किये, मर्म वचन बोले ।।

दूसरे स्थूल मृषावाद विरमण व्रत विषय में अन्य जो कोई अतिचार पक्ष (संवत्सरी) दिन में सूक्ष्म-बादर जानते-अजानते लगा हो, उन सब का मेरा, मन-वचन-काया से मिच्छामि दुक्कडं ।।2।।

तीसरे स्थूल अदत्तादान विरमण व्रत के पाँच अतिचार- तेनाहडप्पओगे.

घर, बाहिर, खेत, खलियान में नहीं भेजी हुई पराई वस्तु ग्रहण की, उपयोग में ली । चोरी का माल खरीदा । चोर-डाकू को

संकेत दिया, उसे सहारा दिया, उसकी वस्तु ली । राज्य-नियम से विरूद्ध वर्तन किया । नई-पुरानी, सरस-विरस, सजीव-निर्जीव वस्तु का मिश्रण किया । झूठे वजन, तोल-मान-माप से खरीदा । करचोरी की । किसी को हिसाब-किताब में ठगा । बदले में रिश्वत ली । झुठा बटाव लिया । विश्वासघात किया । अन्य को ठगा । तराजू के पलड़े विषम रखे । तराजू में शृंखला चढ़ाई । बात-बात में गलत तोल-मान-माप किया । माता-पिता, पुत्र, मित्र, पत्नी के साथ ठगी कर अन्य किसी को दिया । पूंजी अलहदा रखी । किसी की धरोहर वस्तु न लौटाई । हिसाब किताब में किसी को भूलाया । पड़ी हुई वस्तु छिपाई ।।

तीसरे स्थूल अदत्तादान विरमण व्रत विषय में अन्य जो कोई अतिचार पक्ष (संवत्सरी) दिन में सूक्ष्म-बादर जानते-अजानते लगा हो, उन सब का मेरा मन-वचन-काया से मिच्छा मि दुक्कडं ।।3।।

चौथे स्वदारासंतोष परस्त्रीगमन विरमण व्रत के पाँच अतिचार अपरिग्गहियाइत्तर.

अपरिगृहीतागमन, इत्वरपरिगृहीतागमन किया । विधवा, वेश्या, परस्त्री, कुलांगना, स्वपत्नी, सौतन के विषय में अनुचित दृष्टि डाली, सरागवचन बोले । अष्टमी, चतुर्दशी अन्य पर्वतिथि का नियम लेकर तोड़ा । नाते किये, कराये । वर-वधू की प्रशंसा की । कुविकल्प का चिंतन किया । अनंगक्रीड़ा की । स्त्री के अंगोपांग देखे । दूसरों के विवाह जोड़े । गुड्डे-गुड्डियों का विवाह रचाया । काम-भोग के विशय में तीव्र अभिलाष किया । अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार, स्वप्न-स्वप्नांतर में हुआ । कुस्वप्न आये । नट, विट, स्त्री से हास्य किया ।

चौथे स्वदारासंतोष-परस्त्रीगमन विरमण व्रत विषय में अन्य जो कोई अतिचार पक्ष (संवत्सरी) दिन में सूक्ष्म-बादर जानते-अजानते लगा हो, उन सब का मेरा, मन-वचन-काया से मिच्छा मि दुक्कडं ।।4।।

पाँचवें स्थूल परिग्रह परिमाण व्रत के पाँच अतिचार-धन धन्न खित्त वत्थू ।

धन, धान्य, क्षेत्र, वास्तु, चांदी, सोना, तांबा-पीतल, द्विपद, चतुष्पद इन नौ प्रकार के परिग्रह के नियम के उपरांत वृद्धि देखकर मूर्च्छा से संक्षेप न किया । माता–पिता, पुत्र, स्त्री के नाम किया । परिग्रह परिमाण लिया नहीं, लेकर याद न रखा, पढ़ना भूला । हिसाब लिये बिना ही धन-परिग्रह में शामिल किया । नियम भूले ।

पाँचवें परिग्रह परिमाणव्रत विषय में अन्य जो कोई अतिचार पक्ष (संवत्सरी) दिन में सूक्ष्म-बादर जानते-अजानते लगा हो, उन सब का मेरा, मन-वचन-काया से मिच्छा मि दुक्कडं ।।5।।

छट्ठे दिक्परिमाण व्रत के पाँच अतिचार गमणस्स उ परिमाणे.

ऊर्ध्वदिशा, अधोदिशा, तिर्च्छिदिशा में जाने-आने के नियम लेकर तोड़े । अनजान में भूल जाने से नियम से अधिक भूमि गये । भेजने योग्य वस्तु आगे पीछे भेजी । जहाज द्वारा व्यापार किया । वर्षाकाल में एक गाँव से दूसरे गाँव गये । एक दिशा की भूमि के प्रमाण को कम करके दूसरी दिशा के प्रमाण को अधिक किया ।

छट्ठे दिक्परिमाण व्रत के विषय में अन्य जो कोई अतिचार पक्ष (संवत्सरी) दिन में सूक्ष्म-बादर जानते-अजानते लगा हो, उन सब का मेरा, मन-वचन-काया से मिच्छा मि दुक्कडं ।।6।।

सातवें भोगोपभोग परिमाण व्रत के भोजन संबंधित पाँच अतिचार एवं कर्मादान संबंधित पन्द्रह अतिचार, इस प्रकार बीस अतिचार-सचित्ते पडिबद्धे ।

सचित्त का नियम लेकर अधिक सचित्त लिया । अपक्व आहार, दुष्पक्व आहार, तुच्छ औषधि का भक्षण किया । ओले भुट्टे, पोंक, फलियाँ खाई ।

सचित्त-दव्व-विगइ-वाणह-तंबोल-वत्थ-कुसुमेसु ।
वाहण-सयण-विलेवण-बंभ-दिसी-न्हाण-भत्तेसु ।।1।।

ये चौदह नियम दिन और रात्रि संबंधित लिये नहीं, लेकर भंग किये। बाईस अभक्ष्य, बत्तीस अनंतकाय में से अदरक, मूली, गाजर, प्याज, कचुर, सुरन, कोमल इमली, गिलोय, वाघरड़े खाये। बासी, दलहन-पूरणपूरी-रोटी खाई, तीन दिन के चावल खाये। शहर, महुआ, मक्खन, मिट्टी, बैंगन, पीलु, पीचु, पंपोटा, विष, बर्फ, ओले, द्विदल, अनजाने फल, टींबरू, गुंदे, मंजरी, बोलअचार, खट्टे बोर, कच्चा नमक, तिल, खसखस, कोठिंबड़े खाये। रात्रिभोजन किया। सूर्यास्त के समय भोजन किया। सूर्योदय से पूर्व नाश्ता किया।

तथा कर्मतः पन्द्रह कर्मादान-

इंगालकम्मो, वणकम्मे, साडिकम्मे, भाडिकम्मे, फोडिकम्मे, ये पाँच कर्म।

दंतवाणिज्जे, लक्खवाणिज्जे, रसवाणिज्जे, केसवाणिज्जे, विसवाणिज्जे ये पाँच वाणिज्य।

जंतपिल्लणकम्मे, निल्लंछणकम्मे, दवग्गिदावणया, सरदह-तलायसोसणया, असई-पोसणया ये पाँच सामान्य।

ये पाँच कर्म, पाँच वाणिज्य, पाँच सामान्य इस प्रकार पन्द्रह कर्मादान। अधिक पापवाले महाहिंसक, रंगाई एवं कोयले के काम करवाये, ईंट भट्टी पकाई। फुले, चने, पकवान कर बेचे। बासी मक्खन को गरम किया। तिल लिये, फाल्गुन मास उपरांत तिल को रखे, तिलकुट बनाया। सिगड़ी करवाई। श्वान, बिल्ली, तोता, मैना आदि पोषे। अन्य जो कोई अधिक पापवाले कठोर काम किये। बासी गोबर रखा। लिपाई, पोताई का महारंभ किया। प्रमार्जन किये बिना चुल्हा सलगाया। घी, तेल, गुड़, छाछ आदि के बर्तन खुले रखे, उसमें मक्खी, कुंति, चूहा, छिपकली, चींटी पड़ी, उसकी जयणा न की।

सातवें भोगोपभोग व्रत के विषय में अन्य जो कोई अतिचार

पक्ष (संवत्सरी) दिन में सूक्ष्म-बादर जानते-अजानते लगा हो, उन सब का मेरा, मन-वचन-काया से मिच्छा मि दुक्कडं ।।7।।

आठवें अनर्थदंड विरमण व्रत के पाँच अतिचार-कंदप्पे कुक्कुडए ।

काम वासना से विट चेष्टा, हास्य, खेल, कुतूहल किया । पुरूष-स्त्री के हाव-भाव, रूप, शृंगार, विषयरस की प्रशंसा की । राजकथा, भक्तकथा, देशकथा, स्त्रीकथा की । दूसरों की पंचायत की तथा चुगलखोरी की । आर्तध्यान रौद्रध्यान धाये । तलवार, छोटी छूरी, म्यान, कुल्हाड़ी, रथ, उखल, मुसल, अग्नि, चक्की, खरल, दंताली आदि हिंसक साधन इकट्ठे कर दाक्षिण्य से मांगे, दिये । पापोपदेश दिया ।

अष्टमी, चतुर्दशी के दिन कूटने, पीसने का नियम तोड़ा । वाचालता से अघटित वाक्य कहा । प्रमादाचरण सेवन किया । हल्दी आदि का उबटन करने में, स्नान करने में, दन्त मंजन करे में, पैर धोने में, बलगम, जल, तेल का छिंटकाव किया । तालाब में स्नान किया ।

जुआ खेला । झुले में झुला । नाटक-चेटक देखा । कण, कुवस्तु, पशु खरीदवाये । कठोर वचन बोले । आक्रोश किया । बोल-चाल बंद की । कड़ाके किये । मात्सर्य धारण किया । परस्पर झगड़ा करवाया । श्राप दिये ।

भैंसा, सांढ, बकरा, मुर्गा, कुत्ते आदि को लड़वाये, लड़ते हुऐ देखा, हार जाने से ईर्ष्या की । मिट्टी, नमक, धान, बिनौले आदि को बिना कारण दबाये, उन पर बैठें । हरी वनस्पति को कुचली । सूई-शस्त्र आदि बनवाये । अधिक निद्रा की । राग-द्वेष से एक के लिए समृद्धि परिवार की इच्छा की, एक के लिए मृत्यु-हानि की इच्छा की ।

आठवें अनर्थदंड विरमण व्रत विषय में अन्य जो कोई अतिचार पक्ष (संवत्सरी) दिन में सूक्ष्म-बादर जानते-अजानते लगा हो, उन सब का मेरा, मन-वचन-काया से मिच्छा मि दुक्कडं ।।8।।

नौवें सामायिक व्रत के पाँच अतिचार-**तिविहे दुप्पणिहाणे.**

सामायिक लेकर मन में जैसे-तैसे संकल्प-विकल्प किए, सावद्य वचन बोले, प्रतिलेखन किये बिना शरीर हिलाया । समय होते हुए सामायिक न किया । सामायिक में खुले मुँह बोला । नींद आई । विकथा, घर संबंधी चिंता की । बिजली या दीपक का प्रकाश पड़ा । दाने, कपास, मिट्टी, नमक, खड़ी, धावड़ी, अरणेट्टक, पाषाण आदि का स्पर्श हुआ । पानी, पाँच वर्णों की कांई, वनस्पति, बीज के जीव इत्यादि का स्पर्श हुआ । स्त्री-तिर्यंच का निरंतर-परंपर स्पर्श हुआ । मुहपत्ति का उत्संघट्टन हुआ । समय से पूर्व सामायिक पारा, पारना भूला ।

नौवें सामायिक व्रत विषय में अन्य जो कोई अतिचार पक्ष (संवत्सरी) दिन में सूक्ष्म-बादर जानते-अजानते लगा हो, उन सब का मेरा, मन-वचन-काया से मिच्छा मि दुक्कडं ।।9।।

दसवें देशावगासिक व्रत के पाँच अतिचार

आणवणे पेसवणे० आणवणप्पओगे, पेसवणप्पओगे, सद्दाणुवाई, रूवाणुवाई, बहियापुग्गलपक्खेवे ।।

नियमित भूमि में बाहर से कुछ वस्तुएँ मंगवाई, अपने पास से कुछ बाहर भिजवाई अथवा रूप दिखाकर, कंकरादि फेंककर, खूँखारादि शब्द करके अपना होना मालूम किया ।।

दसवें देशावगासिक व्रत विषय में अन्य जो कोई अतिचार पक्ष (संवत्सरी) दिन में सूक्ष्म-बादर जानते-अजानते लगा हो, उन सब का मेरा, मन-वचन-काया से मिच्छा मि दुक्कडं ।।10।।

ग्यारहवें पौषधोपवास व्रत के पाँच अतिचार संथारूच्चारविहि.

अप्पडिलेहिअ-दुप्पडिलेहिअ-सिज्जासंथाराए, अप्पडिलेहिअ दुप्पडिलेहिअ-उच्चारपासवण भूमि ।

पौषध लेकर संथारे की भूमि न पूंजी, लघुनीति व बड़ीनीति की । बाहर की भूमि दिन में जांच नहीं की, पडिलेहण नहीं किया,

बिना पूंजे पेशाब किया, बिना पूंजी हुई भूमि में परठा । परठते समय 'अणुजाणह जस्सुग्गहो' न कहा । परठने के बाद तीन बार 'वोसिरे वोसिरे' न कहा । पौषधशाला में प्रवेश करते हुए 'निसीहि', बाहर निकलते 'आवस्सही' तीन बार न कही । पृथ्वी, अप्, तेउ, वायु, वनस्पति, त्रसकाय का स्पर्श, परिपात, उपद्रव हुआ । संथारा पोरिसी की विधि पढ़ानी भूलाई । पोरिसी में नींद ली । अविधि से संथाला बिछाया । पारणादि की चिंता की । काल समय पर देववंदन न किया, प्रतिक्रमण न किया । पौषध देरी से लिया और जल्दी से पारा । पर्व तिथि में पौषध न लिया ।

ग्यारहवें पौषधोपवास व्रत विषय में अन्य जो कोई अतिचार पक्ष (संवत्सरी) दिन में सूक्ष्म-बादर जानते-अजानते लगा हो, उन सब का मेरा मन-वचन-काया से मिच्छा मि दुक्कडं ।।11।।

बारहवें अतिथि संविभाग व्रत के पाँच अतिचार-सचित्ते निक्खिवणे.

सचित्त वस्तु का ऊपर या नीचे स्पर्श होते हुए भी साधु-साध्वीजी को अशुद्ध दान दिया । देने की बुद्धि से सदोष वस्तु को निर्दोष कही । पराई वस्तु अपनी कही । न देने की बुद्धि से निर्दोष वस्तु को सदोष कही । अपनी वस्तु पराई कही । गोचरी के वक्त इधर-उधर को सदोष कही । अपनी वस्तु पराई कही । गोचरी के वक्त इधर-उधर हो गया । बेवक्त साधु महाराज के गोचरी लेने गया, मात्सर्य से दान दिया । आये हुए गुणवान की भक्ति न की । शक्ति के होते हुए भी साधर्मिक वात्सल्य न किया । क्षीण होते हुए अन्य धर्मक्षेत्रों का शक्ति होने पर भी उद्धार न किया । दीन दुःखी को अनुकंपा दान न दिया ।

बारहवें अतिथि संविभाग व्रत विषय में अन्य जो कोई अतिचार पक्ष (संवत्सरी) दिन में सूक्ष्म-बादर जानते-अजानते लगा हो, उन सब का मेरा, मन-वचन-काया से मिच्छा मि दुक्कडं ।।12।।

संलेषणा के पाँच अतिचार इहलोक परलोए.

इहलोगासंसप्पओगे, परलोगासंसप्पओगे, जीविआसं सप्पओगे, मरणासंसप्पओगे, कामभोगासंसप्पओगे ।।

धर्म के प्रभाव से इस लोक संबंधी राजऋद्धि, सुख, सौभाग्य, परिवार की इच्छा की । परलोक में देव, देवेन्द्र विद्याधर, चक्रवर्ती के पद की इच्छा की । सुख आने पर जीने की इच्छा की । दुःख आने पर मरने की इच्छा की । काम-भोग की इच्छा की ।।

संलेषणा व्रत विषय में अन्य जो कोई अतिचार पक्ष (संवत्सरी) दिन में सूक्ष्म-बादर जानते-अजानते लगा हो, उन सब का मेरा मन-वचन-काया से मिच्छा मि दुक्कडं ।।13।।

तपाचार के बारह भेद छ बाह्य, छ अभ्यंतर-अणसण मूणोअरिया०

अनशन-शक्ति के होते हुए पर्वतिथि को उपवासादि न किया । ऊणोदरीव्रत-पाँच, सात कवल कम न खाये । वृत्तिसंक्षेप द्रव्य आदि सर्व वस्तु का संक्षेप न किया । रसत्याग-विगई त्याग न किया । कायक्लेश-लोचादि कष्ट सहन न किया । संलीनता अंगोपांग संकोच न किया । पच्चक्खाण भंग किया । हिलते हुए बाजोट को स्थिर न किया । गंठसी, पोरिसी, साढपोरिसी, पुरिमुड्ढ़, एकासना, बियासना, नीवि, आयंबिल इत्यादि पच्चक्खाण पारना भूला । बैठते समय नवकार न गिना । उठते समय पच्चक्खाण करना भूला । गंठसी का भंग किया । नीवि, आयंबिल, उपवासादि तप करके कच्चा पानी पिया, वमन हुआ ।

बाह्य तप विषय में अन्य जो कोई अतिचार पक्ष (संवत्सरी) दिन में सूक्ष्म-बादर जानते-अजानते लगा हो, उन सब का मेरा मन-वचन-काया से मिच्छा मि दुक्कडं ।।14।।

अभ्यंतर तप-

पायच्छित्तं विणओ० शुद्ध अंतः करणः पूर्वक गुरू के पास

आलोचना न ली । गुरू के द्वारा दिया हुआ प्रायश्चित्त-तप सांगोपांग पूर्ण न किया । देव, गुरू, संघ, साधर्मिक का विनय न किया । बाल, वृद्ध, ग्लान, तपस्वी आदि की वैयावच्च न की । वाचना, पृच्छना, परावर्तना, अनुप्रेक्षा, धर्मकथा लक्षण पाँच प्रकार का स्वाध्याय न किया । धर्मध्यान, शुक्लध्यान न ध्याये । आर्त्तध्यान, रौद्रध्यान ध्याये । कर्मक्षय निमित्त दस-बीस लोगस्स का काउस्सग्ग न किया ।

अभ्यंतर तप विषय में अन्य जो कोई अतिचार पक्ष (संवत्सरी) दिन में सूक्ष्म-बादर जानते-अजानते लगा हो, उन सब का मेरा मन-वचन-काया से मिच्छा मि दुक्कडं ।।15।।

वीर्याचार के तीन अतिचार

अणिगूहिअबलवीरिओ.

पढ़ते, गुणते, विनय, वैयावच्च, देवपूजा, सामायिक, पौषध, दान, शील, तप, भावनादिक धर्मकृत्य में शक्ति होने हुए भी मन-वचन-काया का बल, वीर्य छुपाया । विधिपूर्वक पंचांग खमासमण न दिया । वांदणा की आवर्त्त विधि को भली प्रकार से न की । अन्यचित्त, निरादर से बैठा । देववंदन, प्रतिक्रमण में जल्दी की ।

वीर्याचार विषय में अन्य जो कोई अतिचार पक्ष (संवत्सरी) दिन में सूक्ष्म-बादर जानते-अजानते लगा हो, उन सब का मेरा, मन-वचन-काया से मिच्छा मि दुक्कडं ।।16।।

नाणाइ अट्ठ पइवय, सम्मसंलेहण पण पन्नर कम्मेसु ।

बारस तव वीरिअतिगं, चउव्वीससयं अइयारा ।।

पडिसिद्धाणं करणे प्रतिषेध-अभक्ष्य, अनंतकाय, बहुबीज का भक्षण किया, महारंभ, परिग्रहादि किया । जीवाजीवादिक सूक्ष्म विचार की श्रद्धा न की । अपनी कुमति से उत्सूत्र प्ररूपणा

की । तथा प्राणातिपात, मृषावाद, अदत्तादान, मैथुन, परिग्रह, क्रोध, मान, माया, लोभ, राग, द्वेष कलह, अभ्याख्यान, पैशुन्य, रति-अरति, परपरिवाद, मायामृषावाद, मिथ्यात्वशल्य-ये अट्ठारह पापस्थानक किये, करवाये, अनुमोदे हो ।

दिन कृत्य-प्रतिक्रमण, विनय, वैयावच्च न किया और भी जो कुछ वीतराग की आज्ञा विरूद्ध किया, करवाया या अनुमोदन किया हो, इन चार प्रकारों में अन्य जो कोई अतिचार पक्षदिन में सूक्ष्म-बादर जानते अजानते लगा हो, उन सब का मेरा मन-वचन-काया से मिच्छा मि दुक्कडं ।।7।।

इस प्रकार श्रावकधर्म में श्री सम्यकत्व मूल बाहर व्रत, उसके एक सौ चौबीस अतिचारों में से अन्य जो कोई अतिचार पक्ष (संवत्सरी) दिन में सूक्ष्म-बादर जानते-अजानते लगा हो, उन सब का मेरा, मन-वचन-काया से मिच्छा मि दुक्कडं ।।4।।

(श्रावक के पाक्षिक,
सांवत्सरिक अतिचार समाप्त)

6 पाक्षिक (संवत्सरी) गुजराती अतिचार

नाणंमि दंसणम्मि अ, चरणम्मि तवम्मि तह य वीरियम्मि ।
आयरणं आयारो, इअ एसो पंचहा भणिओ ।।1।।

ज्ञानाचार दर्शनाचार चारित्राचार तपाचार वीर्याचार ए पंचविध आचारमांहि अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष (संवत्सरी) 卐दिवस मांहि सूक्ष्म बादर जाणतां अजाणतां हुओ होय, ते सवि मन वचन कायाए करी मिच्छा मि दुक्कडं 1.

तत्र ज्ञानाचारे आठ अतिचार–

काले विणए बहुमाणे, उवहाणे तह अनिण्हवणे ।
वंजण अत्थ तदुभए, अट्ठविहो नाणमायारो ।।1।।

ज्ञान काळवेळाए भण्यो-गण्यो नहीं, अकाळे भण्यो. विनयहीन, बहुमानहीन, योग-उपधानहीन, अनेरा कन्हे भणी अनेरो गुरु कह्यो । देव-गुरु वांदणे, पडिक्कमणे, सज्झाय करतां, भणतां गणतां, कूडो अक्षर काने मात्राए अधिको-ओछो भण्यो । सूत्र कूडुं कह्युं, अर्थ कूडो कह्यो, तदुभय कूडां कह्यां, भणीने विसार्यां ।

साधुतणे धर्मे काजो अणउद्धर्ये, दांडो अणपडिलेहे, वसति अणशोधे अणपवेसे, असज्झाय अणोज्झायमांहे श्रीदशवैकालिक प्रमुख सिद्धांत भण्यो-गुण्यो । श्रावकतणे धर्मे स्थविरावलि, पडिक्कमणां, उपदेशमाळा, प्रमुख सिद्धांत भण्यो-गुण्यो । काळवेळाए काजो अणउद्धर्ये पढ्यो. ज्ञानोपगरण-पाटी, पोथी, ठवणी, कवळी, नवकारवाळी, सापडा, सापडी, दस्तरी, वही, कागळिया ओलिया

卐 Note : संवत्सरी हो तो संवत्सरी दिवसमांही' बोले ।

प्रमुख प्रत्ये पग लाग्यो, थूंक लाग्युं, थूंके करी अक्षर भांज्यो, ओशीसे धर्यो, कने छतां आहार निहार कीधो । ज्ञानद्रव्य भक्षतां उपेक्षा कीधी. प्रज्ञापराधे विणाश्यो, विणसतां उवेख्यो, छती शक्तिए सार-संभाळ न कीधी, ज्ञानवंत प्रत्ये द्वेष मत्सर चिंतव्यो । अवज्ञा-आशातना कीधी । कोइ प्रत्ये भणतां-गणतां अंतराय कीधो । आपणा जाणपणातणो गर्व चिंतव्यो. मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपर्यवज्ञान, केवलज्ञान ए पंचविध ज्ञानतणी असद्दहणा कीधी । कोइ तोतडो बोबडो देखी हस्यो, वितर्क्यो । अन्यथा प्ररूपणा कीधी.

ज्ञानाचार विषइओ अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष-(संवत्सरी) दिवस.1.

दर्शनाचारे आठ अतिचार–

निस्संकिअ निक्कंखिय, निव्वितिगिच्छा अमूढदिट्ठी अ ।
उववूह थिरीकरणे, वच्छल्लपभावणे अट्ठ ।।2।।

देव गुरू धर्म तिमे विषे निःशंकपणुं न कीधुं तथा एकांत निश्चय न कीधो । धर्म-संबंधीया फळतणे विषे निःसंदेह बुद्धि धरी नहीं । साधु–साध्वीनां मल-मलिन गात्र देखी दुगंच्छा नीपजावी, कुचारित्रीया देखी चारित्रीया ऊपर अभाव हुओ. मिथ्यात्वीतणी पूजा प्रभावना देखी मूढदृष्टिपणुं कीधुं । तथा संघमांहे गुणवंततणी अनुपबृंहणा कीधी, अस्थिरीकरण, अवात्सल्य, अप्रीति, अभक्ति निपजावी, अबहुमान कीधुं । तथा देवद्रव्य गुरुद्रव्य, ज्ञानद्रव्य साधारणद्रव्य भक्षित उपेक्षित प्रज्ञापराधे विणास्यां, विणसतां उवेख्यां, छती शक्तिए सारसंभाळ न कीधी । तथा साधर्मिक साथे कलह कर्मबंध कीधो. अधोती अष्टपड-मुखकोश पाखे देवपूजा कीधी । बिंब प्रत्ये वासकुंपी धूपधाणुं कलश तणो ठबको लाग्यो, बिंब हाथथकी पाड्युं. उसास-निःसास लाग्यो । देहरे उपाश्रये मलश्लेष्मादिक लोह्युं, देहरामांहे हास्य, खेल केलि, कुतुहल आहार नीहार कीधां । पान, सोपारी, निवेदिआं खाधां । ठवणायरिय हाथ थकी पाड्या, पडिलेहवा विसार्या । जिनभवने चोराशी आशातना,

गुरु-गुरुणी प्रत्ये तेत्रीस आशातना कीधी होय, गुरुवचन तहत्ति करी पडिवज्युं नहीं ।

दर्शनाचार विषइओ अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष (संवत्सरी) दिवस०2.

चारित्राचारे आठ अतिचार–

पणिहाणजोगजुत्तो, पंचहिं समिइहिं तीहिं गुत्तीहिं ।
एस चरित्तायरो, अट्ठविहो होइ नायव्वो ।।3।।

ईर्यासमिति ते अणजोए हींड्या । भाषासमिति ते सावद्य वचन बोल्या । एषणासमिति ते तृण, डगल, अन्न, पाणी असूजतुं लीधुं । आदानभंडमत्तनिक्खेवणा समिति ते आसन, शयन, उपकरण, मातरूं प्रमुख अणपूंजी जीवाकुल भूमिकाए मूक्युं लीधुं । पारिष्ठापनिकासमिति ते मल-मूत्र, श्लेष्मादिक अणपूंजी जीवाकुल भूमिकाए परठव्युं । मनोगुप्ति मनमां आर्त्त-रौद्र ध्यान ध्यायां । वचनगुप्ति सावद्य वचन बोल्यां । कायगुप्ति शरीर अणपडिलेह्युं हलाव्युं, अणपूंजे बेठा । ए अष्ट प्रवचन माता साधुतणो धर्मे सदैव अने श्रवकतणे धर्मे सामायिक पोसह लीधे रूडी पेरे पाल्यां नहीं, खंडणा विराधना हुई ।

चारित्राचार विषइओ अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष (संवत्सरी) दिवस०3.

विशेषतः श्रावकतणे धर्मे श्री सम्यक्त्वमूल बार व्रत सम्यक्त्वतणा पांच अतिचार ।

संका कंख विगिच्छा ।

शंका– श्री अरिहंततणां बल, अतिशय, ज्ञानलक्ष्मी, गांभीर्यादिक गुण शाश्वती प्रतिमा, चारित्रीयानां चारित्र, श्री जिनवचनतणो संदेह कीधो ।

आकांक्षा–ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर, क्षेत्रपाल, गोगो, आसपाल, पादर-देवता, गोत्र-देवता, ग्रहपूजा, विनायक, हनुमंत, सुग्रीव, वालीनाह इत्येवमादिक, देश, नगर, गाम, गोत्र, नगरी, जूजूआ देव-देराना प्रभाव देखी, रोग आतंक कष्ट आव्ये इहलोक परलोकार्थे पूज्या-मान्या । सिद्ध विनायक जीराउलाने मान्युं-इच्छ्युं । बौद्ध-

सांख्यादि, संन्यासी, भरडा, भगत, लिंगीया, जोगीया, जोगी, दरवेश अनेरा दर्शनीयातणो कष्ट, मन्त्र, चमत्कार देखी परमार्थ जाण्या विना भूल्या व्यामोह्या । कुशास्त्र शीख्यां, सांभळ्यां ।

श्राद्ध, संवत्सरी, होली, बळेव, माहीपूनम, अजापडवो, प्रेतबीज, गौरी त्रीज, विनायक चोथ, नागपंचमी, झीलणा-छट्ठी, शील-सातमी, ध्रुव-आठमी, नौली-नवमी, अहवा दशमी, व्रत-अग्यारशी, वत्सबारशी, धन-तेरशी, अनंत-चउदशी, अमावास्या, आदित्यवार, उत्तरायण, नैवेद्य कीधां ।

नवोदक, याग, भोग, उतारणां कीधां, कराव्यां, अनुमोद्यां । पींपले पाणी घाल्यां, घलाव्यां । घर, बाहिर, क्षेत्रे, खळे, कूवे, तलावे नदीए, द्रहे, वावीए समुद्रे, कुंडे पुण्यहेतु स्नान कीधां, कराव्यां, अनुमोद्यां, दान दीधां, ग्रहण, शनैश्चर, महामासे, नवरात्रिए न्हाया, अजाणतां थाप्यां अनेरा व्रतवतोलां कीधां, कराव्यां ।

वितिगिच्छा– धर्मसंबंधीया फलतणे विषे संदेह कीधो । जिन अरिहंत धर्मना आगार, विश्वोपकारसागर, मोक्षमार्गना दातार इस्या गुण भणी न मान्या-न पूज्या । महासती-महात्मानी इहलोक-परलोक संबंधीया भोग-वांछित पूजा कीधी । रोग आतंक कष्ट आव्ये खीण वचन भोग मान्या । महात्माना भात-पाणी, मल, शोभातणी निंदा कीधी । कुचारित्रीया देखी चारित्रीया ऊपर कुभाव हुओ ।

मिथ्यात्वीतणी पूजा-प्रभावना देखी प्रशंसा कीधी, प्रीति मांडी. दाक्षिण्यलगे तेहनो धर्म मान्यो, कीधो । श्री सम्यक्त्व विषइओ अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष (संवत्सरी) दिवसमांहि०

पहेले स्थूल प्राणातिपात विरमणव्रते पांच अतिचार–

वहबंधछविच्छेए० द्विपद, चतुष्पद प्रत्ये रीसवशे गाढो घाव घाल्यो, गाढे बंधने बांध्यो, अधिक भार घाल्यो । निर्लांछन कर्म कीधां । चारा-पाणीतणी वेळाए सार-संभाळ न कीधी । लेहणे-देहणे किणही प्रत्ये लंघाव्यो, तेणे भूख्ये आपणे जम्या, कन्हे रही मराव्यो, बंदीखाने घलाव्यो ।

सड्या धान्य तावडे नाख्यां, दळाव्यां, भरडाव्यां, शोधी न वावर्यां । इंधण, छाणां अणशोध्यां बाळ्यां, तेमांहि साप, विंछी, खजुरा, सरवला, मांकड, जुआ, गिंगोडा, साहता मूआ, दुहव्या, रुडे स्थानके न मूक्यां । कीडी-मंकोडीना इंडा विछोया । लीख फोडी । उदेही, कीडी, मंकोडी, घीमेल, कातरा, चूडेल, पतंगियां, देडकां, अलसियां, इयळ, कुंता, डांस, मसा, बगतरा, माखी, तीड प्रमुख जीव विणट्ठा । माळा हलावतां-चलावतां पंखी, चकला, कागतणा इंडां फोड्यां । अनेरा एकेंद्रियादिक जीव विणास्या, चांप्या, दुहव्या । कांइ हलावतां-चलावतां पाणी छांटतां, अनेरा कांइ काम-काज करतां निर्ध्वंसपणुं कीधुं । जीवरक्षा रुडी न कीधी । संखारो सुकव्यो । रुडुं गळणुं न कीधुं, अणगळ पाणी वापर्युं, रूडी जयणा न कीधी, अणगळ पाणीए झील्या, लुगडां धोयां. खाटला तावडे नांख्या, झाटक्या । जीवाकुलभूमि लींपी । वाशी गार राखी । दळणे, खांडणे, लींपणे रुडी जयणा न कीधी । आठम चउदशना नियम भांग्या, धूणी करावी ।

पहेले स्थूलप्राणातिपात विरमण व्रत विषइओ अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष (संवत्सरी) *दिवसमांहि. 1.*

बीजे स्थूलमृषावादविरमणव्रते पांच अतिचार–

सहसा रहस्स दारे. सहसात्कारे कुणहि प्रत्ये अजुगतुं आळ अभ्याख्यान दीधुं । स्वदारा मंत्रभेद कीधो । अनेरा कुणहिनो मंत्र आलोच, मर्म प्रकाश्यो. कुणहीने अनर्थ पाडवा कूडी बुद्धि दीधी, कूडो लेख लख्यो, कूडी साख भरी. थापणमोसो कीधो । कन्या, गौ, ढोर, भूमि संबंधी लेहणे देहणे व्यवसाये वाद-वढवाडकरतां मोटकुं जूठुं बोल्या । हाथ-पगतणी गाळ दीधी । कडकडा मोड्या । मर्म वचन बोल्या ।

बीजे स्थूलमृषावाद-विरमण-व्रत-विषइओ अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष.2.

त्रीजे स्थूल अदत्तादान विरमणव्रते पांच अतिचार–

तेना-हडप्पओगे. घर, बाहिर, क्षेत्र, खळे, पराइ वस्तु अणमोकली लीधी, वापरी, चोराइ वस्तु वहोरी । चोर, धाड प्रत्ये संकेत कीधो, तेहने संबल दीधुं, तेहनी वस्तु लीधी । विरुद्ध राज्यातिक्रम कीधो । नवा-पुराणा, सरस-विरस, सजीव-निर्जीव वस्तुना भेळसंभेळ कीधा । कूडे काटले तोले-माने मापे वहोर्या । दाणचोरी कीधी. कुणहिने लेखे वरांस्यो, साटे लांच लीधी. कूडो करहो काढ्यो. विश्वासघात कीधो. परवंचना कीधी । पासंग कूडां कीधा, दांडी चढावी । लहके-त्रहके कूडां काटलां, मान मापां कीधां । माता, पिता, पुत्र, मित्र, कलत्र वंची कुणहिने दीधुं । जुदी गांठ कीधी । थापण ओळवी । कुणहिने लेखे-पलेखे भुलव्युं । पडी वस्तु ओळवी लीधी ।

त्रीजे स्थूल अदत्तादान विरमणव्रत विषइओ अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष (संवत्सरी) *दिवस० 3.*

चोथे स्वदारा-संतोष-परस्त्रीगमन विरमण-व्रते पांच अतिचार-

अपरिग्गहिया-इत्तर० अपरिगृहीतागमन, इत्वर परिगृहीतागमन कीधुं. विधवा, वेश्या, परस्त्री, कुलांगना, स्वदारा-शोकतणे विषे दृष्टिविपर्यास कीधो । सराग वचन बोल्या । आठम, चउदश, अनेरी पर्वतिथिना नियम लइ भांग्या । घरघरणां कीधां-कराव्यां । वर-वहु वखाण्यां । कुविकल्प चिंतव्यो । अनंगक्रीडा कीधी. स्त्रीनां अंगोपांग नीरख्यां । पराया विवाह जोड्या । ढींगला-ढींगली परणाव्या । काम-भोगतणे विषे तीव्र अभिलाष कीधो । अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार, अनाचार सुहणे स्वप्नान्तरे हुआ । कुस्वप्न लाध्यां । नट, विट, स्त्रीशुं हांसु कीधुं ।

चोथे स्वदारासंतोष-परस्त्रीगमन विरमण व्रत विषइओ अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष (संवत्सरी) *० 4.*

पांचमे स्थूल परिग्रहपरिमाणव्रते पांच अतिचार–

धणधन्नखित्त-वत्थु. धन, धान्य, क्षेत्र, वास्तु, रूप्य, सुवर्ण,

कुप्य, द्विपद, चतुष्पद, ए नवविध परिग्रहतणा नियम उपरांत वृद्धि देखी मूर्च्छा लगे संक्षेप न कीधो । माता, पिता, पुत्र, स्त्रीतणे लेखे कीधो । परिग्रह-परिमाण लीधुं नहीं, लइने पढयुं नहि, पढवुं विसार्युं, अ-लीधुं, मेल्युं, नियम विसार्या ।

पांचमे स्थूल परिग्रह परिमाणव्रत विषइओ अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष. (संवत्सरी) *5.*

छट्ठे दिक्परिमाणव्रते पांच अतिचार–गमणस्स उ परिमाणे० ऊर्ध्वदिशि, अधोदिशि, तिर्यग्दिशिए जावा आववा-तणा नियम लइ भांग्या । अनाभोगे विस्मृति लगे अधिक भूमि गया । पाठवणी आधी-पाछी मोकली । वहाण व्यवसाय कीधो । वर्षाकाळे गामंतरुं कीधुं । भूमिका एक गमा संक्षेपी, बीजी गमा वधारी ।

छट्ठे दिक्परिमाणव्रत विषइओ अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष (संवत्सरी) *दिवसमांहि० 6.*

सातमे भोगोपभोग विरमणव्रते भोजन आश्रयी पांच अतिचार अने कर्महुंती पंदर अतिचार, एवं वीश अतिचार–

सचित्ते पडिबद्धे० सचित्त नियम लीधे अधिक सचित्त लीधुं । अपक्वाहार दुष्पक्वाहार, तुच्छौषधितणुं भक्षण कीधुं । ओळा, उंबी, पोंक, पापडी खाधां ।

सचित्त-दव्व-विगइ-वाणह तंबोल-वत्थ- कुसुमेसु,
वाहण-सयण-विलेवण, बंभ-दिसि-ण्हाण-भत्तेसु ।।1।।

ए चौद नियम दिनगत रात्रिगत लीधा नहीं, लइने भांग्या । बावीश अभक्ष्य, बत्रीश अनंतकायमांहि आदु, मूळा, गाजर, पिंड, पिंडालु, कचूरो, सूरण, कुणी-आंबली, गलो, वाघरडां खाधां । वाशी-कठोळ, पोली, रोटली, त्रण दिवसनुं ओदन लीधुं । मधु, महुडां, माखण, माटी, बेंगण, पीलु, पीचु, पंपोटा, विष, हिम, करहा, घोलवडा, अजाण्यां फळ, टींबरुं, गुंदा, महोर, बोळ-अथाणुं, आम्बलबोर, काचुं मीठुं, तिल, खसखस, कोठिंबडां खाधां ।

रात्रिभोजन कीधां । लगभग वेळाए वाळुं कीधुं । दिवस विण उगे शिराव्या ।

तथा कर्मतः पंदर कर्मादान । इंगाल-कम्मे, वण-कम्मे, साडी-कम्मे, भाडी कम्मे, फोडी कम्मे ए पांच कर्म । दंतवाणिज्य, लक्ख-वाणिज्य, रस-वाणिज्य, केस-वाणिज्य, विस-वाणिज्य ए पांच वाणिज्य । जंतपिल्लण-कम्मे, निल्लंछण-कम्मे, दवग्गि-दावणया, सर-दह-तलाय-सोसणया, असइ-पोसणया ए पांच सामान्य । ए पांच कर्म, पांच वाणिज्य, पांच सामान्य एवं पंदर कर्मादान बहुसावद्य, महारंभ, रांगण, लीहाला कराव्या । ईंट निभाडा पकाव्यां. धाणी, चणा, पक्वान्न करी वेच्यां । वाशी माखण तवाव्यां । तिल वहोर्या, फागणमास उपरांत राख्या, दलीदो कीधो, अंगीठा कराव्या । श्वान, बिलाडा, सूडा, सालही पोष्या । अनेरा जे कांइ बहु सावद्य खरकर्मादिक समाचर्यां । वाशी गार राखी । लींपणे गुंपणे महारंभ कीधो । अणशोध्या चूला संधूक्या । घी, तेल, गोळ, छाशतणां भाजन उघाडां मूक्यां । तेमांहि माखी, कुंती, उंदर, गीरोली पडी, कीडी चडी, तेनी जयणा न कीधी ।

सातमे भोगोपभोग विरमणव्रत विषइओ अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष (संवत्सरी) *दिवसमांहि० 7.*

आठमे अनर्थदंड विरमणव्रते पांच अतिचार–

कंदप्पे कुक्कुइए० कंदर्प्प लगे, विटचेष्टा, हास्य, खेल, कुतूहल कीधा । पुरुष-स्त्रीना हावभाव, रुप-शृंगार, विषयरस वखाण्या । राजकथा, भक्तकथा, देशकथा, स्त्रीकथा कीधी । पराइ तांत कीधी, तथा पैशुन्यपणुं कीधुं । आर्त-रौद्र ध्यान ध्यायां । खांडा, कटार, कोश, कुहाडा, रथ, उखल, मुशल, अग्नि, घरंटी, निशाह, दातरडां प्रमुख अधिकरण मेली दाक्षिण्य लगे मांग्या, आप्या । पापोपदेश कीधो । अष्टमी, चतुर्दशीए खांडवा दळवातणा नियम भांग्या । मुखरपणा

लगे असंबद्ध वाक्य बोल्या, प्रमादाचरण सेव्या । अंघोले, नाहणे, दातणे, पगधोअणे, खेल, पाणी, तेल, छांट्यां. झील्या, जुगटे रम्या, हिंचोळे हिंच्या, नाटक प्रेक्षणक जोया ।

कण, कुवस्तु, ढोर लेवराव्यां, कर्कश वचन बोल्या । आक्रोश कीधा । अबोला लीधा । करकडा मोड्या । मच्छर धर्यो । संभेडा लगाड्या । श्राप दीधा । भेंसा, सांढ, हुड्डु, कुकडा, श्वानादि झुझार्या, झुझता जोया । खादि लगे अदेखाइ चिंतवी । माटी, मीठुं, कण कपासिया, काजविण चांप्या, ते उपर बेठा । आली वनस्पति खूंदी । सूइ, शस्त्रादिक निपजाव्या । घणी निद्रा कीधी । राग-द्वेष लगे एकने ऋद्धि परिवार वांछी, एकने मृत्युहानि वांछी ।

आठमे अनर्थदंड विरमणव्रतविषइओ अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष (संवत्सरी) *०४.*

नवमे सामायिक व्रते पांच अतिचार–

तिविहे दुप्पणिहाणे0 सामायिक लीधे मने आहट्ट दोहट्ट चिंतव्युं. सावद्य वचन बोल्या । शरीर अणपडिलेह्युं हलाव्युं । छती वेळाए सामायिक न लीधुं । सामायिक लइ उघाडे मुखे बोल्यां, उंघ आवी । वात, विकथा, घरतणी चिंता कीधी, वीज दीवा तणी उजेहि हुई । कण, कपासीया माटी, मींठु, खडी, धावडी, अरणेट्टो, पाषाण प्रमुख चांप्या । पाणी, नील, फूल, सेवाल, हरियकाय, बीयकाय इत्यादि आभड्या । स्त्री, तिर्यंचतणा निरंतर-परंपर संघट्ट हुआ । मुहपत्ति उत्संघट्टी. सामायिक अणपूग्युं पार्युं, पारवुं विसार्युं ।

नवमे सामायिक व्रत विषइओ अनेरो जे कोई अतिचार पक्ष (संवत्सरी) *दिवसमांहि० ९.*

दशमे देशावगासिक व्रते पांच अतिचार–

आणवणे पेसवणे० आण-वणप्पओगे, पेसवणप्पओगे, सद्दाणुवाइ, रुवाणुवाइ, बहियापुग्गल-पक्खेवे । नियमित भूमिकामांहि बाहिरथी कांइ अणाव्युं, आपण कन्हेथकी बाहेर कांइ मोकल्युं । अथवा रुप देखाडी, कांकरो नाखी, साद करी आपणापणुं छतुं जणाव्युं ।

दशमे देशावगासिक व्रत विषइओ अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष (संवत्सरी) *दिवसमांहि० 10.*

अगियारमे पौषधोपवास व्रते पांच अतिचार–

संथारुच्चारविहि० अप्पडिलेहिय, दुप्पडिलेहिय, सिज्जा-संथारए, अप्पडिलेहिय, दुप्पडिलेहिय, उच्चार-पासवण भूमि, पोसह लीधे संथारातणी भूमि न पूंजी । बाहिरलां वडां स्थंडिल दिवसे शोध्यां नहीं, पडिलेह्यां नहीं । मातरुं अणपूंज्युं हलाव्युं, अणपूंजी भूमिकाए परठव्युं । परठवतां 'अणुजाणह जस्सुग्गहो' न कह्यो, परठव्या पूंठे वार त्रण 'वोसिरे वोसिरे' न कह्यो । पोसहशालामांहि पेसतां 'निसीहि' निसरतां 'आवस्सहि' वार त्रण भणी नहीं । पुढवी, अप्, तेउ, वाउ, वनस्पति, त्रसकायतणा संघट्ट परिताप उपद्रव हुआ । संथारापोरिसीतणो विधि भणवो विसार्यो, पोरिसीमांहे उंघ्या । अविधे संथारो पाथर्यो । पारणादिकतणी चिंता कीधी । काळवेळाए देव न वांद्या । पडिक्कमणुं न कीधुं । पोसह असूरो लीधो, सवेरो पार्यो, पर्वतिथिए पोसह लीधो नहीं ।

अगियारमे पौषधोपवास व्रत विषइओ अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष (संवत्सरी) *०11.*

बारमे अतिथिसंविभागव्रते पांच अतिचार–

सचित्ते निक्खिवणे० सचित्त वस्तु हेठ उपर छतां महात्मा महासती प्रत्ये असूझतुं दान दीधुं । देवानी बुद्धिए असूझतुं फेडी सूझतुं कीधुं, परायुं फेडी आपणुं कीधुं । अणदेवानी बुद्धिए सूझतुं फेडी असूझतुं कीधुं, आपणुं फेडी परायुं कीधुं. वहोरवा वेळा टळी रह्या । असूर करी महात्मा तेड्या । मत्सर धरी दान दीधुं । गुणवंत आव्ये भक्ति न साचवी । छती शक्तिए स्वामी वात्सल्य न कीधुं । अनेरां धर्मक्षेत्र सीदातां छती शक्तिए उद्धर्या नहीं । दीन क्षीण प्रत्ये अनुकंपादान न दीधुं ।

बारमे अतिथिसंविभागव्रत विषइओ अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष० (संवत्सरी) *12.*

संलेषणातणा पांच अतिचार–

इहलोए परलोए० इहलोगासंसप्पओगे, परलोगासंसप्पओगे, जीवियासंसप्पओगे, मरणासंसप्पओगे, कामभोगासंसप्पओगे । इहलोके धर्मना प्रभाव लगे राज-ऋद्धि, सुख, सौभाग्य, परिवार वांछ्या । परलोके देव, देवेंद्र, विद्याधर, चक्रवर्ती तणी पदवी वांछी । सुख आव्ये जीवितव्य वांछ्युं, दुःख आव्ये मरण वांछ्युं. कामभोगतणी वांछा कीधी ।

संलेषणाव्रत विषइओ अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष (संवत्सरी) *०13.*

तपाचार बार भेद-छ बाह्य, छ अभ्यन्तर

अणसणमूणोअरिआ० अणसण भणी उपवास विशेष पर्वतिथे छती शक्तिए कीधो नहीं । ऊणोदरी व्रत ते कोळिया पांच सात ऊणा रह्या नहीं । वृत्तिसंक्षेप ते द्रव्य भणी सर्व वस्तुओनो संक्षेप कीधो नहीं. रसत्याग ते विगइत्याग न कीधो. कायक्लेश लोचादिक कष्ट सहन कर्यां नहीं । संलीनता अंगोपांग संकोची राख्यां नहीं.

पच्चक्खाण भांग्यां. पाटलो डगडगतो फेड्यो नहीं. गंठसी, पोरिसी, साड्ढपोरिसी, पुरिमड्ढ, एकासणुं, बेआसणुं, नीवि, आयंबिल प्रमुख पच्चक्खाण पारवुं विसार्युं. बेसतां नवकार न भण्यो. उठतां पच्चक्खाण करवुं विसार्युं. गंठसीयुं भांग्युं. नीवि, आयंबिल, उपवासादिक तप करी काचुं पाणी पीधुं, वमन हुओ ।

बाह्यतप विषइओ अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष (संवत्सरी) *दिवसमांहि०14.*

अभ्यन्तर तप–

पायच्छित्तं विणओ0 मनशुद्धे गुरु कन्हे आलोअणा लीधी नहीं । गुरुदत्त प्रायश्चित्त तप लेखाशुद्धे पहुंचाड्यो नहीं. देव, गुरु, संघ, साहम्मि प्रत्ये विनय साचव्यो नहीं । बाल, वृद्ध, ग्लान, तपस्वी, प्रमुखनुं वैयावच्च न कीधुं । वाचना, पृच्छना, परावर्तना, अनुप्रेक्षा, धर्मकथा लक्षण पंचविध स्वाध्याय न कीधो । धर्मध्यान, शुक्लध्यान

न ध्यायां । आर्त्तध्यान, रौद्रध्यान ध्यायां । कर्मक्षयनिमित्ते लोगस्स दश वीशनो काउस्सग्ग न कीधो ।

अभ्यंतर तप विषइओ अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष (संवत्सरी) दिव-समांहि. 15.

वीर्याचारना त्रण अतिचार–

अणिगुहिअ-बलवीरिओ० पढवे, गुणवे, विनय, वैयावच्च, देवपूजा, सामायिक, पोसह, दान, शील, तप, भावनादिक धर्मकृत्यने विषे मन-वचन-कायातणुं छतुं बळ, छतुं वीर्य गोपव्युं । रूडां पंचांग खमासमण न दीधां । वांदणातणा आवर्तविधि साचव्या नहीं । अन्यचित्त निरादरपणे बेठा । उतावळुं देववंदन पडिक्कमणुं कीधुं ।

वीर्याचारविषइओ अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष (संवत्सरी) दिवसमांहि.16.

नाणाइअट्ठ पइवय, सम्मसंलेहण पण पन्नर कम्मेसु ।
बारस तव वीरिअतिगं, चउव्वीससयं अइआरा. ।।1।।

पडिसिद्धाणं करणे० प्रतिषेध अभक्ष्य अनंतकाय बहुबीजभक्षण महारंभ परिग्रहादिक कीधां । जीवाजीवादिक सूक्ष्म विचार सद्दह्या नहीं । आपणी कुमति लगे उत्सूत्र प्ररूपणा कीधी तथा प्राणातिपात, मृषावाद, अदत्तादान, मैथुन, परिग्रह, क्रोध, मान, माया, लोभ, राग, द्वेष, कलह, अभ्याख्यान, पैशुन्य, रति-अरति, परपरिवाद, माया-मृषावाद, मिथ्यात्वशल्य-ए अढारपापस्थानक कीधां कराव्यां अनुमोद्यां होय. दिनकृत्य प्रतिक्रमण विनय वैयावच्च न कीधां. अनेरुं जे कांइ वीतरागनी आज्ञाविरुद्ध कीधुं कराव्युं अनुमोद्युं होय, ए चिहुं प्रकारमांहे अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवसमांहि सूक्ष्म-बादर जाणतां-अजाणतां हुओ होय, ते सवि हु मने वचने कायाए करी मिच्छा मि दुक्कडं.17

एवंकारे श्रावकतणे धर्मे सम्यक्त्व मूळ बार व्रत, एकसो चोवीस अतिचारमांहि अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष (संवत्सरी) दिवसमांहि.

अतिचार-समाप्त

(अतिचार के बाद यहाँ से हाथ जोडकर बोले)

सव्वस्सवि पक्खिअ (संवच्छरिअ) दुच्चिंतिअ, दुब्भासिअ, दुच्चिट्ठिअ, इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ? इच्छं, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ।

इच्छकारि भगवन् ! पसाय करी पक्खि • तप प्रसाद करावोजी, चउत्थेणं एक उपवास, दो आंबिल, तीन निवी, चार एकासना, आठ बिआसणा दो हजार स्वाध्याय यथाशक्ति तप करके पहुंचाडजो (तप किया हो तो ''पइट्ठिओ'' बोलें और करने का हो, तो ''तहत्ति'' बोले और न करने का हो, तो मौन रहना ।) (फिर दो वांदणा दे)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए ।।1।। अणुजाणह मे मिउग्गहं ।।2।। निसीहि, अ-हो, का-यं, काय संफासं खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे पक्खो (संवच्छरो) वइक्कंतो ।।3।। ज-त्ता भे ? ।।4।। जवणिज्जं च भे ।।5।। खामेमि खमासमणो पक्खिअं (संवच्छरिअं) वइक्कम्मं ।।6।। आवस्सिआए पडिक्कमामि खमासमणाणं पक्खिआए (संवच्छरिआए) आसायणाए, तित्तीसन्नयराए जं किंचि मिच्छाए, मण-दुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्व-धम्माइक्कमणाए, आसायणाए जो मे अइआरो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ।।7।।

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए ।।1।। अणुजाणह, मे मिउग्गहं ।।2।। निसीहि, अ-हो, का-यं, काय संफासं खमणिज्जो भे किलामो, अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे पक्खो (संवच्छरो) वइक्कंतो ।।3।। ज-त्ता भे ? ।।4।। जवणिज्जं च भे ।।5।। खामेमि खमासमणो पक्खिअं (संवच्छरिअं) वइक्कम्मं ।।6।। पडिक्कमामि

Note : • 1. संवत्सरी प्रतिक्रमण हो तो **'पक्खि'** के बदले **'संवच्छरी'** बोले- फिर **'एक अट्ठमभत्तं, तीन उपवास, छ आयंबिल, नौ नीवी, बारह एकासना, चोबीस बियासना, छ हजार स्वाध्याय'** कहे ।

2. चौमासी प्रतिक्रमण हो तो पक्खी के बदले 'चउमासी' बोले, फिर **'एक छट्ठेणं दो उपवास, चार आयंबिल आठ एकासना, सोलह बियासना चार हजार स्वाध्याय'** कहे ।

खमासमणाणं पक्खिआए (संवच्छरिआए) आसायणाए, तित्तीसन्नयराए जं किंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए जो मे अइआरो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ।।7।।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! पत्तए खामणेणं अब्भुट्ठिओमि अब्भिन्तर ? पक्खिअं (संवच्छरिअं) खामेउं ? ''इच्छं'' खामेमि ▫पक्खिअं एकपक्खस्स पन्नरस राइंदियाणं, जं किंचि अपत्तिअं परपत्तिअं भत्ते पाणे विणए वेयावच्चे, आलावे, संलावे, उच्चासणे, समासणे, अंतरभासाए, उवरिभासाए, जं किंचि मज्झ विणयपरिहीणं सुहुमं वा तुब्भे जाणह अहं न जाणामि तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ।। ▫ (संवच्छरी प्रतिक्रमण में पक्खिअं के बदले संवच्छरिअं कहे तथा संवच्छरी में–बारह मासाणं चउवीस पक्खाणं तीनसो साठ राइंदियाणं जं किंचि...इस प्रकार बोलना ।)

(इसके बाद साधु-साध्वी-श्रावक-श्राविका चतुर्विध संघ के साथ खमत खामणा करे **मिच्छा मि दुक्कडं** कहे ।)

(फिर दो वांदणां दे ।)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए ।।1।। अणुजाणह, मे मिउग्गहं ।।2।। निसीहि, अ-हो, का-यं, का य संफासं खमणिज्जो भे किलामो, अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे पक्खो (संवच्छरो) वइक्कंतो ।।3।। ज-त्ता भे ? ।।4।। ज व णि ज्जं च ? ।।5।। खामेमि खमासमणो पक्खिअं (संवच्छरिअं) वइक्कम्मं ।।6।। आवस्सिआए पडिक्कमामि खमासमणाणं पक्खिआए (संवच्छरिआए) आसायणाए, तित्तीसन्नयराए जं किंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्व-धम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे

अइआरो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ।।7।।

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए ।।1।। अणुजाणह, मे मिउग्गहं ।।2।। निसीहि, अ-हो, का-यं, का य संफासं खमणिज्जो भे किलामो, अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे पक्खो (संवच्छरो) वइक्कंतो ? ।।3।। ज-त्ता भे ? ।।4।। ज व णि ज्जं च भे ? ।।5।। खामेमि खमासमणो पक्खिअं (संवच्छरिअं) वइक्कम्मं ।।6।। पडिक्कमामि खमासमणाणं पक्खिआए (संवच्छरिआए) आसायणाए, तित्तीसन्नयराए जं किंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइआरो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ।।7।।

देवसिअ, आलोइअ पडिक्कंता इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! पक्खिअं (संवच्छरिअं) पडिक्कमामि ?, ``इच्छं'' (गुरू कहे-सम्मं पडिक्कमेह ।)

करेमि भंते ! सामाइयं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि, जाव नियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं, मणेणं, वायाए, काएणं, न करेमि, न कारवेमि, तस्स भंते ! पडिक्कमामि, निंदामि गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि । (फिर)

इच्छामि पडिक्कमितुं, जो मे पक्खिओ (संवच्छरो) अइआरो कओ, काइओ, वाइओ, माणसिओ, उस्सुत्तो, उम्मग्गो, अकप्पो, अकरणिज्जो, दुज्झाओ, दुव्विचिंतिओ, अणायारो, अणिच्छिअव्वो, असावगपाउग्गो, नाणे, दंसणे, चरित्ताचरित्ते, सुए, सामाइए, तिण्हं गुत्तीणं, चउण्हं कसायाणं, पंचण्हमणुव्वयाणं, तिण्हं गुणव्वयाणं, चउण्हं सिक्खावयाणं बारस-विहस्स सावगधम्मस्स, जं खंडिअं, जं विराहिअं, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पक्खि (संवत्सरी) सूत्र पढुं ?''इच्छं''

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो उवज्झायाणं, नमो लोए सव्वसाहूणं, एसो पंच नमुक्कारो, सव्वपावप्पणासणो, मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं ।

(इस प्रकार तीन नवकार गिनकर, श्रावक वंदित्तु सूत्र बोले ।)

वंदित्तु सव्वसिद्धे, धम्मायरिए अ सव्वसाहू अ ।
इच्छामि पडिक्कमिउं, सावग-धम्माइआरस्स ।।1।।
जो मे वयाइआरो, नाणे तह दंसणे चरित्ते अ ।
सुहुमो अ बायरो वा, तं निंदे तं च गरिहामि ।।2।।
दुविहे परिग्गहंमि, सावज्जे बहुविहे अ आरंभे ।
कारावणे अ करणे, पडिक्कमे पक्खिअं (संवच्छरिअं) सव्वं ।।3।।
जं बद्ध-मिंदिएहिं, चउहिं कसाएहिं अप्पसत्थेहिं ।
रागेण व दोसेण व, तं निंदे तं च गरिहामि ।।4।।
आगमणे निग्गमणे, ठाणे चंकमणे अणाभोगे ।
अभिओगे अ निओगे, पडिक्कमे पक्खिअं (संवच्छरिअं) सव्वं ।।5।।
संका कंख विगिच्छा, पसंस तह संथवो कुलिंगीसु ।
सम्मत्तस्सइआरे, पडिक्कमे पक्खिअं (संवच्छरिअं) सव्वं ।।6।।
छक्काय-समारंभे, पयणे अ पयावणे अ जे दोसा ।
अत्तट्ठा य परट्ठा, उभयट्ठा चेव तं निंदे ।।7।।
पंचण्हमणुव्वयाणं, गुणव्वयाणं च तिण्हमइयारे ।
सिक्खाणं च चउण्हं, पडिक्कमे पक्खिअं (संवच्छरिअं) सव्वं ।।8।।
पढमे अणुव्वयंमि, थूलग-पाणाइवाय-विरइयो ।
आय-रिय-मप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ।।9।।
वह-बंध-छविच्छेए, अइभारे भत्तपाणवुच्छेए ।
पढम-वयस्सइआरे, पडिक्कमे पक्खिअं (संवच्छरिअं) सव्वं।।10।।
बीए अणुव्वयंमि, परिथूलग-अलिय-वयण-विरइओ ।
आयरिय-मप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ।।11।।

सहसा रहस्स-दारे, मोसुवएसे अ कूडलेहे अ ।
बीअवयस्सइआरे, पडिक्कमे पक्खिअं (संवच्छरिअं) सव्वं ।।12।।
तइए अणुव्वयंमि थूलग-परदव्व-हरण-विरइओ ।
आयरिय-मप्पसत्थे, इत्थ पमायप्प-संगेणं ।।13।।
तेनाहडप्पओगे, तप्पडिरूवे विरुद्ध-गमणे अ ।
कूडतुल-कुडमाणे, पडिक्कमे पक्खिअं (संवच्छरिअं) सव्वं ।।14।।
चउत्थे अणुव्वयंमि, निच्चं परदारगमण-विरइओ ।
आयरियमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ।।15।।
अपरिग्गहिआ इत्तर, अणंगविवाह तिव्वअणुरागे ।
चउत्थ वयस्सइआरे, पडिक्कमे पक्खिअं (संवच्छरिअं) सव्वं।।16।।
इत्तो अणुव्वए पंचमंमि, आयरियमप्पसत्थंमि ।
परिमाण-परिच्छेए, इत्थ पमायप्पसंगेणं ।।17।।
धण-धन्न-खित्त-वत्थु, रूप्प-सुवन्ने अ कुविअ-परिमाणे ।
दुपए चउप्पयंमि य, पडिक्कमे पक्खिअं (संवच्छरिअं) सव्वं ।।18।।
गमणस्स उ परिमाणे, दिसासु उड्ढं अहे अ तिरिअं च ।
वुड्ढि सइ-अंतरद्धा, पढमंमि गुणव्वए निंदे ।।19।।
मज्जंमि अ मंसंमि अ, पुप्फे अ फले अ गंधमल्ले अ ।
उवभोग-परिभोगे, बीयंमि गुणव्वए निंदे ।।20।।
सचित्ते पडिबद्धे, अप्पोलि-दुप्पोलियं च आहारे ।
तुच्छोसहि-भक्खणया, पडिक्कमे पक्खिअं (संवच्छरिअं) सव्वं ।।21।।
इंगाली-वण-साडी-भाडी-फोडीसु वज्जए कम्मं ।
वाणिज्जं चेव दंत, लक्ख-रस-केस-विसविसयं ।।22।।
एवं खु जंतपिल्लण-कम्मं निल्लंछणं च दवदाणं ।
सर-दह-तलाय-सोसं, असईपोसं च वज्जिज्जा ।।23।।
सत्थग्गि-मुसल-जंतग, तण-कट्ठे-मंत-मूल-भेसज्जे ।
दिन्ने दवाविए वा, पडिक्कमे पक्खिअं (संवच्छरिअं) सव्वं ।।24।।

न्हाणुव्वट्टण-वन्नग, विलेवणे सद्द-रूव-रस-गंधे ।
वत्थासण-आभरणे, पडिक्कमे पक्खिअं (संवच्छरिअं) सव्वं ।।25।।
कंदप्पे कुक्कुइए, मोहरि-अहिगरण-भोग-अइस्सिते ।
दंडंमि अणट्ठाए, तइअंमि गुणव्वए निंदे ।।26।।
तिविहे दुप्पणिहाणे, अणवट्ठाणे तहा सइ विहूणे ।
सामाइअ वितहकए, पढमे सिक्खावए निंदे ।।27।।
आणवणे पेसवणे, सद्दे रूवे अ पुग्गलक्खेवे ।
देसावगासिअंमि, बीए सिक्खावए निंदे ।।28।।
संथारूच्चारविहि, पमाय तह चेव भोयणाभोए ।
पोसह-विहि-विवरीए, तइए सिक्खावए निंदे ।।29।।
सच्चित्ते निक्खिवणे, पिहिणे ववएस-मच्छरे चेव ।
काला-इक्कम-दाणे चउत्थे सिक्खावए निंदे ।।30।।
सुहिएसु अ दुहिएसु अ, जा मे अस्संजएसु अणुकंपा ।
रागेण व दोसेण व, तं निंदे तं च गरिहामि ।।31।।
साहूसु संविभागो, न कओ तव-चरण-करण-जुत्तेसु ।
संते फासुअ-दाणे, तं निंदे तं च गरिहामि ।।32।।
इहलोए परलोए, जीविअ-मरणे अ आसंस-पओगे ।
पंचविहो अइयारो, मा मज्झ हुज्ज मरणंते ।।33।।
काएण काइअस्स, पडिक्कमे वाइअस्स वायाए ।
मणसा माणसिअस्स, सव्वस्स वयाइआरस्स ।।34।।
वंदण-वय-सिक्खा-गारवेसु, सन्ना-कसाय-दंडेसु ।
गुत्तीसु अ समिइसु अ, जो अइआरो अ तं निंदे ।।35।।
सम्मदिट्ठी जीवो, जइ वि हु पावं समायरे किंचि ।
अप्पोसि होइ बंधो, जेण न निद्धंधसं कुणइ ।।36।।
तं पि हु सपडिक्कमणं, सप्परिआवं सउत्तर-गुणं च ।
खिप्पं उवसामेइ, वाहिव्व सुसिक्खिओ विज्जो ।।37।।

जहा विसं कुट्ठगयं, मंतमूल विसारया ।
विज्जा हणंति मंतेहिं, तो तं हवइ निव्विसं ।।38।।
एवं अट्ठविहं कम्मं, राग-दोस-समज्जिअं ।
आलोअंतो अ निंदंतो, खिप्पं हणइ सुसावओ ।।39।।
कय पावोवि मणुस्सो, आलोइअ निंदिअ गुरूसगासे ।
होइ अइरेग लहुओ, ओहरिअ-भरूव्व भारवहो ।।40।।
आवस्सएण एएण, सावओ जइ वि बहुरओ होइ ।
दुक्खाण-मंतकिरिअं, काहि अचिरेण कालेण ।।41।।
आलोअणा बहुविहा, न य संभरिआ पडिक्कमणकाले ।
मूलगुण-उत्तरगुणे, तं निंदे तं च गरिहामि ।।42।।
तस्स धमस्स केवली-पन्नत्तस्स ।
अब्भुट्ठिओ मि आराहणाए, विरओमि विराहणाए ।
तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ।।43।।
जावंति चेइआइं, उड्ढे अ अहे अतिरिअ लोए अ ।
सव्वाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइं ।।44।।
जावतं केवि साहू, भरहेरवय-महाविदेहे अ ।
सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंड-विरयाणं ।।45।।
चिर-संचिय-पावपणासणीइ, भव-सय-सहस्स-महणीए ।
चउवीस-जिण-विणिग्गय-कहाइ, वोलंतु मे दिअहा ।।46।।
मम मंगल-मरिहंता, सिद्धा साहू सुअं च धम्मो अ ।
सम्मदिट्ठी देवा, दिंतु समाहिं च बोहिं च ।।।।47।।
पडिसिद्धाणं करणे, किच्चा-णमकरणे अ पडिक्कमणं ।
असद्दहणे अ तहा, विवरीय परूवणाए अ ।।48।।
खामेमि सव्व-जीवे, सव्वे जीवा खमंतु मे ।
मित्ती मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झ न केणइ ।।49।।
एवमहं-आलोइअ, निंदिअ-गरहिअ-दुगंच्छिअं सम्मं ।
तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ।।50।।

(फिर सुअदेवया की स्तुति बोले ।)

सुअदेवया भगवई, नाणावरणीयकम्मसंघायं ।
तेसिं खवेउ सययं, जेसिं सुअसायरे भत्ती ।।1।।

(बैठकर बाया घुटना ऊंचा कर बोले ।)

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो उवज्झायाणं, नमो लोए सव्वसाहूणं, एसो पंच नमुक्कारो, सव्वपावप्पणासणो, मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं ।

करेमि भंते ! सामाइयं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि, जाव नियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं, मणेणं, वायाए, काएणं, न करेमि, न कारवेमि तस्स भंते ! पडिक्कमामि, निंदामि गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ।

इच्छामि पडिक्कमितुं, जो मे पक्खिओ (संवच्छरिओ) अइआरो कओ, काइओ, वाइओ, माणसिओ, उस्सुत्तो, उम्मग्गो, अकप्पो, अकरणिज्जो, दुज्झाओ, दुव्विचिंतिओ, अणायारो, अणिच्छिअव्वो, असावगपाउग्गो, नाणे, दंसणे, चरित्ताचरित्ते, सुए, सामाइए, तिण्हं गुत्तीणं, चउण्हं कसायाणं, पंचण्हमणुव्वयाणं, तिण्हं गुणव्वयाणं, चउण्हं सिक्खावयाणं, बारसविहस्स सावगधम्मस्स, जं खंडिअं जं विराहिअं तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ।

वंदित्तु सव्वसिद्धे, धम्मायरिए अ सव्वसाहू अ ।
इच्छामि पडिक्कमिउं, सावग-धम्माइआरस्स ।।1।।
जो मे वयाइआरो, नाणे तह दंसणे चरित्ते अ ।
सुहुमो अ बायरो वा, तं निंदे तं च गरिहामि ।।2।।
दुविहे परिग्गहंमि, सावज्जे बहुविहे अ आरंभे ।
कारावणे अ करणे, पडिक्कमे पक्खिअं (संवच्छरिअं) सव्वं ।।3।।
जं बद्धमिंदिएहिं, चउहिं कसाएहिं अप्पसत्थेहिं ।
रागेण व दोसेण व, तं निंदे तं च गरिहामि ।।4।।

आगमणे निग्गमणे, ठाणे चंकमणे अणाभोगे ।
अभिओगे अ निओगे, पडिक्कमे पक्खिअं (संवच्छरिअं) सव्वं ।।5।।
संका कंख विगिच्छा, पसंस तह संथवो कुलिंगीसु ।
सम्मत्तस्सइआरे, पडिक्कमे पक्खिअं (संवच्छरिअं) सव्वं ।।6।।
छक्कायसमारंभे, पयणे अ पयावणे अ जे दोसा ।
अत्तट्ठा य परट्ठा, उभयट्ठा चेव तं निंदे ।।7।।
पंचण्ह-मणुव्वयाणं, गुण-व्वयाणं च तिण्ह-मइयारे ।
सिक्खाणं च चउण्हं, पडिक्कमे पक्खिअं (संवच्छरिअं) सव्वं ।।8।।
पढमे अणुव्वयंमि, थूलग-पाणाइवाय-विरइयो ।
आयरिय-मप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ।।9।।
वह-बंध-छविच्छेए, अइभारे भत्तपाणवुच्छेए ।
पढम-वयस्स-इआरे, पडिक्कमे पक्खिअं (संवच्छरिअं) सव्वं ।।10।।
बीए अणुव्वयंमि, परिथूलग-अलिय-वयण-विरइओ ।
आयरिय-मप्पसत्थे, इत्थ पमायप्प-संगेणं ।।11।।
सहसा रहस्स-दोर, मोसुवएसे अ कूडलेहे अ ।
बीअ-वयस्सइआरे, पडिक्कमे पक्खिअं (संवच्छरिअं) सव्वं ।।12।।
तइए अणुव्वयंमि थूलग-परदव्व-हरण-विरइओ ।
आयरिय-मप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ।।13।।
तेनाहडप्पओगे, तप्पडिरूवे विरुद्ध-गमणे अ ।
कूडतुल-कुडमाणे, पडिक्कमे पक्खिअं (संवच्छरिअं) सव्वं ।।14।।
चउत्थे अणुव्वयंमि, निच्चं परदारगमण-विरइओ ।
आयरियमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ।।15।।
अपरिग्गहिआ इत्तर, अणंगविवाह तिव्वअणुरागे ।
चउत्थ वयस्सइआरे, पडिक्कमे पक्खिअं (संवच्छरिअं) सव्वं ।।16।।
इत्तो अणुव्वए पंचमंमि, आयरियमप्प-सत्थंमि ।
परिमाण-परिच्छेए, इत्थ पमायप्पसंगेणं ।।17।।

धण-धन्न-खित्त-वत्थु, रूप्प-सुवन्ने अ कुविअ-परिमाणे ।
दुपए चउप्पयंमि य, पडिक्कमे पक्खिअं (संवच्छरिअं) सव्वं ।।18।।
गमणस्स उ परिमाणे, दिसासु उड्ढं अहे अ तिरिअं च ।
वुड्ढि सइ-अंतरद्धा, पढमंमि गुणव्वए निंदे ।।19।।
मज्जंमि अ मंसंमि अ, पुप्फे अ फले अ गंधमल्ले अ ।
उवभोग-परिभोगे, बीयंमि गुणव्वए निंदे ।।20।।
सचित्ते पडिबद्धे, अप्पोलि-दुप्पोलियं च आहारे ।
तुच्छोसहिभक्खणया, पडिक्कमे पक्खिअं (संवच्छरिअं) सव्वं ।।21।।
इंगाली-वण-साडी-भाडी-फोडीसु वज्जए कम्मं ।
वाणिज्जं चेव दंत, लक्ख-रस-केस-विसविसयं ।।22।।
एवं खु जंतपिल्लण-कम्मं निल्लंछणं च दवदाणं ।
सर-दह-तलाय-सोसं, असई-पोसं च वज्जिज्जा ।।23।।
सत्थग्गि-मुसल-जंतग, तण-कट्ठे-मंत-मूल-भेसज्जे ।
दिन्ने दवाविए वा, पडिक्कमे पक्खिअं (संवच्छरिअं) सव्वं ।।24।।
न्हाणुव्वट्टण-वन्नग, विलेवणे सद्द-रूव-रस-गंधे ।
वत्थासण-आभरणे, पडिक्कमे पक्खिअं (संवच्छरिअं) सव्वं ।।25।।
कंदप्पे कुक्कुइए, मोहरि-अहिगरण-भोग-अइत्ते ।
दंडंमि अणट्ठाए, तइअंमि गुणव्वए निंदे ।।26।।
तिविहे दुप्पणिहाणे, अणवट्ठाणे तहा सइ विहूणे ।
सामाइअ वितहकए, पढमे सिक्खावए निंदे ।।27।।
आणवणे पेसवणे, सद्दे रूवे अ पुग्गलक्खेवे ।
देसावगासिअंमि, बीए सिक्खावए निंदे ।।28।।
संथारूच्चार-विहि, पमाय तह चेव भोयणाभोए ।
पोसह-विहि-विवरीए, तइए सिक्खावए निंदे ।।29।।
सच्चित्ते निक्खिवणे, पिहिणे ववएस-मच्छरे चेव ।
कालाइक्कम-दाणे चउत्थे सिक्खावए निंदे ।।30।।
सुहिएसु अ दुहिएसु अ, जा मे असंजएसु अणु-कंपा ।
रागेण व दोसेण व, तं निंदे तं च गरिहामि ।।31।।

साहूसु संविभागो, न कओ तव-चरण-करण-जुत्तेसु ।
संते फासुअदाणे, तं निंदे तं च गरिहामि ।।32।।
इहलोए परलोए, जीविअ-मरणे अ आसंसपओगे ।
पंचविहो अइयारो, मा मज्झ हुज्ज मरणंते ।।33।।
काएण काइअस्स, पडिक्कमे वाइअस्स वायाए ।
मणसा माणसिअस्स, सव्वस्स वयाइआरस्स ।।34।।
वंदण-वय-सिक्खा-गारवेसु, सन्ना-कसाय-दंडेसु ।
गुत्तीसु अ समिइसु अ, जो अइआरो अ तं निंदे ।।35।।
सम्मदिट्ठी जीवो, जइवि हु पावं समायरे किं चि ।
अप्पोसि होइ बंधो, जेण न निद्धंधसं कुणइ ।।36।।
तं पि हु सपडिक्कमणं, सप्परिआवं सउत्तरगुणं च ।
खिप्पं उवसामेइ, वाहिव्व सुसिक्खिओ विज्जो ।।37।।
जहा विसं कुट्ठगयं, मंतमूल विसारया ।
विज्जा हणंति मंतेहिं, तो तं हवइ निव्विसं ।।38।।
एवं अट्ठविहं कम्मं, राग-दोस-समज्जिअं ।
आलोअंतो अ निंदंतो, खिप्पं हणइ सुसावओ ।।39।।
कयपावोवि मणुस्सो, आलोइअ निंदिअ गुरू-सगासे ।
होइ अइरेग लहुओ, ओहरिअ-भरूव्व भारवहो ।।40।।
आवस्सएण एएण, सावओ जइ वि बहुरओ होइ ।
दुक्खाण-मंतकिरिअं, काहि अचिरेण कालेण ।।41।।
आलोअणा बहुविहा, न य संभरिआ पडिक्कमणकाले ।
मूलगुण-उत्तरगुणे, तं निंदे तं च गरिहामि ।।42।।
तस्स धमस्स केवली-पन्नत्तस्स । (खडे होकर)
अब्भुट्ठिओ मि आराहणाए, विरओमि विराहणाए ।
तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ।।43।।
जावंति चेइआइं, उड्ढे अ अहे अ तिरिअ लोए अ ।
सव्वाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइं ।।44।।
जावतं केवि साहू, भरहेरवय महाविदेहे अ ।
सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंड-विरयाणं ।।45।।

चिर-संचिय-पावपणासणीइ, भव-सय-सहस्स-महणीए ।
चउवीसजिण-विणिग्गय-कहाइ, वोलंतु मे दिअहा ।।46।।
मम मंगलमरिहंता, सिद्धा साहू सुअं च धम्मो अ ।
सम्मदिट्ठी देवा, दिंतु समाहिं च बोहिं च ।।47।।
पडिसिद्धाणं करणे, किच्चाणमकरणे अ पडिक्कमणं ।
असद्दहणे अ तहा, विवरीय परूवणाए अ ।।48।।
खामेमि सव्व-जीवे, सव्वे जीवा खमंतु मे ।
मित्ती मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झ न केणइ ।।49।।
एवमहं-आलोइअ, निंदिअ-गरहिअ-दुगंछिअं सम्मं ।
तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ।।50।।

करेमि भंते ! सामाइयं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि, जाव नियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं, मणेणं, वायाए, काएणं, न करेमि, न कारवेमि तस्स भंते ! पडिक्कमामि, निंदामि गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि (फिर)

इच्छामि ठामि काउस्सग्गं, जो मे पक्खो (संवच्छरो) अइयारो, कओ, काइओ, वाइओ, माणसिओ, उस्सुत्तो, उम्मग्गो, अकप्पो, अकरणिज्जो, दुज्झाओ, दुव्विचिंतिओ, अणायारो, अणिच्छिअव्वो, असावग-पाउग्गो, नाणे, दंसणे, चरित्ताचरित्ते, सुए, सामाइए, तिण्हं गुत्तीणं, चउण्हं कसायाणं, पंचण्हमणुव्वयाणं, तिण्हं गुणव्वयाणं, चउण्हं सिक्खावयाणं, बारसविहस्स सावगधम्मस्स, जं खण्डिअं, जं विराहिअं तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।।

तस्स उत्तरी-करणेणं, पायच्छित्तकरणेणं, विसोही-करणेणं, विसल्लीकरणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए ठामि काउस्सग्गं ।।1।।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए पित्तमुच्छाए ।।1।। सुहुमेहिं अगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं ।।2।। एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सगो ।।3।।

जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ।।4।। ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ।।5।।

(फिर (12) बारह लोगस्स (चंदेसु निम्मलयरा तक) काउस्सग्ग करे, लोगस्स न आता हो, तो अडतालीस (48) नवकार गिने) (संवत्सरी प्रतिक्रमण में (40) चालीस लोगस्स और एक नवकार, लोगस्स नहीं आता हो तो 160 नवकार गिनकर कायोत्सर्ग पारकर ।)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे ।
अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ।।1।।
उसभ-मजिअं च वंदे, संभव-मभिणंदणं च सुमइं च ।
पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वन्दे ।।2।।
सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस-वासुपुज्जं च ।
विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ।।3।।
कुंथुं अरं च मल्लिं, वन्दे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च ।
वंदामि रिट्ठनेमिं पासं तह वद्धमाणं च ।।4।।
एवं मए अभिथुआ, विहुय-रय-मला-पहीण-जरमरणा ।
चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ।।5।।
कित्तिय-वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा ।
आरूग्ग-बोहिलाभं, समाहि-वर-मुत्तमं दिंतु ।।6।।
चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा ।
सागर-वर-गंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ।।7।।

(फिर मुहपत्ति पडिलेहण कर, दो वांदणां दे ।)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए, अणुजाणह मे मिउग्गहं, निसीहि, अ-हो, का-यं, का य, संफासं खमणिज्जो भे किलामो, अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे, पक्खो (संवच्छरो) वइक्कंतो, ज-त्ता भे ?, ज-व-णि ज्जं च भे, खामेमि खमासमणो, (संवच्छरिअं) पक्खिअं वइक्कम्मं आवस्सिआए, पडिक्कमामि खमासमणाणं (संवच्छरिअं) पक्खिआए, आसायणाए, तित्तीसन्नयराए

जं किंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइआरो कओ, तस्स खमासमणो पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ।

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए अणुजाणह, मे मिउग्गहं, निसीहि, अ-हो, का-यं, का-य, संफासं खमणिज्जो भे किलामो, अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे, पक्खो (संवच्छरो) वइक्कंतो, ज-त्ता भे ?, ज-व-णि ज्जं च भे, खामेमि खमासमणो, पक्खिअं (संवच्छरिअं) वइक्कम्मं, पडिक्कमामि खमासमणाणं पक्खिआए (संवच्छरिआए) आसायणाए, तित्तीसन्नयराए जं किंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइआरो कओ, तस्स खमासमणो पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ।

इच्छाकारणे संदिसह भगवन् ! समत्त खामणेणं अब्भुट्ठिओमि अब्भिन्तर ? पक्खिअं खामेउं ? इच्छं ``खामेमि पक्खिअं (चरवले पर हाथ रखकर) **एकपक्खस्स पन्नरस राइंदियाणं, जं किंचि अपत्तिअं परपत्तिअं भत्ते पाणे विणए वेयावच्चे, आलावे, संलावे, उच्चासणे, समासणे, अंतरभासाए, उवरिभासाए, जं किंचि मज्झ विणय-परिहीणं सुहुमं वा बायरं वा तुब्भे जाणह अहं न जाणामि तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।।**

(संवत्सरी प्रतिक्रमण हो तो...संवच्छरिअं खामेउं ? इच्छं खामेमि संवच्छरिअं बार मासाणं चोवीस पक्खाणं त्रणसो साठ राइंदियाणं जंकिंचि....बोले ।)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! पक्खी (संवत्सरी) खामणा खामुं ! ``इच्छं''

(ऐसा बोलकर प्रत्येक खामणा के पहले एक खमासमण देकर दाहिना हाथ चरवले पर रखकर सिर झुकाकर एक नवकार बोल चार बार खामणा करे ।)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ।

इच्छामि खमासमणो नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो उवज्झायाणं, नमो लोए सव्वसाहूणं, एसो पंच नमुक्कारो, सव्वपावप्पणासणो, मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं, सिरसा मणसा मत्थएण वंदामि ।।4।।

(पहले, दूसरे व चौथे खामणे के अंत में **'सिरसा मणसा मत्थएण वंदामि'** कहे और सिर्फ तीसरे खामणे के अंत में **'तरस मिच्छा मि दुक्कडम्'** कहे–)

(पक्खी (संवत्सरी) प्रतिक्रमण समाप्त हुआ)

(फिर दो वांदणां दे)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए, अणुजाणह मे मिउग्गहं, निसीहि, अ-हो, का यं का-य संफासं खमणिज्जो भे किलामो, अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे, दिवसो वइक्कंतो ज-त्ता भे ?, ज-व-णि ज्जं च भे, खामेमि खमासमणो, देवसिअं वइक्कम्मं आवस्सिआए पडिक्कमामि खमासमणाणं देवसिआए, आसायणाए, तित्तीसन्नयराए जं किंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए । सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइआरो कओ, तस्स खमासमणो पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ।

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए अणुजाणह, मे मिउग्गहं निसीहि, अ-हो, का-यं का-य, संफासं

खमणिज्जो भे किलामो, अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे, दिवसो वइक्कंतो, ज-त्ता भे ?, ज-व-णिज्जं च भे खामेमि खमासमणो, देवसिअं वइक्कम्मं, पडिक्कमामि खमासमणाणं देवसिआए, आसायणाए, तित्तीसन्नयराए जं किंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइआरो कओ, तस्स खमासमणो पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ।।7।।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! अब्भुट्ठिओमि अब्भिंतर देवसिअं खामेउं ! ''इच्छं'' खामेमि देवसिअं (चरवले पर हाथ रखकर) **जंकिंचि अपत्तिअं, परपत्तिअं, भत्ते, पाणे, विणए, वेयावच्चे, आलावे, संलावे, उच्चासणे, समासणे, अंतरभासाए, उवरिभासाए, जंकिंचि मज्झ विणय परिहीणं सुहुमं वा बायरं वा तुब्भे जाणह अहं न जाणामि, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ।।**

(फिर दो वांदणा दे ।)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए, अणुजाणह मे मिउग्गहं निसीहि, अ-हो, का-यं का-य संफासं खमणिज्जो भे किलामो, अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे, दिवसो वइक्कंतो ज-त्ता भे ?, ज-व-णि ज्जं च भे खामेमि खमासमणो, देवसिअं वइक्कम्मं आवस्सिआए पडिक्कमामि खमासमणाणं देवसिआए, आसायणाए, तित्तीसन्नयराए जंकिंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइआरो कओ, तस्स खमासमणो पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ।

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए

अणुजाणह मे मिउग्गहं निसीहि, अ-हो, का-यं का-य संफासं खम-णिज्जो भे किलामो, अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे, दिवसो वइक्कंतो, ज-त्ता भे ?, ज-व-णि ज्जं च भे खामेमि खमासमणो ! देवसिअं वइक्कम्मं, पडिक्कमामि खमासमणाणं देवसिआए, आसायणाए, तित्तीसन्नयराए जं किंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालि-आए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्व-धम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइआरो कओ, तस्स खमासमणो पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ।

(दोनों हाथ जोड़ मस्तक पर लगाकर नीचे का सूत्र बोले ।)

आयरिय उवज्झाए, सीसे साहम्मिए कुल गणे अ ।
जे मे केई कसाया, सव्वे तिविहेण खामेमि ।।1।।
सव्वस्स समणसंघस्स, भगवओ अंजलिं करिअ सीसे ।
सव्वं खमावइत्ता, खमामि सव्वस्स अहयंपि ।।2।।
सव्वस्स जीवरासिस्स, भावओ धम्मनिहिअ निअचित्तो ।
सव्वं खमावइत्ता, खमामि सव्वस्स अहयंपि ।।3।।

करेमि भंते ! सामाइयं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि, जाव नियमं पज्जुवासामि, दुविहं, तिविहेणं, मणेणं, वायाए, काएणं, न करेमि, न कारवेमि तस्स भंते ! पडिक्कमामि, निंदामि गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि । (फिर)

इच्छामि ठामि काउस्सग्गं, जो मे देवसिओ अइयारो, कओ, काइओ, वाइओ, माणसिओ, उस्सुत्तो, उम्मग्गो, अकप्पो, अकरणिज्जो, दुज्झाओ, दुव्विचिंतिओ, अणायारो, अणिच्छिअव्वो, असावग पाउग्गो, नाणे, दंसणे, चरित्ताचरित्ते, सुए, सामाइए, तिण्हं गुत्तीणं, चउण्हं कसायाणं, पंचण्हमणुव्वयाणं, तिण्हं गुणव्वयाणं, चउण्हं सिक्खावयाणं, बारसविहस्स सावगधम्मस्स, जं खण्डिअं, जं विराहिअं तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ।।

तस्स उत्तरी-करणेणं, पायच्छित्तकरणेणं, विसोहीकरणेणं, विसल्लीकरणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए ठामि काउस्सग्गं ।।8।।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए पित्तमुच्छाए ।।1।। सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं ।।2।। एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सगो ।।3।। जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ।।4।। ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ।।5।।

(दो लोगस्स **'चंदेसु निम्मलयरा'** तक, लोगस्स नहीं आता हो तो आठ नवकार का काउस्सग्ग करके लोगस्स बोलना ।)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे ।
अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ।।1।।
उसभ-मजिअं च वंदे, संभव-मभिणंदणं च सुमइं च ।
पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ।।2।।
सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस-वासु-पुज्जं च ।
विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ।।3।।
कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च ।
वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ।।4।।
एवं मए अभिथुआ, विहुय-रय-मला-पहीण-जरमरणा ।
चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ।।5।।
कित्तिय-वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा ।
आरुग्ग-बोहिलाभं, समाहि-वर-मुत्तमं दिंतु ।।6।।
चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा ।
सागर-वर-गंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ।।7।।

सव्वलोए अरिहंत-चेइआणं, करेमि काउस्सग्गं वंदणवत्तिआए, पूअणवत्तिआए, सक्कारवत्तिआए, सम्माणवत्तिआए बोहिलाभवत्तिआए,

निरूवसग्गवत्तिआए, सद्धाए, मेहाए, धिइए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं ।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए पित्तमुच्छाए ।।1।। सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं ।।2।। एवमाइएहिं, आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सगो ।।3।। जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ।।4।। ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ।।5।।

(फिर एक लोगस्स का और लोगस्स न आता हो तो चार नवकार का काउस्सग्ग करे । काउसग्ग पार कर)

पुक्खर-वर-दीवड्ढे, धायइ-संडे अ जंबूदीवे अ ।।
भरहेर-वय-विदेहे, धम्माइगरे नमंसामि ।।1।।
तम-तिमिर-पडल-विद्धं सणस्स, सुरगण-नरिंद-महिअस्स ।
सीमाधरस्स वंदे, पप्फोडिया-मोह-जालस्स ।।2।।
जाइ-जरा मरण-सोग-पणासणस्स,
कल्लाण-पुक्खलविसाल-सुहावहस्स ।
को देव-दाणव-नरिंद-गणच्चिअस्स,
धम्मस्स सार-मुवलब्भ करे पमायं ।।3।।
सिद्धे भो पयओ णमो जिणमए नंदी सया संजमे,
देवं नागसुवन्न-किन्नर-गणस्सब्भुअ-भावच्चिए ।
लोगो जत्थ पइट्ठिओ जगमिणं तेलुक्क-मच्चासुरं,
धम्मो वड्ढउ सासओ विजयओ धम्मुत्तरं वड्ढउ ।।4।।

सुअस्स भगवओ करेमि काउस्सग्गं वंदणवत्तिआए, पूअणवत्ति-आए, सक्कार-वत्तिआए, सम्माण-वत्तिआए बोहिलाभवत्तिआए, निरूवसग्गवत्तिआए, सद्धाए, मेहाए, धिईए धारणाए अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं ।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डूएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए पित्तमुच्छाए ।।1।। सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं ।।2।। एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सगो ।।3।। जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ।।4।। ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ।।5।।

(एक लोगस्स का (चंदेसु निम्मलयरा तक), लोगस्स नहीं आता हो, तो चार नवकार का काउसग्ग करे ।)

सिद्धाणं बुद्धाणं, पारगयाणं, परंपरागयाणं ।
लोअग्ग-मुवगयाणं, नमो सया सव्वसिद्धाणं ।।1।।
जो देवाण वि देवो, जं देवा पंजली नमंसंति ।
तं देवदेव-महिअं, सिरसा वंदे महा–वीरं ।।2।।
इक्कोवि नमुक्कारो, जिणवर वसहस्स वद्धमाणस्स ।
संसार-सागराओ, तारेइ नरं व नारिं वा ।।3।।
उज्जिंतसेल-सिहरे, दिक्खा नाणं निसीहिआ जस्स ।
तं धम्म-चक्कवट्टिं, अरिट्ठनेमिं नमंसामि ।।4।।
चत्तारि अट्ठ दस दोय, वंदिया जिणवरा चउव्वीसं ।
परमट्ठ–निट्ठि–अट्ठा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ।।5।।
भुवणदेवयाए करेमि काउस्सग्गं ।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए पित्तमुच्छाए ।।1।। सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं ।।2।। एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सगो ।।3।। जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ।।4।। ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ।।5।।

(एक नवकार का काउस्सग्ग पार कर **नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्यः** बोलकर स्तुति बोले ।)

ज्ञानादिगुणयुतानां, नित्यं स्वाध्याय-संयमरतानाम् ।
विदधातु भुवनदेवी, शिवं सदा सर्वसाधूनाम् ।।1।।

खित्त देवयाए करेमि काउस्सग्गं

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए पित्तमुच्छाए ।।1।। सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं ।।2।। एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सगो ।।3।। जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ।।4।। ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ।।5।।

(एक नवकार का काउस्सग्ग पार कर **नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्यः** बोलकर स्तुति बोले ।)

यस्याः क्षेत्रं समाश्रित्य, साधुभिः साध्यते क्रिया ।
सा क्षेत्रदेवता नित्यं, भूयान्नः सुखदायिनी ।।2।।

(फिर छट्ठे आवश्यक की मुहपत्ति पडिलेहन कर ।)

(दो वांदणां दे)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए अणुजाणह, मे मिउग्गहं निसीहि, अ-हो, का-यं-का-य संफासं, खमणिज्जो भे किलामो, अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे ! दिवसो वइक्कंतो, ज-त्ता भे ज व णि ज्जं च भे, खामेमि खमासमणो, देवसिअं वइक्कम्मं आवस्सिआए पडिक्कमामि खमासमणाणं देवसिआए आसायणाए, तित्तीसन्नयराए जंकिंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइआरो कओ, तस्स खमासमणो ! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ।

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए अणुजाणह, मे मिउग्गहं निसीहि, अ-हो, का-यं का-य संफासं,

खमणिज्जो भे किलामो, अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे ! दिवसो वइक्कंतो, ज-त्ता भे ज व णि ज्जं च भे खामेमि खमासमणो देवसिअं वइक्कम्मं, पडिक्कमामि खमासमणाणं देवसिआए आसायणाए, तित्तीसन्नयराए जंकिंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइआरो कओ, तस्स खमासमणो पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ।

सामायिक, चउवीसत्थो, वंदन, पडिक्कमण, काउस्सग्ग, पच्चक्खाण किया है जी ।

इच्छामो अणुसट्ठिं नमो खमासमणाणं, (पुरुष बोले) नमोऽर्हत् सिद्धाचार्यो-पाध्याय सर्वसाधुभ्यः ।
नमोऽस्तु वर्द्धमानाय, स्पर्द्धमानाय कर्मणा ।
तज्जयावाप्तमोक्षाय, परोक्षाय कुतीर्थिनाम् ।।1।।
येषां विकचारविन्दराज्या, ज्यायः क्रमकमलावलिं दधत्या ।
सदृशैरिति संगतं प्रशस्यं कथितं सन्तु शिवाय ते जिनेन्द्राः।।2।।
कषायतापार्दित जन्तुनिर्वृत्तिं, करोति यो जैनमुखाम्बुदोद्गतः ।
स शुक्रमासोद्भववृष्टिसन्निभो, दधातु तुष्टिं मयि विस्तरो गिराम्।।3।।

(यदि स्त्रियां प्रतिक्रमण करती हो, तो यहां पर संसार दावा की तीन गाथाएँ बोले ।)

संसारदावानलदाहनीरं, संमोहधूली-हरणे समीरं,
माया–रसादारणसारसीरं, नमामि वीरं गिरिसार–धीरं ।।1।।
भावावनाम–सुर–दानव–मानवेन,
चूलाविलोल–कमलावलि मालितानि,
संपूरिताभि–नतलोक समीहितानि,
कामं नमामि जिन–राज–पदानि–तानि ।।2।।

बोधागाधं सुपद–पदवी–नीरपुराभिरामं,
जीवाहिंसा–विरल–लहरी संगमागाहदेहं ।
चूलावेलं गुरूगममणि–संकुल दूरपारं,
सारं वीरा–गमजलनिधिं सादरं साधु सेवे ।।3।।

नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं ।।1।। आइगराणं तित्थयराणं, सयंसंबुद्धाणं ।।2।। पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवरपुंडरीआणं, पुरिसवर-गंध-हत्थीणं ।।3।। लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआणं, लोगपईवाणं, लोगपज्जोअगराणं ।।4।। अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं, बोहिदयाणं ।।5।। धम्मदयाणं, धम्मदेसयाणं, धम्म-नायगाणं, धम्मसारहीणं, धम्मवरचाउरंत-चक्कवट्टीणं ।।6।। अप्पडिहय-वरनाण-दंसणधराणं, वियट्टछउमाणं ।।7।। जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं ।।8।। सव्वन्नूणं, सव्वदरिसीणं, सिव-मयल-मरूअ-मणंत-मक्खय-मव्वाबाहमपुणरावित्ति-सिद्धि-गइ-नामधेयं ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं, जिअभयाणं ।।9।।

जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले,
संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ।।10।।

नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्यः ।

7

श्री अजितशांति स्तवन

अजिअं जिअ-सव्वभयं, संतिं च पसंत-सव्व-गय-पावं ।
जयगुरू संतिगुणकरे, दोवि जिणवरे पणिवयामि. *गाहा.* 1
ववगयं-मंगुलभावे, तेहं विउलतव-निम्मलसहावे ।
निरूवम-महप्पभावे, थोसामि सुदिट्ठसब्भावे. *गाहा.* 2
सव्वदुक्खप्पसंतीणं, सव्वपावप्पसंतीणं ।
सया अजिअसंतीणं, नमो अजिअसंतीणं. *सिलोगो* 3
अजिअजिण ! सुहप्पवत्तणं, तव पुरिसुत्तम ! नामकित्तणं ।
तह य धिइमइप्पवत्तणं, तव य जिणुत्तमसंत्ति ! कित्तणं. *मागहिआ* 4
किरिआ-विहि-संचिअ-कम्म-किलेस-विमुक्खयरं,
अजिअं निचिअं च गुणेहिं महामुणि-सिद्धिगयं ।
अजिअस्स य संति-महामुणिणो वि अ संतिकरं,
सययं मम निव्वुइ-कारणयं च नमंसणयं. *आलिंगणयं.* 5
पुरिसा ! जइ दुक्खवारणं, जइ अ विमग्गह सुक्खकारणं ।
अजिअं संतिं च भावओ, अभयकरे सरणं पवज्जहा. *मागहिआ.* 6
अरइ-रइ-तिमिर-विरहिअ-मुवरय-जरमरणं,
सुर-असुर-गुरूल-भुयगवइ-पयइ-पणिवइअं ।
अजिअं-महमवि अ सुनयनय-निउण-मभयकरं,
सरण-मुवसरिअ भुवि-दिविज-महिअं सययमुवणमे. *संगययं.* 7
तं च जिणुत्तम-मुत्तम-नित्तम-सत्तधरं,
अज्जव-मद्दव-खंति-विमुत्ति-समाहिनिहिं ।
संतिकरं पणमामि दमुत्तम-तित्थयरं
संति-मुणी मम संतिसमाहिवरं दिसउ. *सोवाणयं,* 8

सावत्थि-पुव्वपत्थिवं च वरहत्थि-मत्थय पसत्थ विच्छिन्नसंथियं,
थिर-सरिच्छ-वच्छं, मयगल-लीलायमाण-वरगंधहत्थि-पत्थाण-पत्थियं
संथवारिहं, हत्थि-हत्थबाहुं धंतकणग-रूअग-निरूवहय-पिंजरं पवर-
लक्खणोवचिअ-सोम-चारू-रूवं, सुइसुह-मणाभिराम-परम-रमणिज्ज
वरदेवदुंदुहि-निनाय-महुरयर-सुहगिरं. *वेड्ढओ.* 9

अजिअं जिआरिगणं, जिअ-सव्वभयं भवोहरिउं ।
पणमामि अहं पयओ, पावं पसमेउ मे भयवं. *रासालुद्धओ.* 10

कुरूजणवय-हत्थिणाउर-नरीसरो पढमं, तओ महाचक्कवट्टिभोए
महप्पभावो, जो बावत्तरिपुरवर-सहस्सवरनगर-निगमजणवय-वइ
बत्तीसारायवर-सहस्साणुयायमग्गो । चउदस वररयण नव-महानिहि-
चउसट्ठि सहस्स-पवर-जुवइण सुंदरवइ, चुलसी-हय-गय-रहसय
सहस्ससामी छन्नवइगामकोडि-सामी आसी जो भारहंमि भयवं. *वेड्ढओ.11*

तं सतिं संतिकरं, संतिण्णं सव्वभया ।
संतिं थुणामि जिणं, संतिं विहेउ मे. *रासानंदिअयं.* 12

इक्खाग ! विदेहनरीसर ! नरवसहा ! मुणिवसहा !
नवसारय-ससिसकलाणण ! विगयतमा ! विहुअरया !
अजिउत्तम-तेअ ! गुणेहिं महामुणि ! अमिअबला ! विउलकुला !
पणमामि ते भव-भय-मूरण ! जगसरणा ! मम सरणं. *चित्तलेहा.13*

देव-दाण-विंद-चंद-सूर-वंद ! हट्ठ-तुट्ठ ! जिट्ठ ! परम-
लट्ठ-रूव ! धंत-रूप्प-पट्ट-सेय-सुद्ध-निद्ध-धवल-
दंत-पंति ! संति ! सत्ति-कित्ति-मुत्ति-जुत्ति-गुत्ति-पवर !
दित्ततेअ-वंद धेय ! सव्वलोअ-भाविअप्पभाव ! णेय !
पइस मे समाहिं, *नारायओ.* 14

विमलससि-कलाइरेअ-सोमं, वितिमिर-सूर-कराइरेअ-तेअं ।
तिअसवइ-गणाइरेअ-रूवं, धरणि धरप्पवराइरेअ-सारं. *कुसुमलया.15*

सत्ते अ सया अजिअं, सारीरे अ बले अजिअं ।
तव संजमे अ अजिअं, एस थुणामि जिणं अजिअं. *भुअगपरिरिंगिअं.16*
सोमगुणेहिं पावइ न तं नव-सरय-ससी,
तेअ-गुणेहिं पावइ न तं नव-सरय-रवी ।
रूवगुणेहिं पावइ न तं तिअसगणवइ,
सारगुणेहिं पावइ न तं धरणिधरवइ. *खिज्जिअयं.* *17*
तित्थवर-पवत्तयं तमरय-रहियं,
धीरजण-थुअच्छिअं चुअकलि-कलुसं ।
संतिसुह-प्पत्तयं तिगरण-पयओ,
संतिमहं महामुणिं सरणमुवणमे. *ललिअयं.* *18*
विणओणय-सिररइ-अंजलि-रिसिगण-संथुअं थिमिअं,
विबुहाहिव-धणवइ-नरवइ-थुअ-महि-अच्चिअं बहुसो ।
अइरूग्गय-सरय-दिवायर-समहिअ-सप्पभं तवसा,
गयणंगण-वियरण-समुइअ-चारण-वंदिअं सिरसा. *किसलयमाला.19*
असुर-गरूल-परिवंदिअं, किन्नरोरग-नमंसिअं ।
देवकोडि-सयसंथुअं, समणसंघ-परिवंदिअं. *सुमुहं.* *20*
अभयं अणहं, अरयं अरूयं ।
अजिअं अजिअं, पयओ पणमे. *विज्जुविलसिअं.* *21*
आगया वरविमाण-दिव्वकणग-रह-तुरय-पहकरसएहिं हुलिअं ।
ससंभमोअरण-खुभिअ-लुलिय-चल-कुंडलंगय-तिरीड-सोहत-
मउलिमाला. *वेड्ढओ. 22*
जं सुरसंघा सासुरसंघा, वेरविउत्ता भत्तिसुजुत्ता,
आयरभूसिअ-संभमपिंडिअ-सुट्ठु-सुविम्हिअ-सव्वबलोघा ।
उत्तमकंचण-रयण-परूविअ-भासुर-भूसण-भासुरिअंगा,
गायसमोणय-भत्ति-वसागय-पंजलि-पेसिय-सीस-पणमा. *रयणमाला.23*
वंदिऊण थोऊण तो जिणं, तिगुणमेव य पुणो पयाहिणं ।
पणमिऊण य जिणं सुरासुरा, पमुइआ सभवणाइं तो गया. *खित्तयं.24*

तं महामुणिमहं पि पंजली, रागदोस-भय-मोहवज्जियं ।
देव-दाणव-नरिंद-वंदिअं, संति-मुत्तमं महातवं नमे. *खित्तयं.* 25
अंबरंतर-विआरणिआहिं, ललिअ-हंसबहु-गामिणिआहिं,
पीण-सोणिथण-सालिणिआहिं, सकल-कमलदल-लोअणिआहिं, *दीवयं.26*
पीण-निरंतर-थणभर-विणमिय-गायलआहिं,
मणिकंचण-पसिढिल-मेहल-सोहिअ-सोणीतडाहिं ।
वरखिंखिणि-नेउरसतिलय-वलय-विभूसणिआहिं,
रइकर-चउर-मणोहर-सुंदरदंसणिआहिं. *चित्तक्खरा.* 27
देवसुंदरीहिं पायवंदिआहिं, वंदिआ य जस्स ते सुविक्कमा कमा,
अप्पणो निडालएहिं मंडणोड्डणप्पगारएहिं केहिं केहिं वि ।
अवंग-तिलय-पत्तलेह-नामएहिं चिल्लएहिं संगयंगयाहिं,
भत्तिसन्निविट्ठ-वंदणागयाहिं हुंति ते वंदिआ पुणो पुणो. *नारायओ.28*
तमहं जिणचंदं, अजिअं जिअमोहं ।
धुअसव्वकिलेसं, पयओ पणमामि. *नंदिअयं.* 29
थुअ-वंदिअयस्सा, रिसिगण-देवगणेहिं,
तो देववहूहिं, पयओ पणमिअस्सा ।
जस्स जगुत्तमसासणअस्सा, भत्तिवसागय पिंडियआहिं,
देववरच्छरसा-बहुआहिं, सुरवरइगुण-पंडियआहिं. *भासुरयं.* 30
वंससद्द-तंतिताल-मेलिए, तिउक्खराभिराम-सद्दमीसए कए अ,
सुइ-समाणणे अ-सुद्ध-सज्ज-गीअ-पाय-जाल-घंटिआहिं,
वलयमेहला-कलाव-नेउराभिराम-सद्दमीसए कए
देव-नट्टिआहिं हावभावविब्भमप्पगारएहिं,
नच्चिऊण अंगहारएहिं, वंदिआ य जस्स ते सुविक्कमा कमा,
तयं तिलोय-सव्वसत्तसंतिकारयं, पसंत सव्व-पाव-दोसमेसहं,
नमामि संतिमुत्तमं जिणं, *नारायओ.* 31
छत्त-चामर-पडाग-जुअ-जव-मंडिआ,
झयवरमगर-तुरयसिरिवच्छ-सुलंछणा ।

दीव-समुद्द-मंदर-दिसागय-सोहिया,
सत्थिअ-वसह-सीह-रह-चक्क-वरंकिया, *ललिअयं.* 32
सहावलट्ठा समप्पइट्ठा, अदोसदुट्ठा गुणेहिं जिट्ठा ।
पसायसिट्ठा तवेण पुट्ठा, सिरीहिं इट्ठा रिसीहिं जुट्ठा. *वाणवासिआ.33*
ते तवेण धुय-सव्वपावया, सव्वलोअ-हिअ-मूल-पावया ।
संथुआ अजिअ-संति-पायया, हुंतु मे सिवसुहाण दायया. *अपरांतिका.34*
एवं तव-बल-विउलं, थुअं मए अजिअ-संति-जिण-जुअलं ।
ववगय-कम्म-रय-मलं, गइं गयं सासयं विउलं. *गाहा.* 35
तं बहुगुणप्पसायं, मुक्खसुहेण परमेण अविसायं ।
नासेउ मे विसायं, कुणउ अपरिसाविअप्पसायं. *गाहा.* 36
तं मोएउ अ नंदि, पावेउ अ नंदिसेणमभिनंदिं ।
परिसा वि अ सुहनंदिं, मम य दिसउ संजमे नंदिं. *गाहा.* 37
पक्खिअ-चाउम्मासिअ, संवच्छरिए अवस्स भणिअव्वो ।
सोअव्वो सव्वेहिं, उवसग्ग-निवारणो एसो. 38
जो पढइ जो अ निसुणइ, उभओ कालंपि अजिअ-संतिथयं ।
न हु हुंति तस्स रोगा, पुव्वुप्पन्ना वि नासंति. 39
जइ इच्छह परमपयं, अहवा कित्तिं सुवित्थडं भुवणे ।
ता तेलुक्कुद्धरणे, जिणवयणे आयरं कुणह. 40

वरकनकशङ्खविद्रुम-मरकतघनसन्निभं विगतमोहं ।
सप्ततिशतं जिनानां, सर्वामरपूजितं वंदे ।।1।। (मात्र पुरुष बोले)

(फिर) इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । भगवान हं ।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । आचार्य हं ।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । उपाध्याय हं ।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । सर्वसाधु हं ।

(फिर दाहिना हाथ चरवले पर रखकर)

अड्ढाइज्जेसु दीवसमुद्देसु, पन्नरससु कम्मभूमिसु, जावंत के वि साहू, रयहरणगुच्छपडिग्गहधारा पंचमहव्वयधारा, अट्ठारससहस्स सीलंगधारा, अक्खुयायारचरित्ता, ते सव्वे सिरसा मणसा मत्थएण वंदामि ।।1।।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! देवसियपायच्छित्त विसोहणत्थं काउस्सग्ग करूं ? इच्छं, देवसियपायच्छित्त-विसोहणत्थं करेमि काउस्सग्गं ।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए पित्तमुच्छाए ।।1।। सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं ।।2।। एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सगो ।।3।। जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं, न पारेमि ।।4।। ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ।।5।।

(फिर **'चंदेसु निम्मलयरा** तक चार लोगस्स का काउस्सग्ग करे, लोगस्स न आता हो, तो सोलह नवकार गिने काउसग्ग पारकर ।')

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे ।
अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ।।1।।
उसभ-मजिअं च वंदे, संभव-मभिणंदणं च सुमइं च ।
पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ।।2।।
सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस-वासुपुज्जं च ।
विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ।।3।।
कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च ।
वंदामि रिट्ठनेमिं पासं तह वद्धमाणं च ।।4।।

एवं मए अभिथुआ, विहुय-रय-मला-पहीण-जरमरणा ।
चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ।।5।।
कित्तिय-वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा ।
आरूग्ग-बोहिलाभं, समाहि-वरमुत्तमं दिंतु ।।6।।
चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा ।
सागर-वर-गंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ।।7।।

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सज्झाय संदिसाहुं ? ''इच्छं''

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सज्झाय करू ? ''इच्छं''

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो उवज्झायाणं, नमो लोए सव्वसाहूणं । एसो पंच नमुक्कारो, सव्वपावप्पणासणो । मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं ।

उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं ।
विसहरविसनिन्नासं, मंगलं कल्लाण-आवासं ।।1।।
विसहर फुलिंगमंतं, कंठे धारेइ जो सया मणुओ ।
तस्स-गह-रोग-मारी, दुट्ठ-जरा जंति उवसामं ।।2।।
चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामोवि बहुफलो होइ ।
नर-तिरिएसु वि जीवा, पावंति न दुक्ख-दोगच्चं ।।3।।
तुह सम्मत्ते लद्धे, चिंतामणि कप्पपायवब्भहिए ।
पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं ।।4।।
इअ संथुओ महायस ! भत्तिब्भर निब्भररेण हिअएण ।
ता देव दिज्ज बोहिं, भवे भवे पास-जिणचंद ।।5।।
संसारदावानलदाहनीरं, संमोहधूली-हरणे समीरं ।
माया-रसादारण सारसीरं, नमामि वीरं गिरिसार-धीरं ।।1।।

भावानाम-सुर-दानव-मानवेन,
चूलाविलोल-कमलावलिमालितानि ।
संपूरिताभि-नतलोक समीहितानि,
कामं नमामि जिन-राज-पदानि तानि ।।2।।

बोधागाधं सुपद-पदवी-नीरपुराभिरामं,
जीवाहिंसा विरल-लहरी संगमागाहदेहं ।
चूलावेलं गुरूगममणि-संकुलं दूरपारं,
सारं वीरागमजलनिधिं सादरं साधु सेवे ।।3।।

आमूलालोलधूलीबहुलपरिमलालीढ-लोलालिमाला,
(सब एक साथ समूह में बोले ।)
झंङ्कारा-रावसारा-मलदल-कमलागार-भूमिनिवासे ।
छायासंभारसारे वरकमलकरे तारहाराभिरामे,
वाणी संदोहदेहे भवविरहवरं देहि मे देवि सारं ।।4।।

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो उवज्झायाणं, नमो लोए सव्वसाहूणं, एसो पंच नमुक्कारो, सव्वपावप्पणासणो, मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं ।

पक्खी आदि में छींक आ जाय, तो उसकी विधि

समुदाय में किसी को अतिचार के बाद छींक आई हो, तो अंत में सज्झाय होने के बाद खमासमण देकर **'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् क्षुद्रोपद्रव उड्डावणार्थं काउस्सग्ग करूं ? इच्छं, क्षुद्रोपद्रव उड्डावणार्थं करेमि काउस्सग्गं, अन्नत्थ. बोलकर चार लोगस्स का सागरवरगंभीरा तक काउस्सग्ग करे, फिर एक व्यक्ति काउस्सग्ग पारकर नमोर्हत्. बोलकर स्तुति बोले ।**

सर्वे यक्षाम्बिकाद्या रे, वैयावृत्यकरा जिने ।
क्षुद्रोपद्रवसंघातं, ते द्रुतं द्रावयन्तु नः ।।1।।
(फिर लोगस्स बोले ।)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहि मत्थएण वंदामि ।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! दुक्खक्खय-कम्मखयनिमित्तं काउस्सग्ग करूं ? ''इच्छं'' दुक्खक्खय–कम्मक्खयनिमित्तं करेमि काउस्सग्गं ।।

अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं, खासिएणं छीएणं जंभाइएणं, उड्डुएणं वायनिसग्गेणं, भमलीए पित्तमुच्छाए ।।1।। सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं ।।2।। एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सगो ।।3।। जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ।।4।। ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ।।5।।

(संपूर्ण चार लोगस्स का, लोगस्स न आता हो तो, सोलह नवकार का काउस्सग्ग करे, बाद में **नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योपाध्यायसर्व-साधुभ्यः** बोल कर बडी शान्ति बोले ।)

8

बडी शान्ति

भो भो भव्याः शृणुत वचनं प्रस्तुतं सर्वमेतद्,
ये यात्रायां त्रिभुवनगुरोरार्हता भक्तिभाजः ।
तेषां शांतिर्भवतु भवतामर्हदादि प्रभावा,
दारोग्य-श्री-धृति-मति-करी-क्लेश विध्वंसहेतुः ।।1।।

भो भो भव्यलोका ! इह हि भरतैरावत-विदेह-संभावनां, समस्त-तीर्थकृतां जन्मन्यासनं-प्रकम्पानन्तरमवधिना विज्ञाय, सौधर्माधिपतिः सुघोषा-घण्टा-चालनानन्तरं सकल-सुरासुरेन्द्रैः सह समागत्य, सविनयमर्हद्भट्टारकं गृहीत्वा गत्वा कनकाद्रि-शृङ्गे, विहितजन्माभिषेकः शान्तिमुद्घोषयति, यथा ततोऽहं कृतानुकारमिति कृत्वा, महाजनो येन गतः स पन्थाः, इति भव्यजनैः सह समेत्य स्नात्रपीठे स्नात्रं विधाय शान्तिमुद्घोषयामि, तत्पूजा-यात्रा-स्नात्रादि-महोत्सवानन्तरमिति कृत्वा कर्णं दत्वा निशम्यतां निशम्यतां स्वाहा ।।2।।

ॐ पुण्याहं पुण्याहं प्रीयन्तां प्रीयन्तां भगवन्तोऽर्हन्तः सर्वज्ञाः सर्वदर्शिनस्-त्रिलोकनाथास्-त्रिलोकमहितास्-त्रिलोकपूज्यास्त्रिलोकेश्वरास्-त्रिलोकोद्योतकराः ।।3।।

ॐ ऋषभ-अजित-संभव-अभिनन्दन-सुमति-पद्मप्रभ-सुपार्श्व-चन्द्रप्रभ-सुविधि-शीतल-श्रेयांस-वासुपूज्य-विमल-अनन्त-धर्म-शान्ति कुन्थु-अर-मल्लि-मुनिसुव्रत-नमि-नेमि-पार्श्व-वर्द्धमानान्ता जिनाः शान्ताः शान्तिकरा भवन्तु स्वाहा ।।4।।

ॐ मुनयो मुनिप्रवरा रिपुविजय-दुर्भिक्षकान्तारेषु दुर्ग-मार्गेषु रक्षन्तु वो नित्यं स्वाहा ।।5।।

ॐ ह्री श्री धृति मति-कीर्ति कान्ति बुद्धि-लक्ष्मी मेधा-विद्या-साधन-प्रवेश-निवेशनेषु सुगृहीत-नामानो जयन्तु ते जिनेन्द्राः ।।6।।

ॐ रोहिणी-प्रज्ञप्ति वज्रशृङ्खला-वज्रांकुशी-अप्रतिचक्रा-पुरूषदत्ता काली-महाकाली-गौरी-गांधारी-सर्वास्त्रा-महाज्वाला मानवी वैरूट्या अच्छुप्ता-मानसी-महामानसी षोडश विद्यादेव्यो रक्षन्तु वो नित्यं स्वाहा ।।7।।

ॐ आचार्योपाध्यायप्रभृतिचातुर्वर्णस्य श्री श्रमणसंघस्य शान्तिभर्वतु तुष्टिर्भवतु पुष्टिर्भवतु ।।8।।

ॐ ग्रहाश्चंद्र-सूर्याङ्गारक-बुध-बृहस्पति-शुक्र-शनैश्चर-राहु-केतुसहिताः सलोकपालाः सोम-यम-वरुण-कुबेर-वासवादित्य-स्कन्द विनायकोपेताः, ये चान्येऽपि ग्राम-नगर-क्षेत्र-देवतादयस्ते सर्वे प्रीयन्तां प्रीयन्तां अक्षीण-कोश कोष्ठागारा नरपतयश्च भवन्तु स्वाहा ।।9।।

ॐ पुत्र-मित्र-भ्रातृ-कलत्र-सुहृत्-स्वजन-सम्बान्धि बन्धुवर्गसहिताः नित्यं चामोद-प्रमोद-कारिणः, अस्मिंश्च भूमण्डल-आयतननिवासि-साधु-साध्वी-श्रावक-श्राविकाणां रोगोपसर्ग-व्याधि-दुःखदुर्भिक्ष-दौर्मन-स्योपशमनाय शान्तिर्भवतु ।।10।।

ॐ तुष्टि-पुष्टि-ऋद्धि-वृद्धि-मांगल्योत्सवाः । सदा प्रादुर्भूतानि पापानि शाम्यन्तु दुरितानि, शत्रवः पराङ्मुखा भवन्तु स्वाहा ।।11।।

श्रीमते शान्तिनाथाय, नमः शान्तिविधायिने ।
त्रैलोक्यस्यामराधीश मुकुटाभ्यर्चिताङ्घ्रये ।।12।।
शान्तिः शान्तिकरः श्रीमान्, शान्तिं दिशतु मे गुरूः ।
शान्तिरेव सदा तेषां, येषां शान्तिर्गृहे गृहे ।।13।।
उन्मृष्टरिष्टदुष्टग्रहगति-दुःस्वप्नदुर्निमित्तादि ।
संपादितहितसंपन्नामग्रहणं जयति शान्तेः ।।14।।
श्री संघजगज्जनपद, राजाधिप-राजसन्निवेशानाम् ।
गौष्टिकपुरमुख्याणां, व्याहरणैर्व्याहरेच्छान्तिम् ।।15।।
श्री श्रमणसंघस्य शान्तिर्भवतु,
श्री जनपदानां शान्तिर्भवतु,
श्री राजाधिपानां शान्तिर्भवतु,

श्री राजसन्निवेशानां शान्तिर्भवतु,
श्री गोष्ठिकानां शान्तिर्भवतु,
श्री पौरमुख्याणां शान्तिर्भवतु,
श्री पौरजनस्य शान्तिर्भवतु,
श्री ब्रह्मलोकस्य शान्तिर्भवतु
ॐ स्वाहा ॐ स्वाहा ॐ श्री पार्श्वनाथाय स्वाहा ।।16।।

एषा शान्तिः प्रतिष्ठायात्रास्नात्राद्यवसानेषु शान्तिकलशं गृहीत्वा कुङ्कुम चन्दन-कर्पूरागरुधूपवासकुसुमाञ्जलिसमेतः स्नात्रचतुष्किकायां श्रीसंघसमेतः शुचिशुचिवपुः पुष्पवस्त्रचन्दनाभरणाऽलंकृतः पुष्पमालां कण्ठे कृत्वा शान्तिमुद्घोषयित्वा, शान्तिपानीयं मस्तके दातव्यमिति ।।17।।

नृत्यन्ति नृत्यं मणिपुष्पवर्षं, सृजन्ति गायन्ति च मंगलानि ।
स्तोत्राणि गोत्राणि पठन्ति मंत्रान्, कल्याणभाजो हि जिनाभिषेके ।।18।।
शिवमस्तु सर्वजगतः, परहितनिरता भवन्तु भूतगणाः ।
दोषाः प्रयान्तु नाशं, सर्वत्र सुखीभवतु लोकः ।।19।।
अहं तित्थयरमाया, सिवादेवी तुम्ह नयरनिवासिनी ।
अम्ह सिवं तुम्ह सिवं, असिवोवसमं शिवं भवतु स्वाहा ।।20।।
उपसर्गाः क्षयं यान्ति, छिद्यन्ते विघ्नवल्लयः ।
मनः प्रसन्नतामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे ।।21।।
सर्वमंगलमांगल्यं, सर्वकल्याणकारणम् ।
प्रधानं सर्वधर्माणां, जैनं जयति शासनम् ।।22।।

(बडी शान्ति पूर्ण)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे ।
अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ।।1।।
उसभ-मजिअं च वंदे, संभव-मभिणंदणं च सुमइं च ।
पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ।।2।।

सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस-वासुपुज्जं च ।
विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ।।3।।
कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च ।
वंदामि रिट्ठनेमिं पासं तह वद्धमाणं च ।।4।।
एवं मए अभिथुआ, विहुय-रय-मला-पहीण-जरमरणा ।
चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ।।5।।
कित्तिय-वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा ।
आरूग्ग-बोहिलाभं, समाहि-वर-मुत्तमं दिंतु ।।6।।
चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा ।
सागर-वर-गंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ।।7।।

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि.

(चरवले पर हाथ रखकर)

अविधि आशातना मिच्छा-मि-दुक्कडम् ।

पक्खी-संवत्सरी प्रतिक्रमण समाप्त ।

आओ ! पर्युषण प्रतिक्रमण करें

पक्खि (संवत्सरी) प्रतिक्रमण के बाद सामायिक पारने की विधि

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि.

इच्छकारेण संदिसह भगवन् ! इरियावहियं पडिक्कमामि, इच्छं, इच्छामि पडिक्कमिउं ।।1।। इरियावहियाए, विराहणाए ।।2।। गमणागमणे ।।3।। पाणक्कमणे, बीयक्कमणे, हरियक्कमणे, ओसा उत्तिंग-पणग-दग-मट्टी-मक्कडा-संताणा-संकमणे ।।4।। जे मे जीवा विराहिया ।।5।। एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया ।।6।। अभिहया, वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परियाविया, किलामिया, उद्दविया, ठाणाओ ठाणं संकामिया, जीवियाओ ववरोविया, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ।।7।।

तस्स उत्तरी-करणेणं, पायच्छित्त-करणेणं, विसोही-करणेणं, विसल्ली-करणेणं, पावाणं कम्माणं, निग्घायणट्ठाए ठामि काउस्सग्गं।।1।।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए पित्तमुच्छाए ।।1।। सुहुमेहिं अंग-संचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं ।।2।। एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ, हुज्ज मे काउसग्गो ।।3।। जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ।।4।। ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ।।5।।

(एक लोगस्स `चंदेसु निम्मलयरा तक' लोगस्स नहीं आता हो तो चार नवकार का काउस्सग्ग करे ।) (काउसग्ग पार कर)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे ।
अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ।।1।।

उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च ।
पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ।।2।।
सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस-वासुपुज्जं च ।
विमल-मणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ।।3।।
कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमि-जिणं च ।
वंदामि रिट्ठनेमिं पासं तह वद्धमाणं च ।।4।।
एवं मए अभिथुआ, विहुयरय-मला-पहीण-जर-मरणा ।
चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ।।5।।
कित्तिय-वंदिय-महिया, जे ए लोगस्सउत्तमा सिद्धा ।
आरूग्ग-बोहिलाभं, समाहि-वर-मुत्तमं दिंतु ।।6।।
चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा ।
सागरवर-गंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ।।7।।

(उसके बाद बायां घुटना ऊंचा करके बोले ।)

चउक्कसायपडिमल्लुल्लूरणु, दुज्जय-मयणबाण-मुसुमूरणु ।
सरसपिअंगुवन्नु गयगामिउ, जयउ पासु भुवणत्तयसामिउ ।।1।।
जसु तणु कंति कडप्प सिणिद्धउ, सोहइ फणिमणि-किरणालिद्धउ ।
नं नवजलहर-तडिल्लयलंछिउ, सो जिणु पासु पयच्छउ वंछिउ ।।2।।

नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं ।।1।। आइगराणं, तित्थयराणं, सयंसंबुद्धाणं ।।2।। पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवरपुंडरीआणं, पुरिसवर-गंध-हत्थीणं ।।3।। लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगपईवाणं, लोगपज्जोअगराणं ।।4।। अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं, बोहिदयाणं ।।5।। धम्मदयाणं, धम्मदेसयाणं, धम्मनायगाणं, धम्मसारहीणं, धम्मवर-चाउरंत-चक्कवट्टीणं ।।6।। अप्पडिहय-वरनाण-दंसणधराणं, वियट्ट-छउमाणं ।।7।। जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं ।।8।। सव्वन्नूणं, सव्वदरिसीणं, सिव-मयल-मरूअ-मणंत-मक्खय-

मव्वाबाहमपुणरावित्ति-सिद्धि गइ-नामधेयं-ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं जिअभयाणं ।।9।।

जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले,
संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ।।10।।

जावंति चेइआइं, उड्ढे अ अहे अ तिरिअ लोए अ ।
सव्वाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइं ।।1।।

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि.

जावंत केवि साहू, भरहेरवय महाविदेहे अ ।
सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंड-विरयाणं ।।1।।
नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधुभ्यः ।
उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं ।
विस-हर विसनिन्नासं, मंगल कल्लाण-आवासं ।।1।।
विसहर फुलिंगमंतं, कंठे धारेइ जो सया मणुओ ।
तस्स-गह-रोग-मारी, दुट्ठ-जरा जंति उवसामं ।।2।।
चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामोवि बहुफलो होइ ।
नर-तिरिएसु वि जीवा, पावंति न दुक्ख-दोगच्चं ।।3।।
तुह सम्मत्ते लद्धे, चिंतामणि-कप्पपायवब्भहिए ।
पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं ।।4।।
इअ संथुओ महायस ! भत्तिब्भर निब्भरेण हिअएण ।
ता देव दिज्ज बोहिं, भवे भवे पास जिणचंद ।।5।।

(मस्तक पर दोनों हाथ लगाकर बोले)

जय वीयराय ! जगगुरू, होउ ममं तुह पभावओ भयवं ।
भवनिव्वेओ मग्गाणुसारिआ इट्ठफलसिद्धि ।।1।।
लोगविरूद्ध-च्चाओ, गुरूजणपूआ परत्थकरणं च ।
सुहगुरूजोगो तव्वयण-सेवणा आभवमखंडा ।।2।। (हाथ नीचे कर)
वारिज्जइ जइ वि निआण बंधणं वीयराय ! तुह समए,
तह वि मम हुज्ज सेवा, भवे भवे तुम्ह चलणाणं ।।3।।

दुक्खक्खओ कम्मक्खओ, समाहिमरणं च बोहिलाभो अ ।
संपज्जउ मह एअं, तुह नाम पणाम-करणेणं ।।4।।
सर्व मंगल-मांगल्यं, सर्व-कल्याण-कारणम् ।
प्रधानं सर्व-धर्माणां, जैनं जयति शासनम् ।।5।।

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! मुहपत्ति पडिलेहुं ! (गुरु कहे- पडिलेह) ``इच्छं''

(ऐसा बलोकर मुहपत्ति पडिलेहन करे...)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक पारूं ? (गुरु कहे- 'पुणो वि कायव्वं') 'यथाशक्ति'

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक पार्युं । (गुरु कहे- 'आयारो न मोत्तव्वो') 'तहत्ति'

(ऐसा बोलकर चरवले पर दाहिना हाथ रखकर बोले ।)

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो उवज्झायाणं, नमो लोए सव्वसाहूणं, एसो पंच नमुक्कारो, सव्वपावप्पणासणो, मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं ।

सामाइय वयजुत्तो, जाव मणे होइ नियमसंजुत्तो,
छिन्नइ असुहं कम्मं, सामाइय जत्तिया वारा ।।1।।
सामाइअंमि उ कए, समणो इव सावओ हवइ जम्हा ।
एएण कारणेणं, बहुसो सामाइयं कुज्जा ।।2।।

सामायिक विधि से लिया, विधि से पारा, विधि करते जो कोई अविधि हुई हो, वह सब मन वचन काया कर मिच्छामि दुक्कडं ।

दश मन के, दश वचन के, बारह काया के इन बत्तीस दोषों में जो कोई दोष लगा हो, वह सब मन वचन काया कर मिच्छा मि दुक्कडं ।।

(गुरु स्थापना की हो, तो उत्थापन मुद्रा करके एक नवकार बोलकर उत्थापना करे ।)

9

चैत्यवंदन

1. श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ भगवान

जय चिंतामणि पार्श्वनाथ, जय त्रिभुवन स्वामी,
अष्टकर्म रिपु जितीने, पंचमी गति पामी ।।1।।

प्रभु नामे आनंद कंद, सुख संपत्ति लहीए,
प्रभु नामे भवभय तणा, पातिक सब दहीए ।।2।।

ॐ ह्रीँ वर्ण जोडी करी, जपीये पारस नाम,
विष अमृत थइ परिणमे, पामे अविचल ठाम ।।3।।

2. श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ भगवान

ॐ नमः पार्श्वनाथाय, विश्व-चिंतामणीयते ।
ह्रीँ धरणेन्द्र-वैरूट्या, पद्मादेवी-युतायते ।।1।।

शान्ति-तुष्टि-महा-पुष्टि-धृति-कीर्ति-विधायिने ।
ॐ ह्रीँ द्विड्-व्याल-वैताल सर्वाधि-व्याधि नाशिने ।।2।।

जयाऽजिता-ख्या विजयाख्याऽपराजितयान्वितः ।
दिशांपालै-र्ग्रहैर्यक्षै र्विद्यादेवीभिरन्वितः ।।3।।

ॐ असिआउसाय नमस्तत्र त्रैलोक्यनाथताम् ।
चतुःषष्टि-सुरेन्द्रास्ते भासन्ते छत्र चामरैः ।।4।।

श्री शंखेश्वर मंडन ! पार्श्वजिन प्रणत कल्पतरूकल्प !
चूरय दुष्ट व्रातं पूरय मे वांछितं नाथ ! ।।5।।

श्री सीमंधर स्वामी

श्री सीमंधर जगधणी, आ भरते आवो,
करूणावंत करूणा करी, अमने वंदावो ।।1।।

सकल भक्त तुमे धणी, जो होवे अम नाथ,
भवोभव हुं छु ताहरो, नहीं मेलुं हवे साथ ।।2।।
सकल संग छंडी करी, चारित्र लइशुं,
पाय तुमारा सेविने, शिवरमणी वरशु ।।3।।
ए अलजो मुजने घणोए, पूरो सीमंधर देव,
इहा थकी हुं विनवुं, अवधारो मुज सेव ।।4।।
कर जोडीने विनवुं, सामु रही ईशान ।
भाव जिनेश्वर भाण ने, देजो समकित दान ।।5।।

श्री सिद्धाचलजी

विमल-केवलज्ञान-कमला, कलित-त्रिभुवन-हितकरं ।
सुरराज-संस्तुत-चरणपंकज, नमो आदि जिनेश्वरं ।।1।।
विमलगिरिवर-शृंगमंडण, प्रवर गुणगण-भूधरं ।
सुर-असुर-किन्नर-कोडीसेवित, नमो आदि जिनेश्वरं ।।2।।
करती नाटक किन्नरीगण, गाय जिनगुण मनहरं ।
निर्जरावली नमे अहोनिश, नमो आदि जिनेश्वरं ।।3।।
पुंडरीक-गणपति सिद्धि साधी, कोडी पण मुनि मनहरं ।
श्री विमलगिरिवर शृंग सिद्धा, नमो आदि जिनेश्वरं ।।4।।
निज साध्य साधक सुर मुनिवर, कोडिनंत ए गिरिवरं ।
मुक्ति रमणी वर्या रंगे, नमो आदि जिनेश्वर ।।5।।
पाताल नर सुर लोकमांहि, विमलगिरिवर तो परं,
नहीं अधिक तीरथ तीर्थपति कहे, नमो आदि जिनेश्वरं ।।6।।
इम विमलगिरिवर शिखर मंडण, दुःख विहंड़ण ध्याइए ।
निज शुद्ध सत्ता साधनार्थ, परम ज्योति निपाइये ।।7।।
जित-मोह-कोह-विछोह-निद्रा, परमपद स्थित जयकरं ।
गिरिराज सेवा करणतत्पर, *पद्मविजय* सुहितकरं ।।8।।

श्री पर्युषणपर्व

पर्व पर्युषण गुण नीलो, नव कल्पी विहार,
चार मासान्तर थिर रहे, एहीज अर्थ उदार ।।1।।
आषाढ सुद चउदश थकी, संवत्सरी पचास,
मुनिवर दिन सित्तेरमें, पडिक्कमतां चौमास ।।2।।
श्रावक पण समता धरी, करे गुरूना बहुमान,
कल्पसूत्र सुविहित मुखे, सांभळे थई एकतान ।।3।।
जिनवर चैत्य जुहारीये, गुरूभक्ति विशाल,
प्राये अष्ट भवांतरे, वरीये शिव वरमाल ।।4।।
दर्पणथी निज रूपनो, जुवे सुदृष्टि रूप,
दर्पण अनुभव अर्पणो, ज्ञान रयण मुनि भूप ।।5।।
आत्म स्वरूप विलोकतां, प्रगट्यो मित्र स्वभाव,
राय उदायी खामणां, पर्व पर्युषण दाव ।।6।।
नव वखाण पूजी सुणो, शुक्ल चतुर्थी सीमा,
पंचमी दिन वांचे सुणे, होय विराधक नियमा ।।7।।
ए नहीं पर्वे पंचमी, सर्व समाणी चोथे,
भव भीरू मुनि मानशे, भाख्युं अरिहा नाथे ।।8।।
श्रुतकेवली वयणां सुणी, लही मानव अवतार,
श्री शुभवीरने शासने, पाम्या जय जयकार. ।।9।।

श्री पर्युषणपर्व

वडा कल्प पूरव दिने, घरे कल्पने लावो,
रात्रि जागरण प्रमुख करी, शासन सोहावो ।।1।।
हय गय शणगारी कुमर, लावो गुरूपासे,
वडाकल्प दिन सांभळे, वीर चरित उल्लासे ।।2।।
छठ द्वादश तप कीजिए, धरीए शुभ परिणाम,
स्वामी वत्सल प्रभावना, पूजा अभिराम ।।3।।
जिन उत्तम गौतम प्रत्ये, कहे जो एकवीश वार,
गुरू मुख *पद्मे* भावशुं, सुणतां पामे पार ।।4।।

10

स्तवन विभाग

1. श्री ऋषभदेव स्वामी का स्तवन

माता मरुदेवीना नंद, देखी ताहरी मुरति,
मारुं मन लोभाणुजी, मारुं दिल लोभाणुंजी,
करुणा नागर करुणा सागर, काया कंचनवान,
धोरी लंछन पाउले कांइ, धनुष पांचसे मान... माता...।।1।।
त्रिगडे बेसी धर्म कहंता, सुणे पर्षदा बार,
जोजन गामिनी वाणी मीठी, वरसंती जलधार... माता...।।2।।
उर्वशी रुडी अपच्छराने, रामा छे मन रंग,
पाये नेऊर रणझणें कांइ, करती नाटारंभ... माता...।।3।।
तुं ही ब्रह्मा, तुं ही विधाता, तुं जग तारणहार,
तुज सरीखो नहि देव जगतमां, अरवडीआ आधार...माता...।।4।।
तुं ही भ्राता तुं ही त्राता, तुं ही जगतनो देव,
सुर नर किन्नर वासुदेवा, करता तुज पद सेव... माता...।।5।।
श्री सिद्धाचल तीरथ केरो, राजा ऋषभजिणंद,
कीर्ति करे *माणेकमुनि* ताहरी, टालो भव-भय फंद...माता...।।6।।

2. श्री पार्श्वनाथ प्रभु का स्तवन

समय समय सो वार संभारुं, तुजशुं लगनी जोर रे,
मोहन मुजरो मानी लेजो, ज्युं जलधर प्रीति मोर रे...समय...1
माहरे तन धन जीवन तुंही, एहमां जूठ न जाणो रे,
अंतरजामी जगजन नेता, तुं कीहां नथी छानो रे...समय...2

जेणे तुजने हैडे नवि ध्यायो, तास जनम कुण लेखे रे,
काचे राचे ते नर मूरख, रत्नने दूर उवेखे रे... समय...3
सुरतरू छाया मूकी गहरी, बाउळ तळे कुण बेसे रे,
ताहरी ओलग लागे मीठी, किम छोडाय विशेषे रे... समय...4
वामानंदन पास प्रभुजी, अरजी चित्तमां आणो रे,
रूप विबुधनो *मोहन* पभणे, निज सेवक कारी जाणो रे...समय...5

3. महावीर स्वामी के स्तवन

1.

गिरूआरे गुण तुम तणा, श्री वर्धमान जिनराया रे,
सुणतां श्रवणे अमी झरे, मारी निर्मल थाये काया रे...गिरूआ..1
तुम गुण गण गंगाजले, हुं झीलीने निर्मल थाउं रे,
अंवर न धंधो आदरूं, निश दिन तोरा गुण गाउं रे...गिरूआ..2
झील्या जे गंगाजले, ते छिल्लर जल नवी पेसेरे,
जे मालती फूले मोहीया, ते बावल जई नवी बेसे रे...गिरूआ..3
एम अमे तुम गुण गोठशुं, रंगे राच्या ने वली माच्या रे,
ते केम पर सुर आदरे, जे परनारी वश राच्या रे... गिरूआ..4
तुं गति तुं मति आशरो, तुं आलंबन मुझ प्यारो रे,
वाचक *यश* कहे माहरे, तु जीव जीवन आधारो रे... गिरूआ..5

2.

रूडी ने रडियाळी रे, वीर तारी देशना रे,
ए तो भली योजनमां संभळाय, समकित बीज आरोपण थाय.
रूडी ने..1
षट् महिनानीरे भूख तरस शमे रे, साकर द्राख ते हारी जाय,
कुमतिजनना मद मोडाय रूडी ने..2
चार निक्षेपे रे सात नये करी रे, मांहे भली सप्तभंगी विख्यात,
निज निज भाषाए समजाय रूडी ने..3

प्रभुजीने ध्यातां रे शिवपदवी लहे रे, आतम ऋद्धिनो भोक्ता थाय,
ज्ञानमां लोकालोक समाय रूडी ने..4
प्रभुजी सरिखा रे देशक को नहि रे, एम सहु जिन उत्तम गुण गाय,
प्रभु पद *पद्म*ने नित्य नित्य ध्याय रूडी ने..5

3.

सिद्धारथना रे नंदन विनवुं, विनतडी अवधार,
भवमंडपमां रे नाटक नाचियो, हवे मुज दान देवराव,
हवे मुज पार उतार... सिद्धारथ..।।1।।
त्रण रतम मुज आपो तातजी, जेम नावे रे संताप,
दान दीयंता रे प्रभु कोसर कीसी, आपो पदवी रे आप..सिद्धारथ.।।2।।
चरण अंगुठे रे मेरू कंपावीयो, मोड्यां सुर ना रे मान,
अष्ट करमना रे झगडा जीतवा, दीधां वरसी रे दान...सिद्धारथ.।।3।।
शासन नायक शिवसुख दायक, त्रिशला कुखे रतन,
सिद्धारथनो रे वंश दीपावीयो, प्रभुजी तुमे धन्य धन्य..सिद्धारथ.।।4।।
वाचक शेखर कीर्तिविजय गुरु, पामी तास पसाय,
धर्म तणा ए जिन चौवीशमां *विनय विजय* गुण गाय..सिद्धारथ..।।5।।

4. श्री सीमंधर स्वामी के स्तवन

1.

सुणो चंदाजी, सीमंधर परमातम पासे जाजो,
मुज विनतडी प्रेम धरीने, एणी पेरे तुमे संभळावजो,
जे त्रण भुवननो नायक छे, जस चोसठ इन्द्र पायक छे,
नाण दरिसन जेहने खायक छे, सुणो..।।1।।
जेनी कंचन वरणी काया छे, जस धोरी लंछन पाया छे,
पुंडरीगिणि नगरीनो राया छे, सुणो..।।2।।
बार पर्षदा मांही बिराजे छे, जस चोत्रीश अतिशय छाजे छे,
गुण पांत्रीश वाणीए गाजे छे, सुणो..।।3।।

भविजनने जे पडिबोहे छे, तुम अधिक शीतल गुण सोहे छे,
रुप देखी भविजन मोहे छे, सुणो..।।4।।
तुम सेवा करवा रसियो छुं, पण भरतमां दूरे वसीयो छुं,
महामोहराय कर फसियो छुं, सुणो..।।5।।
पण साहिब चित्तमां धरीयो छे, तुम आणा खडग कर ग्रहियो छे,
तो कांइक मुजथी ड़रीयो छे, सुणो..।।6।।
जिन उत्तम पूंठ हवे पूरो, कहे *पद्मविजय* थाउ शूरो,
तो वाधे मुज मन अति नूरो, सुणो..।।7।।

2.

विनंती माहरी रे, सुणजो साहिबा, सीमंधर जिनराज,
त्रिभुवन तारक अरज उरे धरो, देजो दरिशन आज ।।1।।
आप वस्या जइ क्षेत्र विदेहमां, हुं रहुं भरत मोझार,
ए मेळो केम होय जगधणी, ए मुझ सबल विचार ।।2।।
वचमां वनद्रह पर्वत अति घणां, वळी नदीओना रे घाट,
कीणविध भेटुं रे आवी तुम कने, अति विषमी ए वाट ।।3।।
कीहां मुज दाहिण भरतक्षेत्र रहुं, कीहां पुक्खलवइ राज,
मनमां अलजो रे मळवानो अति घणो, भवजल तरणजहाज ।।4।।
निशदिन आलंबन मुज ताहरुं, तुं मुज हृदय मोझार,
भवदुःखभंजन तुं ही निरंजनो, करुणा रस भंडार ।।5।।
मनवांछित सुखसंपद पूरजो, चूरजो कर्मनी राश,
नितनित वंदन हु भावे करुं, एहीं ज छे अरदास ।।6।।
तात श्रेयांस नरेसर जगतिलो, सत्यकी राणीनो जात,
सीमंधर जिन विचरे महितले, त्रण भुवनमां विख्यात ।।7।।
भवोभव सेवारे, तुम पदकमलनी, देजो दीनदयाल,
बे कर जोडी *उदयरतन* वदे, नेक नजरथी निहाळ ।।8।।

5. सिद्धाचल का स्तवन

ऐसी दशा हो भगवान, जब प्राण तन से निकले,
गिरिराज की हो छाया, मनमें न होवे माया,
तपसे हो शुद्ध काया, जब प्राण तन से निकले... एसी..।।1।।
उर मे न मान होवे, दिल एक तान होवे,
तुम चरण ध्यान होवे, जब प्राण तन से निकले... एसी..।।2।।
संसार दुःख हरणां, जैन धर्म का हो शरणा,
हो कर्म भर्म खरनां, जब प्राण तन से निकले... एसी..।।3।।
अनसन को सिद्धवट हो, प्रभु आदिदेव घट हो,
गुरूराज भी निकट हो, जब प्राण तन से निकले...एसी..।।4।।
यह दान मुज को दीजे, इतनी दया तो कीजे,
अरजी तिलक की लीजे, जब प्राण तन से निकले...एसी..।।5।।

6. श्री संतिकरं स्तोत्र

सतिकरं संतिजिणं, जगसरणं जयसिरीई दायारं,
समरामि भत्तपालग-निव्वाणी-गरुडकयसेवं... ।।1।।
ॐ सनमो विप्पोसहि-पत्ताणं संतिसामिपायाणं,
झ्रौं स्वाहा मंतेणं, सव्वासिव-दुरिअ-हरणाणं... ।।2।।
ॐ संतिनमुक्कारो, खेलोसहिमाइ-लद्धिपत्ताणं,
सौं ह्रीं नमो सव्वो-सहिपत्ताणं च देइ सिरीं... ।।3।।
वाणी तिहुअणसामिणी, सिरिदेवी जक्खराय गणिपिडगा,
गह-दिसिपाल-सुरिंदा, सया वि रक्खंतु जिणभत्ते... ।।4।।
रक्खंतु मम रोहिणी, पन्नत्ती वज्जसिंखला य सया ।
वज्जंकुसी चक्केसरी नरदत्ता काली महाकाली... ।।5।।
गोरी तह गंधारी, महजाला माणवी अ वइरुट्टा ।
अच्छुत्ता माणसिआ, महामाणसिआओ देवीओ... ।।6।।
जक्खा गोमुह महजक्ख, तिमुह जक्खेस तुंबरू कुसुमो,
मायंग-विजय-अजिआ, बंभो मणुओ सुरकुमारो... ।।7।।

छम्मुह पयाल किन्नर, गरुडो गंधव्व तह य जक्खिदो,
कूबेर वरुणो भिउडी, गोमेहो पास-मायंगा... ।।8।।
देवीओ चक्केसरी, अजिआ दुरिआरि काली महाकाली,
अच्चुअ संता जाला, सुतारयासोय सिरिवच्छा... ।।9।।
चंडा विजयंकुसी, पन्नइत्ति निव्वाणी अच्चुआ धरणी,
वइरुट्टछुत्तं गंधारी, अंब पउमावइ सिद्धा... ।।10।।
इअ तित्थ-रक्खण-रया, अन्नेवि सुरासुरी य चउहा वि ।
वंतर-जोईणी-पमुहा, कुणंतु रक्खं सया अम्हं... ।।11।।
एवं सुदिट्ठिसुरगण, सहिओ संघस्स संतिजिणचंदो,
मज्झवि करेउ रक्खं, मुणिसुंदरसूरि-थुअ-महिमा... ।।12।।
इअ संतिनाह सम्म-दिट्ठि-रक्खं सरइ तिकालं जो ।
सव्वोवद्दवरहिओ, स लहइ सुहसंपयं परमं... ।।13।।
तवगच्छगयणदिणयर-जुगवरसिरिसोमसुंदरगुरुणं,
सुपसायलद्धगणहर-विज्जासिद्धि भइण सीसो... ।।14।।

7. पर्युषण पर्व के स्तवन

1.

सुणजो साजन संत, पजुसण आव्या रे,
तमे पुण्य करो पुण्यवंत, भविक मन भाव्यां रे...
वीर जिणेसर अति अलवेसर, व्हाला मारा परमेश्वर एम बोल रे,
पर्वमांहे पजुसण म्होटा, अवर न आवे तस तोले रे...पजु.।।1।।
चौपदमां जेम केशरी मोटो व्हाला० खगमां गरूड ते कहिए रे,
नदीमांहे जेम गंगा म्होटी, नगमां मेरु लहीए रे... पजु.।।2।।
भूपतिमां भरतेश्वर भाख्यो, व्हाला० देव मांहे सूर इंद्र रे,
तीरथमां शत्रुंजय दाख्यो, ग्रहगणमां जेम चंद्र रे... पजु.।।3।।
दशेरा दीवाळी ने वळी होळी, व्हाला० अखात्रीज दिवसो रे,
बळेव प्रमुख बहुलां छे बीजां, पण नहि मुक्तिनो वासो रे...पजु.।।4।।

ते माटे तमे अमर पलावो, व्हाला० अट्ठाई महोत्सव कीजे रे,
अट्ठमतप अधिकाइ ए करीने, नरभव लाहो लीजे रे...पजु.।।5।।
ढोल ददामा भेरी न फेरी, व्हाला० कल्पसूत्र ने जगावो रे,
झांझरना झमकार करीने, गोरीनी टोली मळी आवो रे...पजु.।।6।।
सोना रूपाना फूलडे वधावो, व्हाला० कल्पसूत्र ने पूजो रे,
नव वखाण विधिए सांभळता, पाप मेवासी धूजो रे...पजु.।।7।।
एम अट्ठाइ महोत्सव करतां, व्हाला० बहु जीव जग उद्धरीया रे,
विबुध विजय वर सेवक नय कहे,नवनिधि ऋद्धि सिद्धि वरिया रे.पजु.।।8।।

2. (राग : आवो आवो...हे वीर...)

रीझो रीझो श्री वीर देखी, शासनना शिरताज,
हरखो हरखो आ मौसम आवी, पर्व पर्युषण आज...री...।।1।।
प्रभुजी देवे पर्षदामांहे, उत्तम शिक्षा एम,
आलसमां बहु काल गुमाव्यो, पर्व न साधो केम ?...री...।।2।।
सोनानो रजकण संभाले, जेम सोनी एक चित्त,
तेथी पण आ अवसर अधिको, करो आतम पवित्त...री...।।3।।
जेने माटे निशदिन रखडो, तजी धरमना नेम,
पाप करो तो शिरपर बोजो, ते तो व्याजबी केम... री...।।4।।
कोई न लेशे भाग पापमा, धननो लेशे सर्व,
परभव जातां साथ धर्मनो, साधो आ शुभ पर्व... री...।।5।।
संपीने समताए सुणजो, अट्ठाई व्याख्यान,
छट्ठ करजो श्री कल्पसूत्रनो, वार्षिक अट्ठम जाण... री...।।6।।
निशीथ सूत्रनी चूर्णिमांहे, आलोचना वखणाय,
खमीए होंशे सर्वजीवने, जीवन निर्मल थाय... री...।।7।।
उपकारी श्री प्रभुनी कीजे, पूजा अष्ट प्रकार,
चैत्य जुहारो गुरु वंदी जे, आवश्यक बे काल... री...।।8।।
पोषध चोसठ प्रहरी करतां, जाये कर्म जंजला,
पद्मविजय समता रस झीले, धर्मे मंगलमाल... री...।।9।।

3.

(राग : है यह पावन भूमि)

प्रभु वीर जिणंद विचारी, भाख्या पर्व पर्युषण भारी,
आखा वर्षमां ते दिन म्होटा, आठे नहि तेमां छोटा रे,
ए उत्तम ने उपकारी भाख्यां, भाख्या पर्व पर्युषण भारी.....।।1।।
जेम औषधमांही कहीए, अमृतने सारु लहीए रे;
महामंत्रमां नवकारवाळी, भाख्यां... ...।।2।।
वृक्षमांहि कल्पतरु सारो, एम पर्व पर्युषण सारो रे;
सूत्रमांही कल्प भवतारी, भाख्यां... ...।।3।।
तारागणमां जेम चंद्र, सुरवरमांहि जेम इंद्र रे;
सतीओमां सीता नारी, भाख्यां... ...।।4।।
जो बने तो अट्ठाई कीजे, वली मासखमण तप लीजे रे;
सोलभत्थानी बलिहारी, भाख्यां... ...।।5।।
नहि तो चोथ छट्ठ तो लहीए, अट्ठम करी दुःख सहीए रे;
ते प्राणी जुज अवतारी, भाख्यां... ...।।6।।
ते दिवसे राखी समता, छोडो मोह माया ने ममता रे;
समता रस दिलमां धारी, भाख्यां... ...।।7।।
पूरव तणो सार लावी, जेणे कल्पसूत्र बनावी रे;
भद्रबाहु वार अनुसारी, भाख्यां... ...।।8।।
सोना रूपानां फूलडा भरीए, ए कल्पनी पूजा करीए रे;
ए शास्त्र अनोपम भारी, भाख्यां... ...।।9।।
गीतगान वाजिंत्र बजावे, प्रभुजीनी आंगी रचावे रे;
करे भक्ति वार हजारी, भाख्यां... ...।।10।।
सुगुरू मुखथी ए सार, सुणे अखंड एकवीश वार रे;
जावे एहि ज भवे शिव प्यारी, भाख्यां... ...।।11।।
एम अनेक गुणना खाणी, ते पर्व पर्युषण जाणी रे;
सेवो *दान* दया मनोहारी, भाख्यां... ...।।12।।

11

महावीर स्वामी के 27 भव का स्तवन

दोहे

श्री शुभविजय सुगुरू नमी, नमी पद्मावती माय,
भव सत्तावीश वर्णवुं, सुणतां समकित थाय ।।1।।
समकित पामे जीवने, भव गणती ए गणाय,
जो वळी संसारे भमे, तो पण मुगते जाय ।।2।।
वीर जिनेश्वर साहिबो, भमियो काळ अनंत,
पण समकित पाम्या पछी, अंते थया अरिहंत ।।3।।

ढाल-पहेली

पहेले भवे एक गामनो रे, राय नामे नयसार,
काष्ट लेवा अटवी गयो रे, भोजन वेळा थाय रे,
प्राणी ! धरीये समकित रंग, जिम पामिये सुख अभंग रे..प्राणी. ।।1।।
मनचिंते महिमा नीलो रे, आवे तपसी कोय,
दान दइ भोजन करुं रे, तो वांछित फळ होय रे...प्राणी. ।।2।।
मारग देखी मुनिवरा रे, वंदे देइ उपयोग,
पूछे केम भटको इहां रे, मुनि कहे साथ विजोग रे...प्राणी. ।।3।।
हरख भरे तेडी गयो रे, पडिलाभ्या मुनिराज,
भोजन करी कहे चालीए रे. साथ भेळां करुं आज रे...प्राणी. ।।4।।
पगवटीए भेळा कर्यां रे, कहे मुनि द्रव्य ए मार्ग,
संसारे भूला भमो रे, भाव मारग अपवर्ग रे...प्राणी. ।।5।।

देव गुरू ओळखावीया रे, दीधो विधि नवकार,
पश्चिम महाविदेहमां रे, पाम्यो समकित सार रे...प्राणी. ।।6।।
शुभ ध्याने मरी सुर हुओ रे, पहेले स्वर्ग मोझार,
पल्योपम आयु च्यवी रे, भरत घरे अवतार रे...प्राणी. ।।7।।
नामे मरीची जोवने रे, संयम लीए प्रभु पास,
दुष्कर चरण लही थयो रे, त्रिदंडिक शुभ वास रे...प्राणी. ।।8।।

ढाल-दूसरी (तर्ज-ए मेरे वतन के...)

नवो वेष रचे तेणी वेला, विचरे आदीश्वर भेला ।
जल थोडे स्नान विशेष, पग पावडी भगवे वेषे ।।1।।
धरे त्रिदंड लाकडी मोटी, शिर मुंडण ने धरे चोटी ।
वळी छत्री विलेपन अंगे, स्थुलथी व्रत धरतो रंगे ।।2।।
सोनानी जनोइ राखे, सहुने मुनि मारग भाखे ।
समोवसरणे पूछे नरेश, कोई आगे होशे जिनेश ।।3।।
जिन जंपे भरतने ताम, तुज पुत्र मरीचि नाम ।
वीर नामे थशे जिन छेल्ला, आ भरते वासुदेव पहेला ।।4।।
चक्रवर्ति विदेहे थाशे, सुणी आव्या भरत उल्लासे ।
मरिचीने प्रदक्षिणा देता, नमी वंदी ने एम कहेता ।।5।।
तमे पुन्याइवंत गवाशो, हरि चक्रि चरम जिन थाशो ।
नवि वंदुं त्रिदंडिक वेष, नमु भक्तिये वीर जिनेश ।।6।।
एम स्तवना करी घर जावे, मरिची मन हर्ष न मावे ।
म्हारे त्रण पदवीनी छाप, दादा जिन चक्री बाप ।।7।।
अमे वासुदेव धुर थइशुं, कुल उत्तम म्हारूं कहीशुं ।
नाचे कुलमद शुं भराणो, नीच गोत्र तिहां बंधाणो ।।8।।
एक दिन तनु रोगे व्यापे, कोइ साधु पाणी न आपे ।
त्यारे वंछे चेलो एक, तव मलियो कपिल अविवेक ।।9।।
देशना सुणी दीक्षा वासे, कहे मरिची लीयो प्रभु पासे ।
राज पुत्र कहे तुम पासे, लेशुं अमे दीक्षा उल्लासे ।।10।।

तुम दरशने धरमनो व्हेम, सुणी चिंते मरिची एम ।
मुज योग्य मळ्यो ए चेलो, मूल कडवे कडवो वेलो ।।11।।
मरिची कहे धर्म उभयमां, लीए दीक्षा जो बन वयमां ।
एणे वचने वध्यो संसार, ए त्रीजो कह्यो अवतार ।।12।।
लाख चोराशी पूरव आय, पाळी पंचमे स्वर्ग सधाय ।
दश सागर जीवित त्यांही, *शुभवीर* सदा सुख मांही ।।13।।

ढाल-तीसरी (तर्ज : सावन का महिना)

पांचमे भव कोल्लाग सन्निवेश, कौशिक नामे ब्राह्मण वेष ।
ऐंशी लाख पूरव अनुसरी, त्रिदंडीया ने वेषे मरी ।।1।।
काल बहु भमीयो संसार, थुणापुरी छट्ठो अवतार ।
बहोंतेर लाख पूरवनुं आय, विप्र त्रिदंडीक वेष धराय ।।2।।
सौधर्मे मध्य स्थितिये थयो, आठमे चैत्य सन्निवेशे गयो ।
अग्निद्योत द्विज त्रिदंडीयो, पूर्व आयु लाख साठे मूओ ।।3।।
मध्य स्थितिये सुर स्वर्ग इशान, दशमे मंदिर पुर द्विज ठाण ।
लाख छप्पन पूरवायुधरी, अग्निभूति त्रिदंडीक मरी ।।4।।
त्रीजे स्वर्गे मध्यायु धरी, बारमे भव श्वेतांबीपुरी ।
पुरव लाख चुम्मालीश आय, भारद्विज त्रिदंडीक थाय ।।5।।
तेरमे चोथे स्वर्गे रमी, काळ घणो संसारे भमी ।
चउदमे भव राजगृही जाय, चोत्रीश लाख पूर्वने आय ।।6।।
थावर विप्र त्रिदंडी थयो, पांचमे स्वर्गे मरीने गयो ।
सोळमे भव क्रोड वर्षनुं आय, राजकुमार विश्वभूती थाय ।।7।।
संभूतिमुनि पासे अणगार, दुष्कर तप करी वरस हजार ।
मासखमण पारणे धरी दया, मथुरामां गौचरी ए गया ।।8।।
गाये हण्या मुनि पडिया वशा, विशाखानंदी पितरीया हस्या ।
गौशृंगे मुनि गर्वे करी, गयण उछाळी धरती धरी ।।9।।
तप बळथी होज्यो बळ घणी, करी नियाणुं मुनि अणसणी ।
सत्तरमें महाशुक्रे सुरा, श्री *शुभवीर* सत्तर सागरा ।।10।।

ढाल-चौथी (तर्ज : आखडी मारी प्रभु...)

अढारमें भवे सात सुपने सुचित सति,
पोतनपुरीये प्रजापति राणी मृगावती ।
तस सुत नामे त्रिपृष्ठ वासुदेव निपन्या,
पाप घणुं करी सातमी नरके उपन्या ।।1।।
वीशमें भव थइ सिंह चोथी नरके गया,
तिहांथी च्यवी संसारे भव बहुला थया ।
बावीशमें नरभव लइ पुण्य दशा वर्या,
त्रेवीशमें राजधानी मुकामे संचर्या ।।2।।
राय धनंजय धारणी राणीये जनमीया,
लाख चोराशी पूरव आयु जीवीया ।
प्रियमित्र नामे चक्रवर्ति दीक्षा ग्रही,
कोडी वरस चारित्र दशा पाली सही ।।3।।
महाशुक्रे थइ देव इणे भरते च्यवी,
छत्रिका नगरीये जितशत्रु राजवी ।
भद्रा माय लाख पचवीश वरस स्थिति धरी,
नंदन नामे पुत्रे दीक्षा आचरी ।।4।।
अगियार लाखने ऐंसी हजार छस्से वळी,
उपर पीस्ताळीसं अधिक पण दिन रूडी ।
वीशस्थानक मासखमणे जावज्जीव साधता,
तीर्थंकर नाम कर्म तिहां निकाचता ।।5।।
लाख वरस दीक्षा पर्याय ते पालता,
छव्वीशमें भव प्राणत कल्पे देवता ।
सागर वीशनुं जीवीत सुख भर भोगवे,
श्री शुभवीर जिनेश्वर भवसुणजो हवे ।।6।।

ढाल पांचवीं

नयर माहणकुंडमां वसे रे, महाऋद्धि ऋषभदत्त नाम ।
देवानंदा द्विज श्राविका रे, पेट लीधो प्रभु विसराम रे, (2) ।।1।।
ब्यासी दिवसने अंतरे रे, सुर हरिणगमेषी आय ।
सिद्धारथ राजा घरे रे, त्रिशला कुखे छटकाय रे, (2) ।।2।।
नव मासांतरे जनमीया रे, देव देवीये ओच्छव कीध ।
परणी यशोदा जोवने रे, नामे महावीर प्रसिद्ध रे, (2) ।।3।।
संसार लीला भोगवी रे, त्रीश वर्षे दीक्षा लीध रे,
बार वरसे हुआ केवळी रे, शिव वहुनुं तिलक शिर दीध रे, (2) ।।4।।
संघ चतुर्विध थापीओ रे, देवानंदा ऋषभदत्त प्यारा ।
संयम देइ शिव मोकल्या रे भगवती सूत्रे अधिकार रे, (2) ।।5।।
चोत्रीश अतिशय शोभता रे, साथे चउद सहस अणगार ।
छत्रीश सहस ते साधवी रे, बीजा देव देवी परिवार रे, (2)।।6।।
त्रीश वरस प्रभु केवळी रे, गाम नगर ते पावन कीध ।
ब्होंतेर वरसनुं आउखुं रे, दिवाली ए शिवपद लीध रे, (2) ।।7।।
अगुरूलघुं अवगाहने रे, कीयो सादि अनंत निवास ।
मोहराय मल्ल मुळशुं रे, तनमन सुखनो होय नाश रे, (2) ।।8।।
तुम सुख एक प्रदेशनुं रे, नवि मावे लोकाकाश ।
तो अमोने सुखीया करो रे, अमे धरीये तुमारी आश रे, (2) ।।9।।
अक्षय खजानो नाथनो रे, में दीठो गुरू उपदेश ।
लालच लागी साहिबा रे, नवि भजीए कुमतिनो लेश रे, (2) ।।10।।
म्होटानो जे आशरो रे, तेथी पामीये लील विलास ।
द्रव्य भाव शत्रु हणी रे. *शुभवीर* सदा सुख वास रे, (2) ।।11।।

कलश

ओगणीश एके वरस छेके, पूर्णिमा श्रावण वरो ।
नमे थुण्यो लायक विश्वनायक, वर्धमान जिनेश्वरो ।
संवेग रंग तरंग झीले, जस विजय समता धरो,
शुभ विजय पंडित चरण सेवक, *वीरविजय* जय जय करो ।।

12 महावीर स्वामी का पालना

माता त्रिशला झुलावे पुत्र पारणे रे,
गावे हालो हालो हालरवाना गीत,
सोना रूपाने वळी रत्ने जडियुं पारणुं रे,
रेशम दोरी घुघरी वागे छुम छुम रीत,
हालो हालो हालो हालो मारा नंदन रे ।।1।।

जिनजी पास प्रभुथी वरस अढीसे अंतरे,
होशे चोवीशमो तीर्थंकर जिन परिमाण,
केशी स्वामी मुखथी अेहवी वाणी सांभळी,
साची साची हुई ते म्हारे अमृत वाण...हालो. ।।2।।

चौदे स्वप्ने होवे चक्री के जिनराज,
वीत्या बारे चक्री नहीं हवे चक्रिराज,
जिनजी पास प्रभुना श्री केशी गणधार,
तेहने वचने जाण्या चोवीशमा जिनराज...हालो. ।।3।।

म्हारी कुखे आव्या त्रण भुवन शिरताज,
म्हारी कुखे आव्या तारण तरण जहाज,
म्हारी कुखे आव्या संघ तीरथनी लाज,
हुं तो पुन्य पनोती इंद्राणी थइ आज...हालो. ।।4।।

मुजने दोहला उपन्या बेसुं गज अंबाडीअे,
सिंहासने पर बेसु चामर छत्र धराय,
अे सहु लक्षण मुजने नंदन तारा तेजना,
ते दिन संभारूं ने आनंद अंग न माय...हालो. ।।5।।

करतल पगतल लक्षण अेक हजार ने आठ छे,
तेहथी निश्चय जाण्या जिनवर श्री जगदीश,
नंदन जमणी जंघे लंछन सिंह बिराजतो,
में तो पहेले स्वप्ने दीठो विशवावीश...हालो. ।।6।।
नंदन नवला बंधव नंदिवर्धनना तमे,
नंदन भोजाइओना दीयर छो सुकुमाळ,
हसशे भोजाइओ कही दीयर मारा लाडका,
हसशे रमशे ने वली चूंटी खणशे गाल,
हसशे रमशे ने वळी ठुंसा देशे गाल...हालो. ।।7।।
नंदन नवला चेडा राजाना भाणेज छो,
नंदन नवला पांचशे मामीना भाणेज छो,
नंदन मामलीयाना भाणेजा सुकुमाल,
हसशे हाथे उछाळी कहीने नाना भाणेज,
आँखों आंजीने वळी टपकुं करशे गाल...हालो. ।।8।।
नंदन मामा मामी लावशे टोपी आंगलां,
रतने जडीआं झालर मोती कसबी कोर,
नीला पीळां ने वळी रातां सर्वे जातिनां,
पहेरावशे मामी मारा नंद किशोर...हालो. ।।9।।
नंदन मामा मामी सुखलडी बहु लावशे,
नंदन गजवे भरशे लाडु मोतीचूर,
नंदन मुखडां जोइने लेशे मामी भामणां,
नंदन मामी कहेशे जीवो सुख भरपूर...हालो. ।।10।।
नंदन नवला चेडा मामानी साते सती,
मारी भत्रीजी ने ब्हेन तमारी नंद,
ते पण गजवे भरवा लाखणसाइ लावशे,
तमने जोइ जोइ होशे अधिको परमानंद...हालो. ।।11।।

रमवा काजे लावशे लाख टकानो घूघरो,
वळी सुडा मेना पोपट ने गजराज,
सारस कोयल हंस तीतर ने वळी मोरजी,
मामी लावशे रमवा नंद तमारे काज...हालो. ।।12।।
छप्पन कुमरी अमरी जल कळशे नवरावीआ,
नंदन तमने अमने केली घरनी मांही,
फुलनी वृष्टि कीधी योजन एकने मांडले,
''बहु चिरंजीवो'' आशिष दीधी तुमने त्यांही...हालो. ।।13।।
तमने मेरूगिरि पर सुरपतिअे नवरावीआ,
निरखी निरखी हरखी सुकृत लाभ कमाय,
मुखडा उपर वारू कोटी कोटी चंद्रमां,
वळी तन पर वारू ग्रहगणनो समुदाय...हालो. ।।14।।
नंदन नवला भणवा निशाळे पण मूकशुं,
गजपर अंबाडी बेसाडी मोटे साज,
पसली भरशुं श्रीफळ फोफळ नागरवेलशुं,
सुखलडी लेशुं निसाळीयाने काज...हालो. ।।15।।
नंदन नवला मोटा थाशो ने परणावशुं,
वहुवर सरखी जोडी लावशुं राजकुमार,
सरखे सरखा वेवाइ वेवाणोने पधरावशुं,
वरवहु पोंखी लेशुं जोइ जोईने देदार...हालो. ।।16।।
पीयर सासर मारा बेहु पख नंदन उजळा,
मारी कूखे आव्या तात पनोता नंद,
माहरे आंगणे वुठ्या अमृत दुधे मेहुला,
मारे आंगणे फलीआ सुरतरू सुखना कंद...हालो. ।।17।।
इणि पेरे गायुं माता त्रिशला सुतनुं पारणुं,
जे कोइ गाशे लेशे पुत्र तणा साम्राज,
बीलीमोरा नगरे वरणव्युं वीरनुं हालरडुं,
जय जय मंगल होजो *'दीपविजय'* कविराज..हालो. ।।18।।

13 महावीर स्वामी के पंचकल्याणक का स्तवन

कुल ढाल-3

शासन नायक शिवकरण, वंदु वीरजिणंद,
पंच कल्याणक जेहना, गाशुं धरी आनंद ।।1।।
सुणतां थुणतां प्रभुतणा, गुण गिरूआ एकतार,
ऋद्धि वृद्धि सुख संपदा, सफळ हुए अवतार ।।1।।

ढाल-पहेली

सांभळजो ससनेही सयणां, प्रभुना चरित्र उल्लासे रे,
जे सांभळशे प्रभु गुण तेना, समकित निर्मळ थाशे रे,
सांभळजो ससनेही...।।1।।
जंबुद्वीपे दक्षिण भरते, माहणकुंड गामे रे,
ऋषभदत्त ब्राह्मण तस नारी, देवानंदा नामे रे सां.।।2।।
अषाढ सुदी छट्ठे प्रभुजी, पुष्पोत्तरथी चवीया रे,
उतरा फाल्गुनी योगे आवी, तस कुखे अवतरीया रे सां.।।3।।
तिण रयणी सा देवानंदा, सुपन गजादिक निरखे रे,
प्रभाते सुणी कंत ऋषभदत्त, हियडामांही हरखे रे सां.।।4।।
भाखे भोग अर्थ सुख होशे, होशे पुत्र सुजाण रे,
ते निसुणी सा देवानंदा, कीधुं वचन प्रमाण रे सां.।।5।।
भोग भला भोगवता विचरे, ए हवे अचरिज होवे रे,
शतकृत जीव सुरेसर हरख्यो, अवधि प्रभुने जोवे रे सां.।।6।।
करी वंदन ने इंद्र सन्मुख, सात आठ पग आवे रे,
शक्रस्तव विधि सहित भणीने, सिंहासने सोहावे रे सां.।।7।।

संशय पडीयो एम विमासे, जिन चक्री हरि राम रे,
तुच्छ दारिद्र माहणकुल नावे, उग्रभोग विण धाम रे सां.।।8।।
अंतिम जिन माहणकुल आव्या, अेह अच्छेरू कहिए रे,
उत्सर्पिणी अवसर्पिणी अनंती, जातां एवुं लहीए रे सां.।।9।।
इण अवसर्पिणी दश अच्छेरा, थयां ते कहीए तेह रे,
गर्भ हरण गोशाला उपसर्ग, निष्फळ देशना जेह रे सां.।।10।।
मूळ विमाने रवि शशी आव्या, चमरानो उत्पात रे,
ए श्री वीरजिनेश्वर वारे, उपन्या पंच विख्यात रे सां.।।11।।
स्त्री तीर्थ मल्लीजिन वारे, शीतलने हरिवंश रे,
ऋषभने अट्ठोतेर सो सिध्या, सुविधि असंजती संस रे सां.।।12।।
शंख शब्द मिलिया हरि हरस्युं, नेमिसरने वारे रे,
तिम प्रभु नीच कुले अवतरीया, सुरपति एम विचारे सां.।।13।।

ढाल-दूसरी (तर्ज-आखडी मारी...)

भव सत्तावीश स्थूलमांही त्रीजे भवे,
मरिची कीयो कुळमद भरत यदा स्तवे,
नीच गोत्रकर्म बांध्युं तिहां ते थकी,
अवतरीया माहणकुळे अंतिम जिनपति ।।1।।

अति अघटतु एह थयुं थाशे नहि,
जे प्रसवे जिन चक्रि नीचकुल महीं ।
इहां मारो आचार धरूं उत्तम कुले,
हरिणगमेषी देव तेडावे एटले ।।2।।

कहे माहणकुंड नयरे जइ उचित करो,
देवानंदा कुखेथी प्रभुने संहरो ।
नयर क्षत्रियकुंड राय सिद्धास्थ गेहिनी,
त्रिशला नामे धरो प्रभु कुखे तेहनी ।।3।।

त्रिशला गर्भ लइने धरो माहणी उरे,
ब्यासी रात वसीने कह्युं, तेम सुर करे ।
माहणी देखे सुपन जाणे त्रिशला हर्या,
त्रिशला सुपन लहे तव चौद अलंकर्या ।।4।।
हाथी, वृषभ, सिंह, लक्ष्मी, माला सुंदरुं,
शशी, रवि, ध्वज, कुंभ, पद्मसरोवर, सागरुं ।
देव विमान, रयणपुंज, अग्नि विमले,
हवे देखे त्रिशला एह के पिउने विनवे ।।5।।
हरख्यो राय सुपन पाठक तेडावीया,
राजभोग सुतफल सुणी तेह वधावीया ।
त्रिशला राणी विधिशुं गर्भ सुखे वहे,
माय तणे हित हेत के प्रभु निश्चल रहे ।।6।।
माय धरे दुःख जोर, विलाप घणु करे,
कहे में कीधां पाप अघोर भवांतरे ।
गर्भ हर्यो मुज कोणे हवे केम पामीए,
दुःखनुं कारण जाणी विचार्युं स्वामी ए ।।7।।
अहो ! अहो ! मोह विडंबण जालीम जगत में,
अणदीठे दुःख एवडो उपायो पलक में ।
ताम अभिग्रह धारे प्रभु ते कहुं,
मातपिता जीवतां संयम नवि ग्रहुं ।।8।।
करूणा आणी अंग हलाव्युं जिनपति,
बोली त्रिशला माय हैये घणुं हसती ।
अहो मुज जाग्यां भाग्य गर्भ मुज सल-वल्यो,
सेव्यो श्री जिनधर्म के सुरतरू जिन फळ्यो ।।9।।
सखीय कहे शिखामण स्वामिनी सांभळो,
हळवे हळवे बोलो हसो रंगे चलो ।
इम आनंदे विचरता दोहला पुरते,
नव महिना ने साडा सात दिवस थते ।।10।।

चैत्र तणी सुद तेरस नक्षत्र उत्तरा,
जोगे जन्म्या वीर के तव विकसी धरा ।
त्रिभुवन थयो रे उद्योत के रंग वधामणां,
सोना रूपानी वृष्टि करे घेर सुर घणा ।।11।।

आवी छप्पन कुमारी के ओच्छव प्रभु तणे,
चल्युं रे सिंहासन इंद्र के घंटा रणझणे ।
मळी सुरनी क्रोडके सुरवर आवीया,
पंच रूप करी प्रभुने सुरगिरि लावीया ।।12।।

एक क्रोड साठ लाख कळश जळशुं भर्यां,
किम सहेशे लघु वीर के इंद्र संशय धर्या ।
प्रभु अंगुठे मेरू चांप्यो अति घडघडे,
गडगडे पृथ्वीलोक जगतना लडथडे ।।13।।

अनंत बळ जाणी प्रभुने इंद्रे खमावीया,
चार वृषभना रूप करी जळे नामीआ ।
पूजी अर्ची प्रभुने माय पासे धरे,
धरी अंगुठे अमृत गया नंदीश्वरे ।।14।।

ढाल-तीसरी (तर्ज : माय न माय)

करी महोच्छव सिद्धारथ भूप, नाम धरे वर्धमान ।
दिन दिन वाधे प्रभु सुरतरू जिम, रूप कला असमान रे हमचडी.।।1।।
एक दिन प्रभुजी रमवा कारण, पुर बाहिर जब जावे ।
इंद्र मुखे प्रशंसा सुणी तिहां, मिथ्यात्वी सुर आवे रे हमचडी.।।2।।
अहिरूपे विंटाणो तरुशुं, प्रभु नाख्यों उछाळी ।
सात ताडनुं रूप कर्युं तव, मुंठे नांख्यो वाळी रे हमचडी. ।।3।।
पाये लागीने ते सुर खामे, नाम धरे महावीर ।
जेवो इंद्रे वखाण्यो स्वामी, तेवो साहस धीर रे हमचडी. ।।4।।
माता पिता निशाले मूके, आठ वरसना जाणी ।
इंद्रतणा तिहां संशय टाळ्या, नव व्याकरण वखाणी रे हमचडी. ।।5।।

अनुक्रमे यौवन पाम्या प्रभुजी, वर्या यशोदा राणी ।
अट्ठावीश वर्षे प्रभुना, मात पिता निर्वाणी रे हमचडी. ।।6।।
दोय वरस भाईने आग्रह, प्रभु घरवासे वसीया ।
धर्म पंथ देखाडो इम कहे, लोकांतिक उलसीया रे हमचडी.।।7।।
एक क्रोड आठ लाख सोनैया, दिन दिन प्रभुजी आपे ।
इम संवच्छरी दान देइने, जगना दारिद्र कापे रे हमचडी. ।।8।।
छांड्यां राज अंतेउर प्रभुजी, भाइए अनुमति दीधी ।
मृगशीर वद दशमी उत्तराए, वीरे दीक्षा लीधी रे हमचडी. ।।9।।
चउनाणी ते दिनथी प्रभुजी, वरस दिवस झाझे रे ।
चीवर अर्ध ब्राह्मणने दीधुं, खंड खंड बे फेरी रे हमचडी. ।।10।।
घोर परिषह साडा बारे, वरस जे जे सहीया ।
घोर अभिग्रह जे जे धरिया, ते नवि जाये कहिया रे हमचडी.।।11।।
शूलपाणी ने संगमदेवे, चंडकोशीक गोशाळे ।
दीधुं दुःखने पायस रांधी, पग उपर गोवाळे रे हमचडी. ।।12।।
काने गोपे खीला मार्या, काढतां मूकी रांटी ।
जे सांभळता त्रिभुवन कंप्या, पर्वतशिला फाटी रे हमचडी.।।13।।
ते ते दुष्ट सहु उद्धरीया, प्रभुजी पर उपकारी ।
अडद तणा बाकुला लइने, चंदनबाला तारी रे हमचडी. ।।14।।
दोय छमासी नव चउमासी, अढीमासी त्रणमासी रे ।
दोढ मासी बे बे कीधां, छ कीधां बे मासी रे हमचडी. ।।15।।
बार मास ने पख बहोतेर, छव्व बसें ओगणत्रीस वखाणुं ।
बार अव्वम भद्रादि प्रतिमा, दिन दोय चार दश जाणुं रे हमचडी.।।16।।
इम तप कीधां बारे वरसे, विण पाणी उल्लासे ।
तेमां पारणे प्रभुजीए कीधां, त्रणसे ओगणपचास रे हमचडी.।।17।।
कर्म खपावी वैशाख मासे, सुद दशमी शुभ जाण ।
उत्तरायोग शालिवृक्ष तळे, पाम्या केवळनाण रे हमचडी. ।।18।।

इन्द्रभूति आदि प्रतिबोध्या, गणधर पदवी दीधी ।
साधु साधवी श्रावक श्राविका, संघ स्थापना कीधी रे हमचडी.।।19।।
चउद सहस अणगार साधवी, सहस छत्रीश कहीजे ।
एक लाख सहस ओगणसट्ठी, श्रावक शुद्ध कहीजे रे हमचडी.।।20।।
तीन लाख अढार सहस वळी, श्राविका संख्या जाणो ।
त्रणशे चौदपूर्वधारी, तेरसे ओहिनाणी रे हमचडी. ।।21।।
सात सया ते केवलनाणी, लब्धिधारी पण तेटला ।
विपुल मतिया पांचशे कहीया, चारशे वादि जीत्या रे हमचडी.।।22।।
सातसें अंतेवासी सिध्या, साध्वी चौदशे सार ।
दिन दिन तेज सवाये दीपे, प्रभुजीनो परिवार रे हमचडी.।।23।।
त्रीश वरस घरवासे वसीया, बार वरस छद्मस्थे ।
तीस वरस केवल बेंतालीश, वरस श्रमणामध्ये रे हमचडी.।।24।।
वरस बहोंतेर केरू आयु, वीर जिणंदनुं जाणो ।
दिवाली दिन स्वाति नक्षत्रे, प्रभुजीनुं निर्वाण रे हमचडी. ।।25।।
पंच कल्याणक एम वखाण्या प्रभुजीना उल्लासे ।
संघ तणो आग्रह हरखभरीने, सुरत रही चोमासुं रे हमचडी.।।26।।

कलश

इस चरम जिनवर, सयल सुखकर, थुण्यो अति उलट धरी,
अषाढ उज्ज्वल पंचमी दिन, संवत सत्तर त्रीहोतरे ।
भाद्रवा सुद पाडवा तणे दिन, रविवारे उलट भरे,
विमल विजय उवज्झाय पयकज, भ्रमर समशुभ शिष्य ए,
रामविजय जिनवर नामे, लहे अधिक जगीश ए ।।1।।

14

स्तुति विभाग

श्री नेमनाथ प्रभु की स्तुति

राजुल वर नारी, रूपथी रति हारी,
तेहना परिहारी, बालथी ब्रह्मचारी,
पशुआं उगारी, हुआ चारित्रधारी,
केवलसिरि सारी पामिया घाती वारी ।।1।।

त्रण ज्ञान संयुत्ता, मातनी कुखे हुंता,
जनमे पूरहूंता आवी सेवा करंता,
अनुक्रमे व्रत करंतां, पंच समिति धरंता,
महियल विचरंता, केवलश्री वरंता ।।2।।

सवि सुरवर आवे, भावना चित्त लावे,
त्रिगडुं सोहावे, देवछंदो बनावे,
सिंहासन ठावे, स्वामीना गुण गावे,
तिहां जिनवर आवे, तत्त्व वाणी सुणावे ।।3।।

शासनसुरी सारी अंबिका नाम धारी,
जे समकिती नर नारी, पाप संताप वारी,
प्रभु सेवाकारी, जाप जपीए सवारी,
संघ दुरित निवारी, पद्मने जेह प्यारा ।।4।।

श्री ऋषभदेव भगवान की स्तुति

आदि जिनवर राया, जास सोवन काया,
मरूदेवी माया, धोरी लंछन पाया,

जगत स्थिति निपाया, शुद्ध चारित्र पाया,
केवलसिरी राया, मोक्ष नगरे सिधाया ।।1।।
सवि जिन सुखकारी, मोह मिथ्या निवारी,
दुर्गति दुःख भारी, शोक संताप वारी,
श्रेणी क्षपक सुधारी, केवलानंत धारी,
नमीए नर नारी, जेह विश्वोपकारी ।।2।।
समवसरण बेठा, लागे जे जिनजी मीठा ।
करे गणप पइट्ठा, इन्द्रचंद्रादि दीठा,
द्वादशांगी वरिट्ठा, गुंथतां टाले रिट्ठा,
भविजन होय हिट्ठा, देखी पुण्ये गरिट्ठा ।।3।।
सुर समकित वंता, जेह ऋद्धे महंता,
जेह सज्जन संता, टालीए मुज चिन्ता,
जिनवर सेवंता, विघ्न वारो दूरन्ता,
जिन उत्तम थुणंता, *पद्मने* सुख दिन्ता ।।4।।

श्री महावीर स्वामी की स्तुति

जय जय भवि हितकर, वीर जिनेश्वर देव,
सुरनरना नायक, जेहनी सारे सेव,
करूणा रस कंदो, वंदो आनंद अणी,
त्रिशला सुत सुंदर, गुण मणि केरो खाणी ।।1।।
जस पंच कल्याणक, दिवस विशेष सुहावे,
पण थावर नारक, तेहने पण सुख थावे,
ते च्यवन-जन्म व्रत, नाण अने निरवाण,
सवि जिनवर केरां, ए पांचे अहिठाण ।।2।।
जिहां पंच समितियुत, पंच महाव्रत सार,
जेहमां प्रकाश्या, वली पांचे व्यवहार,
परमेष्ठि अरिहंत, नाथ सर्वज्ञ ने पार,
एह पंच पदे लह्यो, आगम अर्थ उदार ।।3।।

मातंग-सिद्धाई देवी जिनपद सेवी,
दुःख दुरित उपद्रव जे टाळे नितमेवी,
शासन सुखदायी आई सुणो अरदास,
श्री *ज्ञानविमल* गुण पूरो वांछित आश ।।4।।

श्री पर्युषण की स्तुति

1. (राग : शत्रुंजय तीरथ सार)

वरस दिवसमां आषाड चोमासु,
तेहमां वली भादरवो मास, आठ दिवस अति खास,
पर्व पजुसण करो उल्लास,
अट्ठाइधरनो करो उपवास, पोसह लीजे गुरू पास,
वडाकल्पनो छट्ठ करीजे,
तेह तणो वखाण सुणीजे, चौद सुपन वांचीजे,
पडवे ने दिन जन्म वंचाय,
ओच्छव महोच्छव मंगल गवाय, वीर जिनेसर राय ...।।1।।
बीजे दिन दीक्षा अधिकार,
सांज समय निरवाण विचार, वीर तणो परिवार,
त्रीजे दिने श्रीपार्श्व विख्यात,
वळी नेमीसरनो अवदात, वळी नव भवनी बात,
चोवीशे जिन अंतर तेवीस,
आदि जिनेश्वर श्री जगदीश, तास वखाण सुणीश,
धवल मंगल गीतगहुंली करीए,
वळी प्रभावना नित अनुसरीए, अट्ठमतप जय वरीए ...।।2।।
आठ दिवस लगे अमर पलावो,
तेह तणो पडहो वजडावो, ध्यान धरम मन भावो,
संवत्सरी दिन सार कहेवाय,
संघ चतुर्विध भेलो थाय, बारसा सूत्र सुणाय,

थिरावली ने समाचारी,
पट्टावली प्रमाद निवारी, सांभळजो नर नारी,
आगम सूत्र ने हुं प्रणमीश,
कल्पसूत्रसुं प्रेम धरीश, शास्त्र सर्वे सुणीश ...।।3।।
सत्तर भेदि जिन पूजा रचावो,
नाटककेरा खेल खेलावो, विधिसुं स्नात्र भणावो,
आडंबरसुं देहरे जइ ए,
संवत्सरी पडिक्कमणुं करीए, संघ सर्वने खमीए,
पारणे साहम्मिवच्छल कीजे,
यथाशक्तिए दान ज दीजे, पुन्यभंडार भरीजे,
श्री विजयक्षेमसूरि गणधार,
जशवंतसागरगुरु उदार, *जिणंदसागर* जयकार ...।।4।।

2.

(राग : वीर जिनेसर अति अलवेसर)

सत्तर भेदी जिनपूजा रचीने, स्नात्र महोत्सव कीजे जी,
ढोल ददामा भेरी न फेरी, झल्लरी नाद सुणीजे जी,
वीरजिन आगे भावना भावी, मानवभव फळ लीजे जी,
पर्व पजुसण पूरव पुण्ये, आव्या एम जाणीजे जी ...।।1।।
मास पास वळी दसम दुवालस, चत्तारी अट्ठ कीजे जी,
उपर वळी दस दोय करीने, जिन चोवीशे पूजीजे जी,
वडा कल्पनो छट्ठ करीने, वीर वखाण सुणीजे जी,
पडवे ने दिन जन्म महोत्सव, धवल मंगल वरतीजे जी...।।2।।
आठ दिवस लगे अमर पलावी, अट्ठमनो तप कीजे जी,
नागकेतुनी परे केवल लहीए, जो शुभ भावे रहीए जी,
तेलाधर दिन त्रण कल्याणक, गणधरवाद वदीजे जी,
पास नेमिसर अंतर त्रीजे, ऋषभचरित्र सुणीजे जी ...।।3।।

बारसासूत्र ने सामाचारी, संवत्सरी पडिक्कमीए जी,
चैत्यपरिपाटी विधिसुं कीजे, सकल जंतु खामीजे जी,
पारणाने दिन स्वामीवत्सल, कीजे अधिक वडाइ जी,
मानविजय कहे सकल मनोरथ, पूरे देवी सिद्धाई जी ...।।4।।

3.

पुण्यनुं पोषण पापनुं शोषण, पर्व पजूसण पामीजी,
कल्प धरे पधरावो स्वामी, नारी कहे शिर नामीजी ।
कुंवर गयवर खंध चढावी, ढोल निशान वगडावोजी,
सद्गुरू संगे चढते रंगे, वीर-चरित्र सुणावोजी ।।1।।

प्रथम वखाणे धर्म सारथि पद, बीजे सुपनां चारजी,
त्रीजे सुपन पाठक वली चोथे, वीर जनम अधिकारजी ।
पांचमे दीक्षा छट्ठे शिवपद, सातमे जिन त्रेवीशजी,
आठमे थिरावली संभलावी, पिउडा पूरो जगीशजी ।।2।।

छट्ठ अट्ठम अट्ठाई कीजे, जिनवर चैत्य नमीजेजी,
वरसी पडिक्कमणुं मुनिवन्दन, संघ सकल खामीजेजी ।
आठ दिवस लगे अमर पलावी, दान सुपात्रे दीजेजी,
भद्रबाहु-गुरु वयण सुणीने, ज्ञान सुधारस पीजेजी ।।3।।

तीरथमां विमलाचल गिरिमां, मेरू महीधर जेमजी,
मुनिवर मांहि जिनवर म्होटा, पर्व पजूषण तेमजी ।
अवसर पामी साहम्मिवच्छल, बहु पक्वान वडाइजी,
खिमा विजय जिन देवी सिद्धाइ, दिन दिन अधिक वधाइजी ।।4।।

14

सज्झाय विभाग

1. मन्नह जिणाणं (श्रावककृत्य की) सज्झाय

मन्नह जिणाणमाणं, मिच्छं परिहरह धरह सम्मत्तं,
छ-व्विह-आवस्सयम्मि, उज्जुत्तो होइ पइदिवसं. ।।1।।
पव्वेसु पोसहवयं, दाणं सीलं तवो, अ भावो अ,
सज्झाय नमुक्कारो, परोवयारो अ जयणा अ. ।।2।।
जिणपूआ जिणथुणणं, गुरूथुअ साहम्मिआण वच्छल्लं,
ववहारस्स य सुद्धि, रह-जत्ता तित्थ जत्ता य. ।।3।।
उवसम विवेग संवर, भासा-समिइ, छ-जीव-करुणा य,
धम्मिअ-जण-संसग्गो, करण-दमो चरण-परिणामो. ।।4।।
संघोवरि बहुमाणो, पुत्थय-लिहणं पभावणा तित्थे;
सड्ढाण किच्चमेअं, निच्चं सु-गुरूवएसेणं. ।।5।।

2. स्वार्थी संसार

सगुं तारूं कोण साचुं रे, संसारीआमां सगुं,
पापनो तो नाख्यो पायो, धरममां तुं नहीं धायो,
डाह्यो थइने तु दबायो रे संसारीआमां, संगु.।।1।।
कुडुं कुडुं हेत कीधुं, तेने सांचुं मानी लीधुं,
अंतकाळे दुःख दीधुं रे, संसारीआमां, संगु.।।2।।
विश्वासे वहाला कीधा, पीयाला झेरनां पीधा,
प्रभुने विसारी दीधा रे, संसारीआमां, संगु.।।3।।
मनगमतामां महाल्यो, चोरने मारग चाल्यो,
पापीओनो संग झाल्यो रे, संसारीआमां, संगु.।।4।।
मुखे बोल्यो मीठी वाणी, धन कीधुं धुळधाणी,
जीती बाजी गयो हारी रे, संसारीआमां, संगु.।।5।।
घरने धंधे घेरी लीधो, कामिनीये वस कीधो,
ऋषभदास कहे दगो दीधो रे, संसारीआमां, संगु.।।6।।

3. क्रोध

कडवा फल छे क्रोधना, ज्ञानी एम बोले रे,
रीस तणो रस जाणीए, हलाहल तोले रे...कडवा. ।।1।।
क्रोधे क्रोड पूरवतणुं, संयम फल जाय,
क्रोध सहित तप जे करे, ते तो लेखे न थाय...कडवा. ।।2।।
साधु घणो तपीयो हतो, धरतो मन वैराग्य,
शिष्यना क्रोध थकी थयो, चंडकोशियो नाग...कडवा. ।।3।।
आग उठे जे घर थकी, ते पहेलुं घर बाळे,
जलनो जोग जो नवि मले, तो पासेनुं परजाले...कडवा. ।।4।।
क्रोध तणी गति एहवी, कहे केवलनाणी,
हाण करे जे हेतनी, जालवजो एम जाणी...कडवा. ।।5।।
उदयरत्न कहे क्रोधने, काढजो गले साहीं,
काया करजो निरमली, उपशम रस नाही...कडवा. ।।6।।

4. चंचल मन

मनाजी तुं तो जिन चरणे चित्त लाय, तेरो अवसर वित्यो जाय,
मनाजी तुं तो जिन चरणे चित्त लाय,
उदर भरण के कारणे रे, गौआ वन मां जाय,
चारो चरे चिंहु दिशि फरे रे, वांकुं चित्तडुं वाछरीया मांय...मना.।।1।।
चार पांच साहेली मलीने, हिलमिल पाणीए जाय,
ताली दीये खडखड हंसे रे, वांकुं चित्तडुं गागरीयां मांय...मना.।।2।।
नटवो नाटे चोकमां रे, लख आवे लख जाय,
वंस चढी नाटक करे रे, वांकुं चित्तडुं दोरडीयां मांय...मना.।।3।।
सोनी सोनाना घडे रे, वली घडे रुपाना घाट,
घाट घडे मन रीझवे रे, वांकुं चित्तडुं सोनैया मांय...मना.।।4।।
जुगटीयाने मन जुगटुं रे, कामिनीने मन काम,
आनंदघन एम विनवे रे, ऐसो प्रभु का धरो ध्यान...मना. ।।5।।

5. आठ कर्मों की सज्झाय

कर्मो लाग्या छे मारे केडले, घडी ए घडीए आतमराम मुंझाय रे,
प्रभुजी मारा कर्मों लाग्या छे मारे केडले... ।।1।।

ज्ञानावरणीए ज्ञान रोक्यो, दर्शनावरणीए कीधो दर्शन घात रे.प्र.।।2।।
वेदनीय कर्मे वेदना मोकली, मोहनीय कर्मे खवडाव्यो बहु मार रे.प्र.।।3।।
आयुष्य कर्मे ताणी बांधीयुं, नाम कर्मे नचाव्यो बहु नाच रे.प्र..।।4।।
गोत्र कर्मे बहु रझडावीयो, अंतराय कर्मे वाल्यो छे आडो आंक रे.प्र.।।5।।
आठ कर्मों नो राजा मोह छे, मुंझावे मने चोवीसं कलाक रे.प्र..।।6।।
आठ कर्मों ने जे वश करे, तेने घर होशे मंगल माल रे.प्र.।।7।।
आठ कर्मोने जे जीतशे, तेनो होशे मुक्तिपुरीमां वास रे.प्र.।।8।।
हीरविजय गुरु हीरलो, पंडित *रत्नविजय* गुण गाय रे.प्र..।।9।।

6. सच्चे जैनत्त्व की सज्झाय

जुओ रे जुओ जैनो, केवा व्रतधारी,
केवा व्रतधारी आगे, थया नरनारी रे,
थया नरनारी तेने वंदना हमारी...जुओ. ।।1।।
जुओ जुओ जंबुस्वामी, बाल वये बोध पामी,
तजी भोग रिद्धि जेणे, तजी आठ नारी...जुओ. ।।2।।
गजसुकुमाल मुनि, धखे शिर पर धूणी,
अडग रह्या ते ध्याने, डग्या ना लगारी...जुओ. ।।3।।
कोश्याना मंदिर मध्ये, रह्या मुनि स्थुलिभद्र,
वेश्या संग वासो तोये, थया ना विकारी...जुओ. ।।4।।
सती ते राजुल नारी, जगमां न जोडी अेनी,
पतिव्रता काजे कन्या, रही ते कुंवारी...जुओ. ।।5।।
जनक सुता ते सीता, बार वर्ष वनमां वीत्या,
घणुं कष्ट वेठ्युं तोये, डग्या ना लगारी...जुओ. ।।6।।
विजयशेठ ने विजयानारी, कच्छदेशे ब्रह्मचारी,
केवलीअे शील वखाण्युं, संयमे चित्त आण्युं...जुओ. ।।7।।
सुदर्शनने अभयाराणीअे, उपसर्ग कीधो भारी,
शूलीनुं सिंहासन थयुं, संयमे मनडुं वाली...जुओ. ।।8।।
धन्य धन्य नरनारी, अेवी दृढ टेक धारी,
जीवन सुधार्युं जेणे, पाम्या भव पारी...जुओ. ।।9।।
अेवुं जाणी सुज्ञजनो, अेवा उत्तम आप बनो,
वीरविजय धर्म प्रेमे, दीअे गति सारी...जुओ. ।।10।।

7. क्या तन मांजता...

क्यां तन मांजता रे ! एक दिन मिट्टी में मिल जाना,
मिट्टीमें मिल जाना बंदे, खाख में खप जाना...क्यां. ।।1।।
मिटिया चुन चुन महल बंधाया, बंदा कहे घर मेरा,
एक दिन बंदे उठ चलेंगे, यह घर तेरा न मेरा...क्यां. ।।2।।
मिटिया ओढावण मीटीया बीछावण, मिट्टी का सीराना,
इस मिटीया का एक भूत बनाया, अमर जन लुभाना...क्यां.।।3।।
मिटीया कहे कुंभारने रे, तुं क्यां खुंदे मोय,
एक दिन ऐसा आवेगा प्यारे, में खुंदूंगी तोय...क्यां. ।।4।।
लकडी कहे सुथारने रे, तुं क्या छोले मोय,
एक दिन ऐसा आवेला प्यारे, में भुंजुंगी तोय...क्यां. ।।5।।
दान शीयल तप भावना रे, शिवपूर मारग चार,
आनंदघन कहे चेतले प्यारे, आखिर जाना गमार...क्यां. ।।6।।

8. आप स्वभाव

आप स्वभावमां रे, अवधु सदा मगन में रहना,
जगत जीव है कर्माधीन, अचरिज कछुअ न लीना...आप.।।1।।
तुं नहि केरा कोई नहि तेरा, क्या करे मेरा मेरा,
तेरा है सो तेरी पासे, अवर सब अनेरा...आप. ।।2।।
वपु विनाशी तुं अविनाशी, अब है इनका विलासी,
वपु संग जब दूर निकासी, तब तुम शिव का वासी...आप.।।3।।
राग ने रीसा दोय खवीसा, ए तुम दुःख का दीसा,
जब तुम उनकुं दूर करीसा, तब तुम जग का ईसा...आप.।।4।।
परकी आशा सदा निराशा, ए है जग जन पाशा,
वो काटननुं करो अभ्यासा, लहो सदा सुखवासा...आप. ।।5।।
कबहीक काजी कबहीक पाजी, कबहीक हुआ अपभ्राजी,
कबहीक जग में कीर्ति गाजी, सब पुद्गल की बाजी...आप.।।6।।
शुद्ध उपयोग ने समता धारी, ज्ञान ध्यान मनोहारी,
कर्म कलंककुं दूर निवारी, *जीव* वरे शिव नारी...आप. ।।7।।

9. मोह से तेरा कमाया

मोह से तेरा कमाया, धन यही रह जाएगा,
प्रेम से अति पुष्ट किया, तन जलाया जाएगा...मोह. ।।1।।
प्रभु भजन की भावना बिन, परलोक में क्या पाएगा,
कुछ कमाइ यहां न कीनी, खाली हाथे जाएगा...मोह. ।।2।।
जन्म मानव का अपूरव, पाके कर जग का भला,
मत गला घोटो किसी का, जीवन यह उड जाएगा...मोह.।।3।।
झूठ छोडो चोरी छोडो, छोड दो परदार को,
माया ममता को तजो तब, मुक्त हो झट जाएगा...मोह. ।।4।।
तन फना है धन फना है, स्थिर कोई जग में नही,
प्राण प्यारा प्रभु दारा, सब यहां रह जाएगा...मोह. ।।5।।
ज्ञान धर ले ध्यान धर ले, चरण में कर ले रुचि,
चपल जग की सब ही बाजी, छीनक में उड जाएगी,...मोह.।।6।।
मात नहीं है तात नहीं हैं, सुत नही तेरा सगा,
स्वार्थ से सब अपने होते, अंत में देते दगा...मोह. ।।7।।
मोह से क्यों मर रहा है, ध्यान से कर तन सफा,
तप करी ले जप करी लो, भजन कर ले लो नफा...मोह.।।8।।
एकला यहां पे तुं आया, एकला ही जाएगा,
क्यों बूरे तुं कर्म करता, नरक में दुःख पायगा...मोह. ।।9।।
वीर जिन उपदेश देते, जो यह दिल में ठायगा,
आत्म कमले *लब्धि* लीला, जल्दी वो नर पायेगा...मोह.।।10।।

10. एक भूपाल है

एक भूपाल है, एक कंगाल है, क्या बताये ।
अपनी करणी के सब फल पाए...क्या. ।।1।।
एक खाता मिठाई बंगाली, एक घर घर पे खाए गाली,
जैसी करणी करे, वैसी भरणी भरे...क्या. ।।2।।

एक फूलों की शय्या में सोता, एक टाट बिछाकर रोता,
एक मोज करे एक हा हा करे...क्या. ।।3।।
एक राजा की रानी बनी हैं, एक वन में तानी खडी है,
झाडु देती फिरे, गलिया साफ करे...क्या. ।।4।।
एक करता मोटर की सवारी, एक घर घर पे फिरता भिखारी,
जैसा कर्म करे, वैसा जीवन तरे...क्या. ।।5।।
एक शेठाणी बनकर बोले, एक घर घर फिरती डोले,
टुकडा दे दो कहे, नयणे नीर वहे...क्या. ।।6।।
माणेक विजय युं कहेता देखो, कर्म का चल है कैसा,
कर्म आठ कापो, संसार पार करो...क्या. ।।7।।

11. जगत है स्वार्थ

जगत हे स्वार्थका साथी, समझ ले कौन है अपना ?
ये काया काचका कुंभा, नाहक तुं देखके फुलता,
पलक में फूट जावेगा, पता ज्युं डालसे गिरता...जगत. ।।1।।
मनुष्यकी ऐसी जिंदगानी, अभी तुं चेत अभिमानी,
जीवन का क्यां भरोसा है, करी ले धर्म की करणी...जगत.।।2।।
खजाना माल ने मंदिर, क्युं कहेता मेरा मेरा तुं ?
इहां सब छोड जाना है, न आवे साथ सब तेरा...जगत. ।।3।।
कुटुंब परिवार सुत दारा, सुपन सम देख जग सारा,
निकल जब हंस जावेगा, उसी दिन है सभी न्यारा...जगत.।।4।।
तरे संसार सागर को, जपे जो नाम जिनवरको,
कहे *खान्ति* वही प्राणी, हठावे कर्म जंजीर को...जगत. ।।5।।

12. अरे किस्मत तुं घेलुं

अरे किस्मत तुं घेलुं, हसावे तुं रडावे तुं,
घडी फंदे फसावीने, सतावे तुं रीबावे तुं...अरे. ।।1।।
घडी आशामही वहे तुं, घडी अंते निराशा छे,
विविध रंगो बतावे तुं, हसे तेने रडावे तुं...अरे. ।।2।।

कोईनी लाख आशाओं, घडीमां धुलधाणी थई,
पछी पाछी सजीवन थई, रडेलाने हसावे तुं...अरे. ।।3।।
रही मशगुल अभिमाने, सदा मोटाई मन धरतां,
निडरने पण डरावे तुं, न धार्युं कोईनुं थातुं...अरे. ।।4।।
विकट रस्ता अरे तारा, अति गंभीर ने ऊंडा,
न तने कोई शके जाणी, अति तुं गूढ अभिमानी...अरे. ।।5।।
सदाचारी ने संतोने, फसावे तुं रडावे तुं,
करे धार्युं अरे तारुं, बधी आलम फना कर तुं...अरे. ।।6।।
अरे आ नाव जिंदगीनुं, धर्युं में हाथ ए तारे,
डुबाडे तुं उगारे तुं, *शुभवीर*नी आवे व्हारे तुं...अरे. ।।7।।

13. हाथ से हीरो

हाथ से हीरो गमायो, धर्म विना हाथ से हीरो गमायो,
विषय कषाय के पाश में पडके, जीव तुं बहोत मुंझायो...धर्म.।।1।।
जन्म मरण की भारे विपत्तियां, अजान हो के फसायो...धर्म.।।2।।
सद्गुरु को तुंने संग न पायो, कुगुरु नाग डंसायो...धर्म. ।।3।।
कुदेव और कुधर्म में पडके, आतम गुण में नसायो...धर्म.।।4।।
शोच समज बूरी जग माया, त्याग में दिल न बसायो...धर्म.।।5।।
चार गतिकी भँवरमें भैयां, युंही क्यों नाव डुबायो...धर्म. ।।6।।
आत्म कमल में चरण प्रभावे, *लब्धिसूरि* सुख पायो...धर्म.।।7।।

जैन हिन्दी साहित्य दिवाकर
मरुधररत्न पू.आचार्यदेव श्रीमद् विजय
रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.
द्वारा मुख्यतया हिन्दी भाषा में आलेखित
२३० पुस्तकों में से उपलब्ध एवं
अवश्य पठनीय साहित्य-सूची

Sr. No.	पुस्तक का नाम	मूल्य	Sr. No.	पुस्तक का नाम	मूल्य
1.	चिंतन का अमृत-कुंभ	80/-	36.	ध्यान साधना	40/-
2.	पंच-प्रतिक्रमण (भाग-1)	100/-	37.	आग और पानी-भाग-1-2	115/-
3.	पंच-प्रतिक्रमण (भाग-2)	100/-	38.	शांत सुधारस-हिन्दी -भाग-1-2	140/-
4.	पंच-प्रतिक्रमण (भाग-3)	125/-	39.	शत्रुंजय यात्रा (तृतीय आवृत्ति)	40/-
5.	पंच-प्रतिक्रमण (भाग-4)	135/-	40.	आओ संस्कृत सीखें भाग-1	150/-
6.	आओ ! प्राकृत सीखें भाग-1	125/-	41.	आओ संस्कृत सीखें भाग-2	220/-
7.	आओ ! प्राकृत सीखें भाग-2	85/-	42.	प्रेरक-प्रवचन	80/-
8.	विविध-तपमाला	100/-	43.	दंडक सूत्र	50/-
9.	विवेकी बनो	90/-	44.	जीव विचार विवेचन	60/-
10.	बीसवी सदी के महान योगी	300/-	45.	नव तत्त्व-विवेचन	60/-
11.	परम-तत्व की साधना भाग-3	160/-	46.	कल्पसूत्र के हिन्दी प्रवचन	240/-
12.	श्रमण-क्रिया के मुख्य सूत्र	200/-	47.	पर्युषण अष्टाह्निका प्रवचन	120/-
13.	प्रवचन-वर्षा	60/-	48.	गणधर-संवाद	80/-
14.	मोक्ष-मार्ग के कदम	120/-	49.	आओ ! उपधान पौषध करें !	55/-
15.	आओ श्रावक बनें !	25/-	50.	नवपद आराधना	80/-
16.	व्यसन-मुक्ति	100/-	51.	पहला कर्मग्रंथ	100/-
17.	श्रावक जीवन दर्शन	250/-	52.	दूसरा-तीसरा कर्मग्रंथ	55/-
18.	शंका-समाधान (भाग-4)	60/-	53.	पाँचवाँ कर्मग्रंथ	100/-
19.	जैन-महाभारत	130/-	54.	संस्मरण	50/-
20.	महावीर प्रभु की पट्टधर-परंपरा (1 से 9)	300/-	55.	भव आलोचना	10/-
21.	महावीर प्रभु की पट्टधर-परंपरा (10 से 40)	275/-	56.	आध्यात्मिक पत्र	60/-
22.	महावीर प्रभु की पट्टधर-परंपरा (41 से 57)	275/-	57.	आत्म-उत्थान का मार्ग-भाग-1	125/-
23.	महावीर प्रभु की पट्टधर-परंपरा (58 से 80)	280/-	58.	आत्म-उत्थान का मार्ग-भाग-2	175/-
24.	सात वासुदेव-प्रतिवासुदेव बलदेव	50/-	59.	आत्म-उत्थान का मार्ग-भाग-3	150/-
25.	प्रतिक्रमण उपयोगी संग्रह	80/-	60.	इन्द्रिय पराजय शतक	50/-
26.	सुखी जीवन के Mile-Stone	100/-	61.	अर्हद् दिव्य-संदेश (दीक्षा-विशेषांक)	60/-
27.	समाधि मृत्यु	80/-	62.	'बेंगलोर' प्रवचन-मोती	140/-
28.	The Way of Metaphysical Life	60/-	63.	तीन भाष्य (हिन्दी विवेचन)	150/-
29.	Pearls of Preaching	60/-	64.	जीव-विचार-विवेचन	100/-
30.	New Message for a New Day	600/-	65.	श्री नमस्कार महामंत्र	180/-
31.	Celibacy	70/-	66.	महामंत्र की अनुप्रेक्षाएँ	150/-
32.	Panch Pratikraman Sootra	100/-	67.	तत्त्वार्थ-सूत्र-भाग-1	200/-
33.	श्रीपाल-रास और जीवन-चरित्र	160/-	68.	तत्त्वार्थ-सूत्र-भाग-2	200/-
34.	अमृत रस का प्याला	300/-	69.	आओ ! पर्युषण प्रतिक्रमण करें !	150/-
35.	श्रावक का गुण सौंदर्य	125/-			

पुस्तक प्राप्ति स्थान : दिव्य सन्देश प्रकाशन C/o. सुरेन्द्र जैन, Office No. 304,
3rd Floor, बे व्यु बिल्डींग, विंग-ईस्ट बे, डॉ. एम.बी. वेलकर स्ट्रीट, कालबादेवी, मुंबई-2.
Mobile : 8484848451
(only whatsapp)

Kamal PRINTER'S
M. 9820530299